Table 1: कृष्ण यजुर्वेदीय तैत्तिरीय ब्राह्मणे

| SNo | Panchasat  | Beginning   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|------------|---|---|
| 1   | TB_1.1.1.1 | ब्रह्म संधत्तं तन्मे जिन्वतम्                     |   |
| 2   | TB_1.1.1.2 | सुवीराः प्रजाः प्रजनयन् परीहि                     |   |
| 3   | TB_1.1.1.3 | व्यानः संधत्तं तं मे                              |   |
| 4   | TB_1.1.1.4 | प्राणं यज्ञ्पतये धत्तम् चक्षुः                    |   |
| 5   | TB_1.1.1.5 | इष-मूर्जमस्मासु धत्तम् प्राणान् पशुषु             |   |
| 6   | TB_1.1.2.1 | कृत्तिका-स्वग्नि-माद्धीत एतद्वा अग्नेर् नक्षत्रम् |   |
| 7   | TB_1.1.2.2 | अग्नि-नक्षत्रमित्य-पचायन्ति गृहान्,ह दाहुको भवति  |   |
| 8   | TB_1.1.2.3 | तेषामनाहितो ऽग्निरासीत् अथैभ्यो वामं              |   |
| 9   | TB_1.1.2.4 | अर्यम्णो वा एतन्नक्षत्रम् यत्पूर्वे               |   |
| 10  | TB_1.1.2.5 | ते सुवर्गाय लोकायाग्नि-मचिन्वत पुरुष              |   |
| 11  | TB_1.1.2.6 | तौ दिव्यौ श्वानावभवताम् यो                        |   |
| 12  | TB_1.1.2.7 | यद्-वसन्तः यो वसन्ताऽग्निमाधत्ते मुख्य            |   |
| 13  | TB_1.1.2.8 | स्व एवैनमृतावाधाय पशुमान् भवति                    |   |
| 14  | TB_1.1.3.1 | उद्धन्ति यदेवास्या अमेद्ध्यम् तदप                 |   |
| 15  | TB_1.1.3.2 | पुष्ट्यामेव प्रजनने ऽग्निमाधत्ते अथो              |   |

| SNo | Panchasat   | Beginning   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|-------------|---|---|
| 16  | TB_1.1.3.3  | यदस्या यज्ञियमासीत् तदमुष्या-मद्धात् तददश्चन्द्रमसि |   |
| 17  | TB_1.1.3.4  | यदाखुकरीषः सभांरो भवति यदेवास्य                     |   |
| 18  | TB_1.1.3.5  | अबधिरो भवति य एवं                                   |   |
| 19  | TB_1.1.3.6  | कथमिदः स्यादिति सोऽपश्यत् पुष्करपर्णं               |   |
| 20  | TB_1.1.3.7  | तत् पृथिव्यै पृथिवित्वम् अभूद्धा                    |   |
| 21  | TB_1.1.3.8  | अथो शत्वांय सरेता अग्निराधेय                        |   |
| 22  | TB_1.1.3.9  | उत्तरत उपास्यत्य-बीभथ्सायै अति प्रयच्छति            |   |
| 23  | TB_1.1.3.10 | देवा वा ऊर्जं व्यभजन्त                              |   |
| 24  | TB_1.1.3.11 | यस्य पर्णमयः संभारो भवति                            |   |
| 25  | TB_1.1.3.12 | तच्छम्यै शमित्वम् यच्छमीमयः संभारो                  |   |
| 26  | TB_1.1.4.1  | द्वादशसु विकामेष्वग्निमादधीत द्वादश मासाः           |   |
| 27  | TB_1.1.4.2  | चक्षुर् वै सत्यम् अद्रा3गित्याह                     |   |
| 28  | TB_1.1.4.3  | आग्नेयाः पशवः ऐन्द्रमहः नक्तं                       |   |
| 29  | TB_1.1.4.4  | इडा वै मानवी यज्ञानूकाशिन्यासीत्                    |   |
| 30  | TB_1.1.4.5  | यस्यैव-मग्निराधीयते प्रतीच्यस्य श्रीरेति भद्रो      |   |
| 31  | TB_1.1.4.6  | प्राच्येषाः श्रीरगात् भद्रा भूत्वा                  |   |
| 32  | TB_1.1.4.7  | प्रत्यस्मिन् लोके स्थास्यसि अभि                     |   |

| SNo | Panchasat   | Beginning   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|-------------|---|---|
|     |             | * C 0 ;   |   |
| 33  | TB_1.1.4.8  | यस्यैवमग्नि-राधीयते प्र प्रजया पशुभिर                 |   |
| 34  | TB_1.1.4.9  | भृगूणां त्वाऽङ्गिरसां व्रतपते व्रतेना-द्धामीति        |   |
| 35  | TB_1.1.5.1  | प्रजापतिर् वाचः सत्य-मपश्यत् तेनाग्निमाधत्त           |   |
| 36  | TB_1.1.5.2  | भूरित्याह प्रजा एव तद्-यजमानः                         |   |
| 37  | TB_1.1.5.3  | सुवर्गाय वा एष लोकायाधीयते                            |   |
| 38  | TB_1.1.5.4  | प्रजापतिः प्रजा असृजत ता                              | TB_2.7.9.1                                |
|     |             |   | TB_3.1.4.2                                |
| 39  | TB_1.1.5.5  | एष वै प्रजापतिः यद्ग्निः                              |   |
| 40  | TB_1.1.5.6  | जनिष्यमाणानेव प्रतिनुदते न्याहवनीयो गार्.हपत्य-मकामयत |   |
| 41  | TB_1.1.5.7  | यदुपर्युपरि शिरो हरेत् प्राणान्                       |   |
| 42  | TB_1.1.5.8  | तस्य त्रेधा महिमानं व्यौहत्                           |   |
| 43  | TB_1.1.5.9  | यदग्निः यदश्वस्य पदेऽग्नि-मादद्भ्यात् रुद्राय         |   |
| 44  | TB_1.1.5.10 | त्रीणि हवीश्षि निर्वपति विराज                         |   |
| 45  | TB_1.1.6.1  | देवासुराः सँयत्ता आसन्न् ते                           |   |
| 46  | TB_1.1.6.2  | तद्-देवा विजित्य पुनरवारुरुथ्सन्त तेऽग्नये            |   |
| 47  | TB_1.1.6.3  | तेऽग्नये शुचये असौ वा                                 |   |
| 48  | TB_1.1.6.4  | नाङ्गानि तादृगेव तत् यदेतानि                          |   |

| SNo | Panchasat   | Beginning  | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|-------------|--|---|
| 49  | TB_1.1.6.5  | योऽग्निमाधत्ते ऐन्द्राग्न-मेकादशकपाल- मनु निर्वपेत्    |   |
| 50  | TB_1.1.6.6  | यदाज्यम् अनुडहस्तण्डुलाः मिथुनमेवाव-रुन्धे घृते        |   |
| 51  | TB_1.1.6.7  | यथ्सद्य एतानि हवीश्षि निर्वपेत्                        |   |
| 52  | TB_1.1.6.8  | यथा त्रीण्यावपनानि पूरयेत् ताद्यकत्                    |   |
| 53  | TB_1.1.6.9  | ब्रह्मवादिनो वदन्ति होतव्य-मग्निहोत्रां नहोतव्या अमिति |   |
| 54  | TB_1.1.6.10 | अग्निमुखा-नेवर्तून् प्रीणाति उपबर्.हणं ददाति           |   |
| 55  | TB_1.1.6.11 | विह नैव विह यर्स्याव-रुन्धे मिथुनौ                     |   |
| 56  | TB_1.1.7.1  | घर्मः शिरस्तदयमग्निः सं प्रियः                         |   |
| 57  | TB_1.1.7.2  | अर्कश्चक्षु-स्तदसौ सूर्यस्तदयमग्निः संप्रियः पशुभिर्   |   |
| 58  | TB_1.1.7.3  | ये ते अग्ने शिवे                                       |   |
| 59  | TB_1.1.8.1  | इमे वा एते लोका  |   |
| 60  | TB_1.1.8.2  | अस्मिन्नेवैनं लोके प्रतिष्ठित-माधत्ते वामदेव्य-मभिगायत |   |
| 61  | TB_1.1.8.3  | सोऽश्वो वारो भूत्वा पराङैत्                            |   |
| 62  | TB_1.1.8.4  | उपैनमुत्तरो यज्ञो नमति रुद्रो                          |   |
| 63  | TB_1.1.8.5  | सप्राण-मेवैन-माधत्ते स्वदितं तोकाय तनयाय               |   |
| 64  | TB_1.1.8.6  | अन्नमेवाव रुन्धे तेन मे                                |   |
| 65  | TB_1.1.9.1  | शमीगर्भादग्निं मन्थति एषा वा                           |   |

| SNo | Panchasat   |   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|-------------|---|---|
| 66  | TB_1.1.9.2  | तस्या उच्छेषण-मददुः तत् प्राश्ञात्                      | TB_1.1.9.3                                |
| 67  | TB_1.1.9.3  | तस्या उच्छेषण-मददुः तत् प्राश्ञात्                      | TB_1.1.9.2                                |
| 68  | TB_1.1.9.4  | उच्छेषणादेव तद्-रेतो धत्ते अस्थि                        |   |
| 69  | TB_1.1.9.5  | इयतीर् भवन्ति यज्ञ्परुषा संमिताः                        |   |
| 70  | TB_1.1.9.6  | एतद्वा अग्नेः प्रियं धाम                                |   |
| 71  | TB_1.1.9.7  | जगतीभिर्-वैश्यस्य जगती छन्दा वै                         |   |
| 72  | TB_1.1.9.8  | यन् माश्स-मरुञीयात् यथ्स्रिय-मुपेयात् निर्वीर्यः        |   |
| 73  | -           | नैनं प्रतिनुदन्ते ब्रह्मवादिनो वदन्ति                   |   |
| 74  | TB_1.1.9.10 | सैव साऽग्नेः सन्ततिः तं                                 |   |
| 75  | TB_1.1.10.1 | प्रजापतिः प्रजा असृजत स                                 |   |
| 76  | TB_1.1.10.2 | दोहा एव युष्माकमिति सा                                  |   |
| 77  | TB_1.1.10.3 | सा चतुर्थ-मुदक्रामत् तत् प्रजापतिः                      |   |
| 78  | TB_1.1.10.4 | तामात्मनोऽधि निर्मिमीते यदग्नि-राधीयते तस्मा-देतावन्तो- |   |
|     |             | ऽग्नय   |   |
| 79  | TB_1.1.10.5 | पशूनेवैतेन स्पृणोति सप्रथ सभां                          |   |
| 80  | TB_1.1.10.6 | तेन सोऽस्याभीष्टः प्रीतः यथ्सभायां                      |   |
| 81  | TB_1.2.1.1  | उद्धन्यमान-मस्या अमेद्ध्यम् अप पाप्मानं                 |   |

| SNo | Panchasat   | Beginning  | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|-------------|--|---|
| 82  | TB_1.2.1.2  | यदिदं दिवो यददः पृथिव्याः                          |   |
| 83  | TB_1.2.1.3  | वम्रीभि-रनुवित्तं गुहासु श्रोत्रं त                |   |
| 84  | TB_1.2.1.4  | यत् पर्यपश्यथ् सरिरस्य मद्भ्ये                     |   |
| 85  | TB_1.2.1.5  | अति प्रयच्छं दुरितिं तरेयम्                        |   |
| 86  | TB_1.2.1.6  | पर्णमपतत् तृतीयस्यै दिवोऽधि सोऽयं                  |   |
| 87  | TB_1.2.1.7  | शमीश् शान्त्यै हराम्यहम् यत्ते                     |   |
| 88  | TB_1.2.1.8  | शरीरमभि स॰ स्कृताः स्थ                             |   |
| 89  | TB_1.2.1.9  | यज्ञियैः केतुभिः सह यं                             |   |
| 90  | TB_1.2.1.10 | घृतैर् बोधयतातिथिम् आऽस्मिन्. हव्या                |   |
| 91  |             | शोचिष्केशो घृतनिर्णिक्-पावकः सुयज्ञो अग्निर्       |   |
| 92  | TB_1.2.1.12 | त्वामग्ने समिधानं यविष्ठ देवा                      |   |
| 93  | TB_1.2.1.13 | इन्धानो अक्रो विदथेषु दीद्यत्                      |   |
| 94  | I - I       | आरोहतं दशतः शकरीर् मम                              |   |
| 95  |             | प्रजया पशुभिर्-ब्रह्मवर्चसेन सुवर्गे लोके          |   |
| 96  | TB_1.2.1.16 | अग्निमश्वत्थाद्धि हव्यवाहम् शमीगर्भा-ज्जनयन.यो मयो |   |
| 97  | TB_1.2.1.17 | अग्नेर्भस्मास्यग्नेः पुरीषमसि सज्ञांनमसि कामधरणम्  |   |
| 98  | TB_1.2.1.18 | कल्पेतां द्यावापृथिवी कल्पन्तामाप ओषधीः            |   |

| SNo | Panchasat   | Beginning                                       | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|-------------|---|---|
| 99  | TB_1.2.1.19 | अन्तरिक्षस्य पोषेण सर्वपशु-माद्धे अजीजनन्-नमृतं |   |
| 100 | TB_1.2.1.20 | जीवात्वै पुण्याय अहं त्वदस्मि                   |   |
| 101 | TB_1.2.1.21 | अग्ने सपत्ना॰ अप बाधमानः                        |   |
| 102 |             | यस्त आत्मा पशुषु प्रविष्टः                      |   |
| 103 | TB_1.2.1.23 | ऊर्जं नो धेहि द्विपदे                           |   |
| 104 | TB_1.2.1.24 | तयोः पृष्ठे सीदतु जातवेदाः                      |   |
| 105 | TB_1.2.1.25 | नर्य प्रजां मे गोपाय                            |   |
| 106 | TB_1.2.1.26 | अष्टाराफाश्च य इहाग्ने ये                       |   |
| 107 |             | चतुः शिखण्डा युवतिः सुपेशाः                     |   |
| 108 | TB_1.2.2.1  | नवैतान्यहानि भवन्ति नव वै                       |   |
| 109 | TB_1.2.2.2  | परावो वा उक्थानि पराूनामव-रुद्ध्यै              |   |
| 110 | TB_1.2.2.3  | सुवर्गमेव तेन लोकमभि जयन्ति                     |   |
| 111 | TB_1.2.2.4  | अतिग्राह्याः परः सामसु इमानेवैतैर्              |   |
| 112 | TB_1.2.2.5  | त्रयस्त्रिश्राद्वै देवताः देवता एवावरुन्धते     |   |
| 113 | TB_1.2.3.1  | संतितर्वा एते ग्रहाः यत्                        |   |
| 114 | TB_1.2.3.2  | एवः सँवथ्सरस्य पक्षसी दिवाकीर्त्यमि             |   |
| 115 | TB_1.2.3.3  | सप्त वै शीर्.षण्याः प्राणाः                     |   |

| SNo | Panchasat  |   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|------------|---|---|
| 116 | TB_1.2.3.4 | सुवर्गस्य लोकस्या-भिजित्यै प्र वा                                       |   |
| 117 | TB_1.2.4.1 | एकविश्रा एष भवति एतेन   |   |
| 118 | TB_1.2.4.2 | देवा वा आदित्यस्य सुवर्गस्य   |   |
| 119 | TB_1.2.4.3 | महादिवाकीर्त्यं शेतुः पृष्ठम् विकर्णं                                   |   |
| 120 | TB_1.2.5.1 | अप्रतिष्ठां वा एते गच्छन्ति   |   |
| 121 | TB_1.2.5.2 | वैश्वदेव-मालभन्ते देवता एवाव-रुन्धते द्यावापृथिव्यां                    |   |
| 122 | TB_1.2.5.3 | मित्रेणैव यज्ञस्य स्विष्टश् शमयन्ति                                     |   |
| 123 | TB_1.2.5.4 | यदितरिक्ता-मेकादिशनी-मालभेरन्न् अप्रियं भ्रातृब्य-<br>मभ्यतिरिच्येत यद् |   |
| 124 | TB_1.2.6.1 | प्रजापतिः प्रजाः सृष्ट्वा वृत्तोऽशयत्                                   |   |
| 125 | TB_1.2.6.2 | चतुर्वि श्रा-त्यर्द्धमासः सँवथ्सरः यद् वा                               |   |
| 126 | TB_1.2.6.3 | त्रेधा विहित १ हि शिरः  |   |
| 127 | TB_1.2.6.4 | पञ्चविश्श आत्मा भवति तस्मान्-मद्भ्यतः                                   |   |
| 128 | TB_1.2.6.5 | यदित इतो लोमानि दतो   |   |
| 129 | TB_1.2.6.6 | यस्य तल्पसद्य-मभिजितश स्यात् स  |   |
| 130 | TB_1.2.6.7 | ब्राह्मणश्च शूद्रश्च चर्मकर्ते व्यायच्छेते                              |   |
| 131 | TB_1.3.1.1 | देवासुराः सं यत्ता आसन्न्   |   |

| SNo | Panchasat  | Beginning   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|------------|---|---|
| 132 | TB_1.3.1.2 | ते सोम-मन्वविन्दन् तमघ्नन् तस्य                         |   |
| 133 | TB_1.3.1.3 | अनाग्नेयं वा एतत् क्रियते                               |   |
| 134 | TB_1.3.1.4 | यथा सुप्तं बोधयति तादृगेव                               |   |
| 135 | TB_1.3.1.5 | न सभृंत्याः संभाराः न                                   |   |
| 136 | TB_1.3.1.6 | तादृगेव तत् उच्चैः स्विष्टकृतमुथ्                       |   |
| 137 | TB_1.3.1.7 | तद्-वैश्वानरवत्-प्रजननवत्तर-मुपैतीति तदाहुः व्यृद्धं वा |   |
| 138 | TB_1.3.2.1 | देवा वै यथादर्.शं यज्ञानाहरन्त                          |   |
| 139 | TB_1.3.2.2 | तस्मिन्-नाजिमधावन्न् तं बृहस्पति-रुद्जयत् तेनायजत       |   |
| 140 | TB_1.3.2.3 | य एवं विद्वान्. वाजपेयेन                                |   |
| 141 | TB_1.3.2.4 | वाज्येवैनं पीत्वा भवति आऽस्य                            |   |
| 142 | TB_1.3.2.5 | वाग्वै वाजस्य प्रसवः य                                  |   |
| 143 | TB_1.3.2.6 | अप्येव नोऽत्रास्त्वित तेभ्य एता                         |   |
| 144 | TB_1.3.2.7 | तस्माद्-गायतश्च मत्तस्य च न                             |   |
| 145 | TB_1.3.3.1 | देवा वै यदन्यैर्-ग्रहैर्-यज्ञस्य नावारुन्धत             |   |
| 146 | TB_1.3.3.2 | सर्व ऐन्द्रा भवन्ति एकधैव                               |   |
| 147 | TB_1.3.3.3 | एतन् मनुष्याणाम् यथ् सुरा                               |   |
| 148 | TB_1.3.3.4 | अन्नस्यैव शमलेन शमलं यजमाना-दपहन्ति                     |   |

| SNo | Panchasat  | Beginning                                    | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|------------|--|---|
| 149 | TB_1.3.3.5 | पूर्वे सोमग्रहा गृह्यन्ते अपरे               |   |
| 150 | TB_1.3.3.6 | सपृंचः स्थ सं मा                             |   |
| 151 | TB_1.3.3.7 | तस्माद् वाजपेययाजी पूतो मेद्ध्यो             |   |
| 152 | TB_1.3.4.1 | ब्रह्मवादिनो वदन्ति नाग्निष्टोमो नोक्थ्यः    |   |
| 153 | TB_1.3.4.2 | मारुत्या बृहतः स्तोत्रम् एतावन्तो            |   |
| 154 | TB_1.3.4.3 | सुवर्गं लोकश्षोडिशानः स्तोत्रेण              |   |
| 155 | TB_1.3.4.4 | प्रजापतेराह्यै श्यामा एकरूपा भवन्ति          |   |
| 156 | TB_1.3.4.5 | एतैः प्रचरति यज्ञस्याघाताय एकधा              |   |
| 157 | TB_1.3.5.1 | सावित्रं जुहोति कर्मणः कर्मणः                |   |
| 158 | TB_1.3.5.2 | इन्द्रस्य वज्रोऽसि वार्त्रघ्न इति            | TB_1.7.6.8                                |
|     |            |  | TB_1.7.9.1                                |
| 159 | TB_1.3.5.3 | यदेवास्याफ्सु प्रविष्टम् तदेवावरुन्धे बहु    |   |
| 160 | TB_1.3.5.4 | अपां न पादाशुहेमन्निति संमार्ष्टि            |   |
| 161 | TB_1.3.6.1 | देवस्याहश सवितुः प्रसवे बृहस्पतिना           |   |
| 162 | TB_1.3.6.2 | वाजिनाश् साम गायते अन्नं                     |   |
| 163 | TB_1.3.6.3 | या दुन्दुभौ परमयैव वाचाऽवरां                 |   |
| 164 | TB_1.3.6.4 | सप्तदशः प्रजापतिः प्रजापते-राप्त्यै अर्वाऽसि |   |

| SNo | Panchasat  | Beginning   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|------------|---|---|
| 165 | TB_1.3.6.5 | वाजिनो वाजं धावत काष्ठां  |   |
| 166 | TB_1.3.6.6 | प्र वा एतेऽस्माल्-लोकाच्यवन्ते य  |   |
| 167 | TB_1.3.6.7 | कृष्णलं कृष्णलं वाजसृद्भ्यः प्रयच्छति   |   |
| 168 | TB_1.3.6.8 | एतद्वै देवानां परममन्नम् यन्नीवाराः   |   |
| 169 | TB_1.3.6.9 | यो वाजपेयेन यजते बार्.हस्पत्य   |   |
| 170 | TB_1.3.7.1 | तार्प्यं यजमानं परिधापयति यज्ञो   |   |
| 171 | TB_1.3.7.2 | वाजस्याव-रुद्ध्यै जाय एहि सुवो  |   |
| 172 | TB_1.3.7.3 | एविमव हि प्रजापितः समृद्ध्यै  |   |
| 173 | TB_1.3.7.4 | द्वादश मासाः सँवथ्सरः सँवथ्सरमेव  |   |
| 174 | TB_1.3.7.5 | यावत्-प्राणाः यावदेवास्यास्ति तेन सह  |   |
| 175 | TB_1.3.7.6 | समहं प्रजया सं मया  |   |
| 176 | TB_1.3.7.7 | पुरस्ताद्धि प्रतीचीन-मन्नमद्यते शीर्.षतो घ्नन्ति  |   |
| 177 | TB_1.3.7.8 | अमृत एव सुवर्गे लोके  |   |
| 178 | TB_1.3.8.1 | सप्तान्न-होमाञ्जुहोति सप्त वा अन्नानि   |   |
| 179 | TB_1.3.8.2 | अवरुद्धेन व्युद्ध्येत सर्वस्य समवदाय  |   |
| 180 | TB_1.3.8.3 | पुरस्तात्-प्रत्यञ्च-मभिषिञ्चति पुरस्ताद्धि-प्रतीचीन-मन्नमद्यते<br>शीर्.षतोऽभिषिञ्चति शीर्.षतो |   |

| SNo | Panchasat   | Beginning  | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|-------------|--|---|
| 181 | TB_1.3.8.4  | इन्द्रिय-मेवास्मि-न्नेतेन दधाति बृहस्पतेस्त्वा<br>साम्राज्येनाभिषिञ्चा-मीत्याह |   |
| 182 | TB_1.3.8.5  | इन्द्रियस्यावरुद्ध्यै अनिरुक्ताभिः प्रातस्सवने स्तुवते                         |   |
| 183 | TB_1.3.9.1  | नृषदं त्वेत्याह प्रजा वै   |   |
| 184 | TB_1.3.9.2  | अफ्सुषदं त्वा घृतसद-मित्याह अपामेवैतेन   |   |
| 185 | TB_1.3.9.3  | नाकसद-मित्याह यदावै वसीयान् भवति   |   |
| 186 | TB_1.3.10.1 | इन्द्रो वृत्रश् हत्वा असुरान्  | TB_1.7.1.6                                |
| 187 | TB_1.3.10.2 | तमेभ्यः पुनरददुः तस्मात्-पितृभ्यः पूर्वेद्युः                                  |   |
| 188 | TB_1.3.10.3 | एतद् वै ब्राह्मणं पुरा   |   |
| 189 | TB_1.3.10.4 | षड्वा ऋतवः ऋतूनेव प्रीणाति   | TB_1.6.8.8                                |
| 190 |             | ऋतवः खळु वै देवाः  |   |
| 191 |             | ह्रीका हि पितरः ऒष्मणो   |   |
| 192 |             | पितृभ्य आवृश्च्येत अवघ्रेयमेव तन्नेव   |   |
| 193 |             | नमस्करोति नमस्कारो हि पितृणाम्   |   |
| 194 |             | युष्माश्स्तेऽनु येऽस्मिँ ल्लोके मां ते   |   |
| 195 | TB_1.3.10.1 | )देवानां वा इतरे यज्ञाः  |   |
| 196 | TB_1.4.1.1  | उभये वा एते प्रजापतेरद्ध्य-सृज्यन्त  |   |

| SNo | Panchasat  | Beginning  | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|------------|--|---|
| 197 | TB_1.4.1.2 | देवता वा एता यजमानस्य  |   |
| 198 | TB_1.4.1.3 | देवा एव तद्-देवान्-गच्छन्ति यच्चमसाञ्जुहोति                            |   |
| 199 | TB_1.4.1.4 | तैर्वे ते व्यावृत-मगच्छन्न् यद्-दारुमयाणि                              |   |
| 200 | TB_1.4.1.5 | तस्या एते स्तना आसन्न्   |   |
| 201 | TB_1.4.1.6 | ऊर्जमेव तया यजमान इमां   |   |
| 202 | TB_1.4.2.1 | युवश् सुराममिश्वना नमुचावाऽसुरे सचा                                    |   |
| 203 | TB_1.4.2.2 | वाजसनिश् रियमस्मे सुवीरम् प्रशस्तं                                     |   |
| 204 | TB_1.4.2.3 | यदत्र शिष्टश् रसिनः सुतस्य   |   |
| 205 | TB_1.4.2.4 | यस्ते देव वरुण त्रिष्टुप्छन्दाः  |   |
| 206 | TB_1.4.3.1 | उदस्थाद्-देव्यदितिर्-विश्वरूपी आयुर्यज्ञपतावधात् इन्द्राय कृ-<br>ण्वती |   |
| 207 | TB_1.4.3.2 | इमामेवास्मा उत्थापयति आयुर्यज्ञपतावधादित्याह आयुरेवा-<br>स्मिन्        |   |
| 208 | TB_1.4.3.3 | दुग्ध्वा ददाति न ह्यदृष्टा   |   |
| 209 | TB_1.4.3.4 | अद्भिरेवैनदामोति यो वै यज्ञस्यार्तेनानार्तश्                           |   |
| 210 | TB_1.4.3.5 | यद्-युद्धतस्य स्कन्देत् यत् ततोऽहुत्वा                                 |   |
| 211 | TB_1.4.3.6 | वि वा एतस्य यिन्धियते  |   |

| SNo | Panchasat   | Beginning   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|-------------|---|---|
| 212 | TB_1.4.4.1  | नि वा एतस्याहवनीयो गार्.हपत्यं                          |   |
| 213 | TB_1.4.4.2  | भागधेयेनैवैनं प्रणयति ब्राह्मण आर्.षेय                  |   |
| 214 | TB_1.4.4.3  | पुनः समन्य जुहोति अन्तेनैवान्तं                         |   |
| 215 | TB_1.4.4.4  | अथाग्निम् अथाग्निहोत्रम् यदाज्यं पुरस्ताद्धरति          |   |
| 216 | TB_1.4.4.5  | सर्वाभिरेवैनं देवताभिरुद्धरित पराची वा                  |   |
| 217 | TB_1.4.4.6  | यस्ताम्यति अन्तमेष यज्ञस्य गच्छति                       |   |
| 218 | TB_1.4.4.7  | यदाहवनीय-मनुद्वाप्य गार्.हपत्यं मन्थेत् विच्छिन्द्यात्  |   |
| 219 | TB_1.4.4.8  | इतः प्रथमं जज्ञे अग्निः                                 |   |
| 220 | TB_1.4.4.9  | सहसे द्युम्नाय ऊर्जे पत्यायेत्याह                       |   |
| 221 | TB_1.4.4.10 | ताभ्यामेवैनश सिमन्धे वज्रो वै                           |   |
| 222 | TB_1.4.4.11 | पूर्वेणैवास्य यज्ञेन यज्ञमनु सं                         |   |
| 223 | TB_1.4.5.1  | यस्य प्रातस्सवने सोमोऽतिरिच्यते माद्ध्यन्दिनः           |   |
| 224 | TB_1.4.5.2  | मरुत्वतीषु कुर्वन्ति तेनैव माद्ध्यन्दिनाथ्-सवनान्नयन्ति |   |
| 225 | TB_1.4.5.3  | अतिरिक्तस्य शान्त्यै बण्महा॰ असि                        |   |
| 226 | TB_1.4.5.4  | मद्भ्यत एव यज्ञ्श् समाद्धाति                            |   |
| 227 | TB_1.4.6.1  | एकैको वै जनताया-मिन्द्रः एकं                            |   |
| 228 | TB_1.4.6.2  | मरुत्वतीः प्रतिपदः मरुतो वै                             |   |

| SNo | Panchasat  | Beginning   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|------------|---|---|
| 229 | TB_1.4.6.3 | सर्वस्माद्-वित्ताद्-वेद्यात् अभिवर्तो ब्रह्मसामं भवति |   |
| 230 | TB_1.4.6.4 | उक्थ्यं कुर्वीत यद्युक्थ्यः स्यात्                    |   |
| 231 | TB_1.4.6.5 | इष्टर्गः खलु वै पूर्वोऽर्षुः                          |   |
| 232 | TB_1.4.6.6 | तं दक्षिणतो वेद्यै निधाय                              |   |
| 233 | TB_1.4.6.7 | अथो धुवन्त्येवैनम् अथो न्येवास्मै                     | TB_3.9.6.2                                |
| 234 | TB_1.4.7.1 | असुर्यं वा एतस्माद्-वर्णं कृत्वा                      |   |
| 235 | TB_1.4.7.2 | यदाहवनीय उद्घायेत् यत्तं मन्थेत्                      |   |
| 236 | TB_1.4.7.3 | अत्र वाव स निलयते                                     |   |
| 237 | TB_1.4.7.4 | गार्,हपत्यो वा अग्नेर्योनिः स्वादेवैनं                |   |
| 238 | TB_1.4.7.5 | तथ् सुवर्णं हिरण्य-मभवत् यथ्                          |   |
| 239 | TB_1.4.7.6 | त आदारा अभवन्न इन्द्रो                                |   |
| 240 | TB_1.4.7.7 | नीतिमश्रेण तृतीयसवने अगिष्टोमः सोमः                   |   |
| 241 | TB_1.4.8.1 | पवमानः सुवर्जनः पवित्रेण विचर्.षणिः                   |   |
| 242 | TB_1.4.8.2 | यत्ते पवित्र-मर्चिषि अग्ने विततमन्तरा                 |   |
| 243 | TB_1.4.8.3 | वैश्वानरो रिस्मिभर्मा पुनातु वातः                     |   |
| 244 | TB_1.4.8.4 | इदं ब्रह्म पुनीमहे यः                                 |   |
| 245 | TB_1.4.8.5 | सुदुघा हि पयस्वतीः ऋषिभिः                             |   |

| SNo | Panchasat   | Beginning   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|-------------|---|---|
| 246 | TB_1.4.8.6  | ब्राह्मणेष्वमृतः हितम् येन देवाः  |   |
| 247 | TB_1.4.9.1  | प्रजा वै सत्रमासत तपस्तप्यमाना  |   |
| 248 | TB_1.4.9.2  | तमुपोदतिष्ठन्त-मजुहवुः तेन-द्वयीमूर्जमवारुन्धत तस्माद्-<br>द्विरह्नो-मनुष्येभ्य उपह्रियते |   |
| 249 | TB_1.4.9.3  | तमुपोदतिष्ठन्त-मजुहवुः तेन सँवथ्सर ऊर्जमवा-रुन्धत   |   |
| 250 | TB_1.4.9.4  | यद्-यजते यामेव देवा ऊर्जमवारुन्धत   |   |
| 251 | TB_1.4.9.5  | यामेव पशव ऊर्जमवा-रुन्धत तां  |   |
| 252 | TB_1.4.10.1 | अग्निर्वाव सँवथ्सरः आदित्यः परिवथ्सरः   |   |
| 253 | TB_1.4.10.2 | तस्माद्-वरुण-प्रघासैर् यजमानः परिवथ्सरीणाः स्वस्ति-<br>माशास्त                            |   |
| 254 | TB_1.4.10.3 | वायुमेव तदनुवथ्सर-मामोति तस्मा-च्छुनासीरीयेण यजमानः                                       |   |
| 255 | TB_1.4.10.4 | यस्मिन्नग्निः यद्-वैश्वदेवेन यजते एतमेव   |   |
| 256 | TB_1.4.10.5 | अथ गृहमेधिन-मामोति यदा गृहमेधिन-मामोति  |   |
| 257 | TB_1.4.10.6 | अथादित्यो वरुणश राजानं वरुण   |   |
| 258 |             | स एतं लोकमजयत् यस्मिश   |   |
| 259 |             | तथ् साकमेधानाः साकमेधत्वम् अथर्तवः  |   |
| 260 | TB_1.4.10.9 | अथौषधय इमं देवं त्र्यम्बकै-रयजन्त   |   |

| SNo | Panchasat   | Beginning  | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|-------------|--|---|
| 261 | TB_1.4.10.1 | )वायोरेव सायुज्य-मुपैति ब्रह्मवादिनो वदन्ति                                |   |
| 262 | TB_1.5.1.1  | अग्नेः कृत्तिकाः शुक्रं परस्ता-ज्ज्योति-रवस्तात्                           |   |
| 263 | TB_1.5.1.2  | बृहस्पतेस्तिष्यः जुह्वतः परस्ताद्-यजमाना अवस्तात्                          |   |
| 264 | TB_1.5.1.3  | देवस्य सवितुर्, हस्तः प्रसवः   |   |
| 265 | TB_1.5.1.4  | इन्द्रस्य रोहिणी शृणत्-परस्तात्-प्रतिशृण-दवस्तात्<br>निर्,ऋत्यै-मूलवर्,हणी |   |
| 266 | TB_1.5.1.5  | वसूनाः श्रविष्ठाः भूतं परस्ताद्-भूतिरवस्तात्                               |   |
| 267 | TB_1.5.2.1  | यत् पुण्यं नक्षत्रम् तद्-बट्   |   |
| 268 | TB_1.5.2.2  | यो वै नक्षत्रियं प्रजापतिं   |   |
| 269 | TB_1.5.2.3  | अस्मिश्श्वा-मुष्मिश्श्व यां कामयेत दुहितरं                                 |   |
| 270 | TB_1.5.2.4  | यद्भ्यजयन्न् तद्भिजितोऽभिजित्त्वम् यं कामयेता-नपजय्यं                      |   |
| 271 | TB_1.5.2.5  | ते रेवत्यां प्राभवन्न् तस्माद्-रेवत्यां                                    |   |
| 272 | TB_1.5.2.6  | देवगृहा वै नक्षत्राणि य  |   |
| 273 | TB_1.5.2.7  | यमनक्षत्राण्यन्यानि कृत्तिकाः प्रथमम् विशाखे                               |   |
| 274 | TB_1.5.2.8  | तान्युत्तरेण अन्वेषामराथ्स्मेति तदनूराधाः ज्येष्ठमेषा-<br>मवधिष्मेति       |   |
| 275 | TB_1.5.2.9  | तच्छ्रोणा यदशृणोत् तच्छ्रविष्ठाः यच्छत-मभिषज्यन्न्                         |   |

| SNo | Panchasat  | Beginning   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|------------|---|---|
| 276 | TB_1.5.3.1 | देवस्य सवितुः प्रातः प्रसवः   |   |
| 277 | TB_1.5.3.2 | प्राचीनं मद्भ्यन्दिनात् ततो देवा                                    |   |
| 278 | TB_1.5.3.3 | भगस्यापराह्नः तत्-पुण्यं तेजस्व्यहः तस्माद्पराह्ने                  |   |
| 279 | TB_1.5.3.4 | ब्राह्मणो वा अष्टाविश्शो नक्षत्राणाम्                               |   |
| 280 | TB_1.5.4.1 | ब्रह्मवादिनो वदन्ति कति पात्राणि                                    |   |
| 281 | TB_1.5.4.2 | व्यानादुपाश्शु सवनम् वाच ऐन्द्रवायवम्                               |   |
| 282 | TB_1.5.5.1 | ऋतमेव परमेष्ठि ऋतं नात्येति   |   |
| 283 | TB_1.5.5.2 | तपसाऽस्यानुवर्तये शिवेनास्योपवर्तये शग्मेनास्या-भिवर्तये त-<br>दृतं |   |
| 284 | TB_1.5.5.3 | इन्द्रो मरुद्भिः सखिभिः सह  |   |
| 285 | TB_1.5.5.4 | तद्दतं तथ् सत्यम् तद्-व्रतं   |   |
| 286 | TB_1.5.5.5 | शिरस्तपस्याहितम् वैश्वानरस्य तेजसा ऋतेनास्य                         |   |
| 287 | TB_1.5.5.6 | एकं मास-मुद्सृजत् परमेष्ठी प्रजाभ्यः                                |   |
| 288 | TB_1.5.5.7 | तेनाहमस्य ब्रह्मणा निवर्तयामि जीवसे                                 |   |
| 289 | TB_1.5.6.1 | देवा वै यद्-यज्ञे ऽकुर्वत   |   |
| 290 | TB_1.5.6.2 | अथो परैव भवति अथ  |   |
| 291 | TB_1.5.6.3 | अथैतन्-मनुर्-वप्त्रे मिथुन-मपश्यत् स श्मश्रूण्यग्रेऽवपत             |   |

| SNo | Panchasat  | Beginning  | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|------------|--|---|
| 292 | TB_1.5.6.4 | वैश्वदेवेन चतुरो मासोऽवृञ्जतेन्द्रराजानः ताञ्छीर्,षन्नि                    |   |
| 293 | TB_1.5.6.5 | य एवं विद्वाः श्यातुर्मास्यैर्-यजते भ्रातृव्यस्यैव                         |   |
| 294 | TB_1.5.6.6 | प्रजायते य एवं विद्वॉल्लोहितायसेन  |   |
| 295 | TB_1.5.6.7 | ऋद्भ्यामेव तद्-वीर्य एषु लोकेषु  |   |
| 296 | TB_1.5.7.1 | आयुषः प्राणश् सन्तनु प्राणादपानश्  |   |
| 297 | TB_1.5.8.1 | इन्द्रो दधीचो अस्थिभः वृत्राण्य  |   |
| 298 | TB_1.5.8.2 | इन्द्रमर्केभिरर्किणः इन्द्रं वाणीरनूषत इन्द्र                              |   |
| 299 | TB_1.5.8.3 | उग्र उग्राभिरूतिभिः तमिन्द्रं वाजयामसि                                     |   |
| 300 | TB_1.5.9.1 | देवासुराः सम्यता आसन्न् स  | TB_3.3.5.1                                |
| 301 | TB_1.5.9.2 | तं यज्ञतुभिर्नान्वविन्दन् तिमिष्टिभि-रन्वैच्छन् तिमिष्टिभि-<br>रन्वविन्दन् |   |
| 302 | TB_1.5.9.3 | ते तदं तमेव कृत्वोदद्रवन्न्  |   |
| 303 | TB_        |  |   |
| 304 | TB_1.5.9.5 | स्रुवेणाघार-माघार्य तिस्रः पराची-राहुतीर्, हुत्वा                          |   |
| 305 | TB_1.5.9.6 | तिस्रः पराचीराहुतीर्. हुत्वा स्नुवेणोपसदं                                  |   |
| 306 | TB_1.5.9.7 | तस्माद्भिनीयैवाहः पशुमालभेत अह्न एव  |   |
| 307 | TB_1.5.9.8 | पञ्चपञ्ची वै यजमानः त्वङ्गाः   |   |

| SNo | Panchasat   | Beginning   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|-------------|---|---|
| 308 |             | स समुद्र उत्तरतः प्राज्वलद्-भूम्यन्तेन                    |   |
| 309 |             | अथ यथ् सुवर्णरजताभ्यां कुशीभ्यां                          |   |
| 310 |             | तश् सप्तद्शेनाभि प्रास्तुवत तश्                           |   |
| 311 | TB_1.5.10.4 | त्रिवृतैव तद्-यजमानमाददते तं त्रिवृतैव                    |   |
| 312 |             | तं पञ्चदरोनैव हरन्ति यावती                                |   |
| 313 | TB_1.5.10.6 | यावती सप्तदशस्य मात्रा प्रजापतिर्वै                       |   |
| 314 |             | मात्राश् सायुज्यश् सलोकतां गमयन्ति                        |   |
| 315 | TB_1.5.11.1 | ये वै चत्वारः स्तोमाः                                     |   |
| 316 | TB_1.5.11.2 | एतानि वाव तानि ज्योतीश्षि                                 |   |
| 317 | TB_1.5.11.3 | यदिश्वभ्यां धानाः पूष्णः करम्भः                           |   |
| 318 | TB_1.5.11.4 | स यद्ष्टाकपालान् प्रातस्सवने कुर्यात्                     |   |
| 319 | TB_1.5.12.1 | तस्यावाचोऽवपादादिबभयुः तमेतेषु सप्तसु छन्दः               |   |
| 320 | TB_1.5.12.2 | स बृहतीमेवा-स्पृशत् द्वाभ्यामक्षराभ्याम् अहोरात्राभ्यामेव |   |
| 321 | TB_1.5.12.3 | यस्यां तत् प्रत्यतिष्ठदिति यानि                           |   |
| 322 | TB_1.5.12.4 | ते बृहती एव भूत्वा  | TB_1.5.12.5                               |
| 323 | TB_1.5.12.5 | ते बृहती एव भूत्वा  | TB_1.5.12.4                               |
| 324 | TB_1.6.1.1  | अनुमत्यै पुरोडाश-मष्टाकपालं निर्वपति ये                   |   |

| SNo | Panchasat   | Beginning                                       | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|-------------|---|---|
| 325 | TB_1.6.1.2  | रुद्रो भूत्वाऽग्निरनूत्थाय अद्धर्युं च          |   |
| 326 | TB_1.6.1.3  | स्वकृत इरिणे जुहोति प्रदरे                      | TB_1.7.1.9                                |
| 327 | TB_1.6.1.4  | अन्तत एव निर्.ऋतिं निरवदयते                     |   |
| 328 | TB_1.6.1.5  | इयमेवास्मै राज्यमनुमन्यते धेनुर्-दक्षिणा इमामेव |   |
| 329 | TB_1.6.1.6  | विष्णुर्यज्ञः देवताश्चैव यज्ञं चाव              |   |
| 330 | TB_1.6.1.7  | वार्त्रघ्नमेव विजित्यै हिरण्यं दक्षिणा          |   |
| 331 | TB_1.6.1.8  | यद्-वही तेनाग्नेयः यद्दषभः तेनैन्द्रः           |   |
| 332 | TB_1.6.1.9  | इन्द्रियमेवाव रुन्धे ऋषभो वही                   |   |
| 333 | TB_1.6.1.10 | देवा वा ओषधीष्वाजिमयुः ता                       |   |
| 334 | TB_1.6.1.11 | प्रथमजो वथ्सो दक्षिणा समृद्ध्यै                 |   |
| 335 | TB_1.6.2.1  | वैश्वदेवेन वै प्रजापतिः प्रजा                   | TB_1.6.8.1                                |
| 336 | TB_1.6.2.2  | सोमो रेतोऽद्धात् सविता प्राजनयत्                |   |
| 337 | TB_1.6.2.3  | स एतं प्रजापतिर्मारुतः सप्तकपाल-मपश्यत्         |   |
| 338 | TB_1.6.2.4  | याः पूर्वाः प्रजा असृक्षि                       |   |
| 339 | TB_1.6.2.5  | प्रजा एव तद्-यजमानः पोषयति                      |   |
| 340 | TB_1.6.2.6  | मामग्रे यजत मया मुखेनासुरां                     |   |
| 341 | TB_1.6.2.7  | तेऽग्निना मुखेनासुरानजयन्न् सोमेन राज्ञा        |   |

| SNo | Panchasat   | Beginning  | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|-------------|--|---|
| 342 | TB_1.6.3.1  | त्रिवृद्-बर्.हिर्-भवति माता पिता पुत्रः                  |   |
| 343 | TB_1.6.3.2  | अस्मिन्नेव तेन लोके प्रति                                |   |
| 344 | TB_1.6.3.3  | बहुरूपा हि परावः समृद्ध्यै                               |   |
| 345 | TB_1.6.3.4  | त्रिश्शथ् संपद्यन्ते त्रिश्शदक्षरा विराट्                |   |
| 346 | TB_1.6.3.5  | यदेककपाल आज्यमानयति यजमानमेव पशुभिः                      |   |
| 347 | TB_1.6.3.6  | यजमानस्यावद्येत् उद्घा माद्येद्-यजमानः प्र               |   |
| 348 | TB_1.6.3.7  | यदेककपाल-माहवनीये जुहोति यजमानमेव सुवर्गं                |   |
| 349 | TB_1.6.3.8  | रक्षाश्सि यज्ञ्श् हन्युः यदुदङ्ख                         |   |
| 350 | TB_1.6.3.9  | वाजिनो यजित अग्निर्वायुः सूर्यः                          |   |
| 351 | TB_1.6.3.10 | यदप्रहृत्य परिधीञ्जुहुयात् अन्तराधानाभ्यां घासं          |   |
| 352 | TB_1.6.4.1  | प्रजापतिः सविता भूत्वा प्रजा                             |   |
| 353 | TB_1.6.4.2  | प्रजानामवरुणग्राहाय तासां दक्षिणो बाहुर्                 |   |
| 354 | TB_1.6.4.3  | तस्मात्-पृथमात्रं व्यश्सौ उत्तरस्यां वैद्यामुत्तरवेदिमुप |   |
| 355 | TB_1.6.4.4  | प्राणापानावेवाव रुन्धे ओजो बलं                           |   |
| 356 | TB_1.6.4.5  | शमीपर्णान्युप वपति घासमेवाभ्यामपि यच्छति                 |   |
| 357 | TB_1.6.5.1  | उत्तरस्यां वैद्यामन्यानि हवीश्षि सादयति                  |   |
| 358 | TB_1.6.5.2  | तत् प्रतिप्रस्थाता करोति तस्माद्-यच्छ्रेयान्-करोति       |   |

| SNo | Panchasat  | Beginning   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|------------|---|---|
| 359 | TB_1.6.5.3 | प्रघास्यान्. हवामह इति पत्नी-मुदानयति                             |   |
| 360 | TB_1.6.5.4 | भ्रातृव्य देवत्यो दक्षिणः यदाहवनीये                               |   |
| 361 | TB_1.6.5.5 | प्रत्यङ्केव वरुणपाशान्-निर्मुच्यते अऋन्कर्म कर्मकृत               |   |
| 362 | TB_1.6.5.6 | अफ्सु वै वरुणः साक्षादेव  |   |
| 363 | TB_1.6.6.1 | देवासुराः सम्यत्ता आसन्न् सोऽग्निरब्रवीत्                         |   |
| 364 | TB_1.6.6.2 | यद्ग्रयेऽनीकवते पुरोडाशमष्टाकपालं निर्वपति अग्निमेवानीक-<br>वन्तः |   |
| 365 | TB_1.6.6.3 | ते देवा मरुद्भ्यः सान्तपनेभ्यश्चरुं                               |   |
| 366 | TB_1.6.6.4 | आशिता एवाद्योपवसाम कस्य वाऽहेदम्                                  |   |
| 367 | TB_1.6.6.5 | ततो देवा अभवन्न पराऽसुराः   |   |
| 368 | TB_1.6.6.6 | न प्रयाजा इज्यन्ते नानूयाजाः                                      |   |
| 369 | TB_1.6.7.1 | यत्पत्नी गृहमेधीय-स्यारञीयात् गृहमेद्ध्येव स्यात्                 |   |
| 370 | TB_1.6.7.2 | ते देवा गृहमेधीयेनेष्ट्वा आशिता                                   |   |
| 371 | TB_1.6.7.3 | अनु वथ्सान्, वासयन्ति भ्रातृव्यायैव                               |   |
| 372 | TB_1.6.7.4 | भागधेयेनेवैन  समर्द्धयति ऋषभमाह्वयति वषद्वार                      |   |
| 373 | TB_1.6.7.5 | अथ वयं वेदाम अस्मभ्यमेव   |   |
| 374 | TB_1.6.7.6 | उद्धारं वा एतिमन्द्र उदहरत  |   |

| SNo | Panchasat  | Beginning  | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|------------|--|---|
| 375 | TB_1.6.8.1 | वैश्वदेवेन वै प्रजापतिः प्रजा                          | TB_1.6.2.1                                |
| 376 | TB_1.6.8.2 | पितृयज्ञेन सुवर्गं लोकं गमयति                          |   |
| 377 | TB_1.6.8.3 | सम्वथ्सरमेव प्रीणाति पितृभ्यो बर्,हिषद्भ्यो            |   |
| 378 | TB_1.6.8.4 | अर्द्धमासानेव प्रीणाति अभिवान्यायै दुग्धे              |   |
| 379 | TB_1.6.8.5 | एका हि पितृणाम् दक्षिणोपमन्थति                         |   |
| 380 | TB_1.6.8.6 | खाता हि देवानाम् मद्भ्यतो                              |   |
| 381 | TB_1.6.8.7 | यथ् समूलम् तत् पितृणाम्                                |   |
| 382 | TB_1.6.8.8 | षड्वा ऋतवः ऋतूनेव प्रीणाति                             | TB_1.3.10.4                               |
| 383 | TB_1.6.8.9 | मृत्युना यजमानं परि गृह्णीयात्                         |   |
| 384 | TB_1.6.9.1 | अग्नये देवेभ्यः पितृभ्यः समिद्ध्यमानायानुब्रूहीत्याह   |   |
| 385 | TB_1.6.9.2 | यदार्.षेयं वृणीत यद्धोतारम् प्रमायुको                  |   |
| 386 | TB_1.6.9.3 | यज्ञस्यैव चक्षुषी नान्तरेति प्राचीनावीती               |   |
| 387 | TB_1.6.9.4 | ऋतूनाश् संतत्यै प्रैवैभ्यः पूर्वया                     |   |
| 388 | TB_1.6.9.5 | आ स्वधेत्या-श्रावयति अस्तु स्वधेति                     |   |
| 389 | TB_1.6.9.6 | ये वै यज्वानः ते                                       |   |
| 390 | TB_1.6.9.7 | अथो यथाऽग्निश् स्विष्टकृतं यजित                        |   |
| 391 | TB_1.6.9.8 | आहवनीय-मुपतिष्ठन्ते न्येवास्मै तद्भुवते यथ्सत्याहवनीये |   |

| SNo | Panchasat   | Beginning                                   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|-------------|---|---|
| 392 | I           | प्राणो वै सुसन्दक् प्राणमेवात्मन्-द्धते     |   |
| 393 |             | अथो तर्पयत्येव तृप्यति प्रजया               |   |
| 394 |             | ऋतूनेव प्रीणाति न पत्न्यन्वास्ते            |   |
| 395 |             | प्रतिपूरुषमेककपालान् निर्वपति जाता एव       |   |
| 396 | TB_1.6.10.2 | तद्धि रुद्रस्य भागधेयम् इमां                |   |
| 397 | TB_1.6.10.3 | न ग्राम्यान् पशून्. हिनस्ति                 |   |
| 398 | TB_1.6.10.4 | एष ते रुद्र भागः                            |   |
| 399 | TB_1.6.10.5 | त्र्यम्बकं यजामह इत्याह मृत्योर्            |   |
| 400 | TB_1.7.1.1  | एतद्-ब्राह्मणान्येव पञ्च हवीश्षि अथेन्द्राय |   |
| 401 | TB_1.7.1.2  | द्वादशगवश् सीरं दक्षिणा समृद्ध्यै           |   |
| 402 | TB_1.7.1.3  | सोऽब्रवीत् क इदं तुरीयमिति                  |   |
| 403 | TB_1.7.1.4  | वहिनी धेनुर्-दक्षिणा यद्-वहिनी तेनाग्नेयी   |   |
| 404 | TB_1.7.1.5  | तश् सृष्टश् रक्षाश्स्यजिघाश्सन्न् स         |   |
| 405 | TB_1.7.1.6  | इन्द्रो वृत्रश् हत्वा असुरान्               | TB_1.3.10.1                               |
| 406 | TB_1.7.1.7  | न दिवा न नक्तमिति                           |   |
| 407 | TB_1.7.1.8  | स एतानपामार्गानजनयत् तानजुहोत् तैर्वै       |   |
| 408 | TB_1.7.1.9  | स्वकृत इरिणे जुहोति प्रदरे                  | TB_1.6.1.3                                |

| SNo | Panchasat  | Beginning   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|------------|---|---|
| 409 | TB_1.7.2.1 | धात्रे पुरोडाशं द्वादशकपालं निर्वपति              |   |
| 410 | TB_1.7.2.2 | वैष्णवं त्रिकपालम् वीर्यं वा                      |   |
| 411 | TB_1.7.2.3 | तेनैन्द्रः यद्वामनः तेन वैष्णवः                   |   |
| 412 | TB_1.7.2.4 | अग्निः प्रजां प्रजनयति वृद्धामिन्द्रः             |   |
| 413 | TB_1.7.2.5 | वृद्धानिन्द्रः प्रयच्छति पौष्णश्चरुर्-भवति इयं    |   |
| 414 | TB_1.7.2.6 | पवित्रं वै हिरण्यम् पुनात्येवैनम्                 |   |
| 415 | TB_1.7.3.1 | रत्निनामेतानि हवीश्षि भवन्ति एते                  |   |
| 416 | TB_1.7.3.2 | यथ् सद्यो निर्वपेत् यावतीमेकेन                    |   |
| 417 | TB_1.7.3.3 | ऐन्द्र-मेकादशकपालश्र राजन्यस्य गृहे इन्द्रियमेवाव |   |
| 418 | TB_1.7.3.4 | नैर्.ऋतं चरुं परिवृत्तयै गृहे                     |   |
| 419 | TB_1.7.3.5 | अन्नं वै मरुतः अन्नमेवाव-रुन्धे                   |   |
| 420 | TB_1.7.3.6 | अन्नं वै पूषा अन्नमेवाव                           |   |
| 421 | TB_1.7.3.7 | यन्न प्रति निर्वपेत् रत्निन                       |   |
| 422 | TB_1.7.3.8 | बार् हस्पत्ये मैत्रमपि द्धाति ब्रह्म              |   |
| 423 | TB_1.7.4.1 | देवसुवामेतानि हवीश्षि भवन्ति एतावन्तो             |   |
| 424 | TB_1.7.4.2 | वरुणो धर्मपतीनाम् एतदेव सर्वं                     |   |
| 425 | TB_1.7.4.3 | राज्यमेवास्मिन् प्रति द्धाति स्वां                |   |

| SNo | Panchasat  | Beginning   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|------------|---|---|
| 426 | TB_1.7.4.4 | अरातिमेवैनं तारयति असूषुदन्त यज्ञिया              |   |
| 427 | TB_1.7.5.1 | अर्थेतः स्थेति जुहोति आहुत्यैवैना                 |   |
| 428 | TB_1.7.5.2 | ऊर्मिमन्तमेवैनं करोति वृषसेनोऽसीत्याह सेनामेवास्य |   |
| 429 | TB_1.7.5.3 | राष्ट्रमेव वर्चस्व्यकः सूर्यत्वचसः स्थेत्याह      |   |
| 430 | TB_1.7.5.4 | वाशाः स्थेत्याह राष्ट्रमेव वश्यकः                 |   |
| 431 | TB_1.7.5.5 | राष्ट्रमेव तेजस्व्यकः अपामोषधीनाः रसः             |   |
| 432 | TB_1.7.6.1 | देवीरापः सं मधुमतीर्-मधुमतीभिः सृज्यद्धमित्याह    |   |
| 433 | TB_1.7.6.2 | शतमानं भवति शतायुः पुरुषः                         |   |
| 434 | TB_1.7.6.3 | सोमस्य ह्येतद्दात्रम् शुक्रा वः                   |   |
| 435 | TB_1.7.6.4 | स्वाहा राजसूयायेत्याह राजसूयाय ह्येना             |   |
| 436 | TB_1.7.6.5 | यावानेव पुरुषः तस्मिन् वीर्यं                     |   |
| 437 | TB_1.7.6.6 | अग्निरेवैनं गार् हपत्येनावति इन्द्र इन्द्रियेण    |   |
| 438 | TB_1.7.6.7 | आभ्यामेव प्रसूतो यजमानो वज्रं                     |   |
| 439 | TB_1.7.6.8 | इन्द्रस्य वज्रोऽसि वार्त्रघ्न इति                 | TB_1.3.5.2                                |
|     |            |   | TB_1.7.9.1                                |
| 440 | TB_1.7.7.1 | दिशो व्यास्थापयति दिशामभिजित्यै यदनु              |   |
| 441 | TB_1.7.7.2 | उग्रामा तिष्ठेत्याह इन्द्रियमेवाव रुन्धे          |   |

| SNo | Panchasat  | Beginning   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|------------|---|---|
| 442 | TB_1.7.7.3 | मारुत एष भवति अन्नं                               |   |
| 443 | TB_1.7.7.4 | स राष्ट्रं नाभवत् स                               |   |
| 444 | TB_1.7.7.5 | षद्वरस्ता-दिभषेकस्य जुहोति षडुपरिष्टात् द्वादश    |   |
| 445 | TB_1.7.8.1 | सोमस्य त्विषिरसि तवेव मे                          |   |
| 446 | TB_1.7.8.2 | शतायुः पुरुषः शतेन्द्रियः आयुष्येवेन्द्रिये       | TB_1.8.6.5                                |
|     |            |   | TB_3.8.20.3                               |
| 447 | TB_1.7.8.3 | सोमो राजा वरुणः देवा                              |   |
| 448 | TB_1.7.8.4 | स्वयैवैनं देवतयाऽभिषिञ्चति अग्ने-स्तेजसेत्याह तेज |   |
| 449 | TB_1.7.8.5 | ओज एवास्मिन् द्धाति क्षत्राणां                    |   |
| 450 | TB_1.7.8.6 | उदङ्परेत्याग्नीद्धे जुहोति एषा वै                 |   |
| 451 | TB_1.7.8.7 | प्रजापते न त्वदेतान्यन्य इति                      |   |
| 452 | TB_1.7.9.1 | इन्द्रस्य वज्रोऽसि वार्त्रघ्न इति                 | TB_1.3.5.2                                |
|     |            |   | TB_1.7.6.8                                |
| 453 | TB_1.7.9.2 | षड्वा ऋतवः ऋतुभिरेवैनं युनिक्त                    |   |
| 454 | TB_1.7.9.3 | मरुतां प्रसवे जेषमित्याह मरुद्धिरेव               |   |
| 455 | TB_1.7.9.4 | इन्द्रियमेव वीर्यमात्मन्-धत्ते पशूनां मन्युरसि    |   |
| 456 | TB_1.7.9.5 | नमो मात्रे पृथिव्या इत्याहाहिश                    |   |

| SNo | Panchasat  | Beginning   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|------------|---|---|
| 457 | TD 1 7 0 6 | त्रयोऽश्वा भवन्ति रथश्चतुर्थः तस्मा-चतुर्जुहोति             |   |
| 457 |            | मित्रोऽसि वरुणोऽसीत्याह मैत्रं वा                           |   |
| 459 |            | वैश्वदेव्यो वै प्रजाः ता                                    |   |
| 460 |            | ब्रह्मा3न्त्वश्र राजन्-ब्रह्माऽसीन्द्रोऽसि सत्यौजा इत्याह   |   |
| 461 |            | मित्रोऽसि सुरोव इत्याह जगती-मेवैतेनाभिव्याहरति              |   |
| 462 |            | नैनश् सत्यानृते उदिते हिश्स्तः                              |   |
| 463 |            | ओदनमुद्भुवते परमेष्ठी वा एषः                                |   |
| 464 | TB_1.8.1.1 | वरुणस्य सुषुवाणस्य दशधेन्द्रियं वीर्यं                      |   |
| 465 | TB_1.8.1.2 | सोमेन राज्ञाऽष्टमे त्वष्ट्रा रूपेण                          |   |
| 466 | TB_1.8.2.1 | जामि वा एतत् कुर्वन्ति                                      |   |
| 467 | TB_1.8.2.2 | अन्नं विराट् विराजैवान्नाद्यमव रुन्धे                       |   |
| 468 | TB_1.8.2.3 | प्रजापतेराह्ये प्राकाशावद्धर्यवे ददाति प्रकाश-मेवैनं        |   |
| 469 | TB_1.8.2.4 | द्वादश-पष्टौहीर्-ब्रह्मणे आयुरेवाव-रुन्धे वशां मैत्रावरुणाय |   |
| 470 | TB_1.8.2.5 | अनङ्घाह-मग्नीधे विह्नर्वा अनङ्घान् विह्नरग्नीत्             |   |
| 471 | TB_1.8.3.1 | ईश्वरो वा एष दिशोऽनून्-मदितोः                               |   |
| 472 | TB_1.8.3.2 | आदित्यां मल्.हां गर्भिणीमा लभते                             |   |
| 473 | TB_1.8.3.3 | इन्द्रियं वै गर्भः राष्ट्र-मेवेन्द्रियाव्यकः                |   |

| SNo | Panchasat  | Beginning   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|------------|---|---|
| 474 | TB_1.8.3.4 | यदिश्वभ्यां पूष्णे पुरोडाशं द्वादशकपालं                       |   |
| 475 | TB_1.8.4.1 | आग्नेय-मष्टाकपालं निर्वपति तस्मा-च्छिशिरे कुरुपञ्चालाः        |   |
| 476 | TB_1.8.4.2 | रूपाण्येव तेन कुर्वते वैश्वानरं                               |   |
| 477 | TB_1.8.4.3 | मासिमास्येतानि हवीश्षि निरुप्याणीत्याहुः तेनैवर्तून्-प्रयुङ्क |   |
| 478 | TB_1.8.5.1 | इन्द्रस्य सुषुवाणस्य दशधेन्द्रियं वीर्यं                      |   |
| 479 | TB_1.8.5.2 | स शार्दूलः यत्-कर्णयोः स                                      |   |
| 480 | TB_1.8.5.3 | त्विषिमेवाव रुन्धे त्रयो ग्रहाः                               |   |
| 481 | TB_1.8.5.4 | यथ्-सीसम् न स्त्री न  |   |
| 482 | TB_1.8.5.5 | तिस्रो हि रात्रीः क्रीतः                                      |   |
| 483 | TB_1.8.5.6 | अनिरुक्तः प्रजापतिः प्रजापतेराह्यै एकयर्चा                    |   |
| 484 | TB_1.8.6.1 | यत्-त्रिषु यूपेष्वा-लभेत बहिर्द्धा ऽस्मादिन्द्रियं            |   |
| 485 | TB_1.8.6.2 | ब्राह्मणं परिक्रीणीया-दुच्छेषणस्य पातारम् ब्राह्मणो           |   |
| 486 | TB_1.8.6.3 | इन्द्रिये एवास्मै समीची द्याति                                |   |
| 487 | TB_1.8.6.4 | उत वा एषाऽश्वश् सूते  |   |
| 488 | TB_1.8.6.5 | शतायुः पुरुषः शतेन्द्रियः आयुष्येवेन्द्रिये                   | TB_1.7.8.2                                |
|     |            |   | TB_3.8.20.3                               |
| 489 | TB_1.8.6.6 | तन्निद्धाति प्रतिष्ठित्यै पितृन्. वा                          |   |

| SNo | Panchasat   | Beginning  | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|-------------|--|---|
| 490 | TB_1.8.7.1  | अग्निष्टोममग्र आहरति यज्ञमुखंँवा                         |   |
| 491 | TB_1.8.7.2  | एतावान्, वै यज्ञः यावान्-पवमानाः                         |   |
| 492 | TB_1.8.8.1  | उप त्वा जामयो गिर  |   |
| 493 | TB_1.8.8.2  | यदाह पवस्व वाचो अग्रिय                                   |   |
| 494 | TB_1.8.8.3  | तस्मादुद्वतीर्-भवन्ति सौर्यनुष्टु-गुत्तमा भवति सुवर्गस्य |   |
| 495 | TB_1.8.8.4  | तैरेव सवान्नैति यानि देवराजानाः                          |   |
| 496 | TB_1.8.8.5  | विड्वा एकविश्शः राष्ट्रश् सप्तद्शः                       |   |
| 497 | TB_1.8.9.1  | इयं वै रजता असौ  |   |
| 498 | TB_1.8.10.1 | <b>,</b>   |   |
| 499 | TB_1.8.10.2 | नानैवाहोरात्रयोः प्रति तिष्ठति पौर्णमास्यां              |   |
| 500 | TB_1.8.10.3 | अपशव्यो द्विरात्र इत्याहुः द्वे                          |   |
| 501 | TB_2.1.1.1  | अङ्गिरसो वै सत्रमासत तेषां                               |   |
| 502 | TB_2.1.1.2  | तासां जग्ध्वा रुप्यन्त्यैत् तेऽब्रुवन्न्                 |   |
| 503 | TB_2.1.1.3  | स्वदन्तेऽस्मा ओषधयः ते वथ्समु-पावासृजन्न्                |   |
| 504 | TB_2.1.2.1  | प्रजापति-रग्नि-मसृजत तं प्रजा अन्वसृज्यन्त               |   |
| 505 | TB_2.1.2.2  | तद्-घृतमभवत् तस्माद्यस्य दक्षिणतः केशा                   |   |
| 506 | TB_2.1.2.3  | वसीय एव चेतयते तं  |   |

| SNo | Panchasat   | Beginning   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|-------------|---|---|
| 507 | TB_2.1.2.4  | भोगायैवास्य हुतं भवति तस्या                                 |   |
| 508 | TB_2.1.2.5  | सोऽग्नि-रिबभेत् आहुतीभिर्वे माऽऽमोतीति स                    |   |
| 509 | TB_2.1.2.6  | तस्मादग्निहोत्र-मुच्यते तद्भूयमान-मादित्योऽब्रवीत् मा हौषीः |   |
| 510 | TB_2.1.2.7  | आग्नेयी वै रात्रिः ऐन्द्रमहः                                |   |
| 511 | TB_2.1.2.8  | प्रैव तेन जायते उदिते                                       |   |
| 512 | TB_2.1.2.9  | प्रैव जायते अथो यथा   |   |
| 513 | TB_2.1.2.10 | उद्यन्तं वावादित्य-मग्निरनु समारोहति तस्माद्भूम             |   |
| 514 | TB_2.1.2.11 | उभाभ्यां प्रातः न देवताभ्यः                                 |   |
| 515 | TB_2.1.2.12 | तूष्णीमुत्तरा-माहुतिं जुहोति मिथुनत्वाय प्रजात्यै           |   |
| 516 | TB_2.1.3.1  | रुद्रो वा एषः यद्ग्निः                                      |   |
| 517 | TB_2.1.3.2  | घर्मो वा एषोऽशान्तः अहरहः                                   |   |
| 518 | TB_2.1.3.3  | तत्-पशव्यम् यज्जुहोति तद्ब्रह्मवर्चिस उभयमेवाकः             |   |
| 519 | TB_2.1.3.4  | पर्याग्न करोति रक्षसा-मपहत्यै त्रिः                         |   |
| 520 | TB_2.1.3.5  | पत्नी १ शुचा ऽर्पयेत् उदीचीन-मुद्धासयति                     |   |
| 521 | TB_2.1.3.6  | पशूनेवा-वरुन्धे सर्वान्-पूर्णानुन्नयति सर्वे हि             |   |
| 522 | TB_2.1.3.7  | अन्यस्मै प्रयच्छति तादृगेव तत्                              |   |
| 523 | TB_2.1.3.8  | यदेनश समयच्छत् तथ्समिधः समित्त्वम्                          |   |

| SNo | Panchasat  | Beginning  | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|------------|--|---|
| 524 | TB_2.1.3.9 | यद्-द्वे समिधावादद्ध्यात् भ्रातृव्यमस्मै जनयेत्  |   |
| 525 | TB_2.1.4.1 | उत्तरावतीं वै देवा आहुतिमजुहवुः                  |   |
| 526 | TB_2.1.4.2 | यस्यैवं जुह्नति भवत्येव यं                       |   |
| 527 | TB_2.1.4.3 | हुत्वोप सादयत्यजामित्वाय अथो व्यावृत्त्यै        |   |
| 528 | TB_2.1.4.4 | यज्ञस्थाणु-मृच्छेत् अतिहाय पूर्वामाहुतिं जुहोति  |   |
| 529 | TB_2.1.4.5 | द्विर्जुहोति अथ क द्वे                           |   |
| 530 | TB_2.1.4.6 | षट्थ् संपद्यन्ते षड्वा ऋतवः                      |   |
| 531 | TB_2.1.4.7 | यिन्नमार्ष्टि तदोषधीनाम् यद्वितीयम् तत्-पितृणाम् |   |
| 532 | TB_2.1.4.8 | आत्मनो गोपीथाय निर्णेनेक्ति शुद्ध्यै             |   |
| 533 | TB_2.1.4.9 | ब्रह्मवर्चसस्य समिद्ध्यै न बर.हिरनु              |   |
| 534 | TB_2.1.5.1 | ब्रह्मवादिनो वदन्ति अग्निहोत्रप्रायणा यज्ञाः     |   |
| 535 | TB_2.1.5.2 | वनस्पतय इद्ध्मः दिशः परिधयः                      |   |
| 536 | TB_2.1.5.3 | अहरेव तेन दक्षिण्यं कुरुते                       |   |
| 537 | TB_2.1.5.4 | यजमानस्या-पराभावाय यत्-प्रातः अह्न एव            |   |
| 538 | TB_2.1.5.5 | इमामेव पूर्वया दुहे अमूमुत्तरया                  |   |
| 539 | TB_2.1.5.6 | पशुमानेव भवति द्द्ग्रेन्द्रिय कामस्य             |   |
| 540 | TB_2.1.5.7 | चतुरुन्नयति चतुरक्षरः रथन्तरम् रथन्तरस्यैष       |   |

| SNo | Panchasat   | Beginning   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|-------------|---|---|
| 541 | TB_2.1.5.8  | यो वा अग्निहोत्रस्योपसदो वेद                          |   |
| 542 | TB_2.1.5.9  | य एवं वेद उपैन-मुपसदो                                 |   |
| 543 | TB_2.1.5.10 | य एवं वेद तस्य  |   |
| 544 | TB_2.1.5.11 | तानेवोभयाः स्तर्पयति त एनं                            |   |
| 545 | TB_2.1.6.1  | प्रजापति-रकामय-तात्मन् वन्मे जायेतेति सोऽजुहोत्       |   |
| 546 | TB_2.1.6.2  | चक्षुष आदित्यः तेषाश हुतादजायत                        |   |
| 547 | TB_2.1.6.3  | तनुवा अहमिति वायुः चक्षुषोऽहमित्यादित्यः              |   |
| 548 | TB_2.1.6.4  | य एवं वेद तौ  |   |
| 549 | TB_2.1.6.5  | प्रजापतिमभि पर्यावर्तत स मृत्यो-रिबभेत्               |   |
| 550 | TB_2.1.7.1  | रौद्रं गवि वायव्य-मुपसृष्टम् आश्विनं                  |   |
| 551 | TB_2.1.8.1  | दक्षिणत उप सृजति पितृलोकमेव                           |   |
| 552 | TB_2.1.8.2  | न सं मृशति पापवस्यसस्य                                |   |
| 553 | TB_2.1.8.3  | ऐन्द्राग्नमुप सादितम् सर्वाभ्यो वा                    |   |
| 554 | TB_2.1.9.1  | त्रयो वै प्रैयमेधा आसन्                               |   |
| 555 | TB_2.1.9.2  | यश्च यजुषा ऽजुहोद्यश्च तूष्णीम्                       |   |
| 556 | TB_2.1.9.3  | यस्याग्निहोत्रमहुतश् सूर्योऽभ्युदेति यद्-यन्ते स्यात् |   |
| 557 | TB_2.1.10.1 | यदग्नि-मुद्धरित वसवस्तर्द्धाग्निः तस्मिन्. यस्य       |   |

| SNo | Panchasat   | Beginning  | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|-------------|--|---|
| 558 |             | तस्मिन्. यस्य तथाविधे जुह्वति                                      |   |
| 559 |             | अङ्गारा भवन्ति तेभ्योऽङ्गारेभ्योऽर्चिरुदेति प्रजापतिस्तर्ह्याग्निः |   |
| 560 | TB_2.1.11.1 | ऋतं त्वा सत्येन परिषिञ्चामीति                                      |   |
| 561 | TB_2.2.1.1  | प्रजापतिरकामयत प्रजाः सृजेयेति स                                   |   |
| 562 | TB_2.2.1.2  | प्रजापतिरेव भूत्वा प्र जायते                                       |   |
| 563 | TB_2.2.1.3  | दर्भस्तम्बे जुहोति एतस्माद्वै योनेः                                |   |
| 564 | TB_2.2.1.4  | सोऽरण्यं परेत्य दर्भस्तम्ब-मुद्गृतथ्य ब्राह्मणं                    |   |
| 565 | TB_2.2.1.5  | अग्निवान्. वै दर्भस्तम्बः अग्निवत्येव                              |   |
| 566 | TB_2.2.1.6  | अग्निमाद्धानो दशहोत्रा ऽरणिमवदद्ध्यात् प्रजातमेवैन-माधत्ते         |   |
| 567 | TB_2.2.1.7  | अभिचरन्-दशहोतारं जुहुयात् नव वै                                    |   |
| 568 | TB_2.2.2.1  | प्रजापितरकामयत दर्.शपूर्णमासौ सृजेयेति स                           |   |
| 569 | TB_2.2.2.2  | ग्रहो भवति दर्,शपूर्णमासयोः सृष्टयोर्द्धृत्यै                      |   |
| 570 | TB_2.2.2.3  | पञ्चहोतारं मनसाऽनुद्रुत्या हवनीये जुहुयात्                         |   |
| 571 | TB_2.2.2.4  | तद्ग्रहस्य ग्रहत्वम् पशुबन्धेन यक्ष्यमाणः                          |   |
| 572 | TB_2.2.2.5  | सोऽस्माथ् सृष्टोऽपाऋामत् तं ग्रहेणागृह्णात्                        |   |
| 573 | TB_2.2.2.6  | यथ् सभांराः ततो वै   |   |
| 574 | TB_2.2.3.1  | प्रजापति-रकामयत प्र जायेयेति स                                     |   |

| SNo | Panchasat  | Beginning   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|------------|---|---|
| 575 | TB_2.2.3.2 | तं पूर्वपक्षे याजयेत् वसीयानेव                        |   |
| 576 | TB_2.2.3.3 | प्रजाः पराव इमे लोकाः                                 |   |
| 577 | TB_2.2.3.4 | ते तपोऽतप्यन्त त आत्मन्निन्द्र-मपश्यन्न्              |   |
| 578 | TB_2.2.3.5 | तं चतुर्,होत्रा प्राजनयन् यः                          |   |
| 579 | TB_2.2.3.6 | त आदित्या एतं पञ्चहोतार-मपश्यन्                       |   |
| 580 | TB_2.2.3.7 | क स्थ क वः  |   |
| 581 | TB_2.2.4.1 | प्रजापति-रकामयत प्रजायेयेति स एतं                     |   |
| 582 | TB_2.2.4.2 | असृक्षि वा इमिमति तस्य                                |   |
| 583 | TB_2.2.4.3 | सोऽन्तरिक्ष-मसृजत चातुर्मास्यानि सामानि स             |   |
| 584 | TB_2.2.4.4 | प्र प्रजया पशुभिर्-मिथुनैर्-जायते स                   |   |
| 585 | TB_2.2.4.5 | तद्-दुर्वर्णं १ हिरण्यमभवत् तद्-दुर्वर्णस्य हिरण्यस्य |   |
| 586 | TB_2.2.4.6 | सुवर्ण आत्मना भवति दुर्वर्णोऽस्य                      |   |
| 587 | TB_2.2.4.7 | सप्तदशेन प्राजायत य एवं                               |   |
| 588 | TB_2.2.5.1 | देवा वै वरुणमयाजयन्न स                                |   |
| 589 | TB_2.2.5.2 | राजा त्वा वरुणो नयतु                                  |   |
| 590 | TB_2.2.5.3 | वारुणो वा अश्वः स्वयैवैनं                             |   |
| 591 | TB_2.2.5.4 | अनयैवैनत्-प्रति गृह्णाति वैश्वानर्यार्चा रथं          |   |

| SNo | Panchasat  | Beginning  | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|------------|--|---|
| 592 | TB_2.2.5.5 | यद्वै शिवम् तन्मयः आत्मन                             |   |
| 593 | TB_2.2.5.6 | कामो हि दाता कामः                                    |   |
| 594 | TB_2.2.6.1 | अन्तो वा एष यज्ञस्य                                  |   |
| 595 | TB_2.2.6.2 | अन्नमेवाव-रुन्धते मनसा प्रस्तौति मनसोद्गायति         |   |
| 596 | TB_2.2.6.3 | चतुर्,होतॄन्, होता व्याचष्टे स्तुतमनुशश्सिति         |   |
| 597 | TB_2.2.6.4 | तदेनं प्रकाशं गतम् प्रकाशं                           |   |
| 598 | TB_2.2.7.1 | प्रजापतिः प्रजा असृजत ताः                            |   |
| 599 | TB_2.2.7.2 | मित्रमेव भवतः प्रजापतिर् देवासुरानसृजत               |   |
| 600 | TB_2.2.7.3 | य एवं वेद अभि  |   |
| 601 | TB_2.2.7.4 | तस्य वा इयं क्रृप्तिः                                |   |
| 602 | TB_2.2.8.1 | देवा वै चतुर्,होतृभिर्-यज्ञमतन्वत ते                 |   |
| 603 | TB_2.2.8.2 | ऋजुधैवैनममुं लोकं गमयति चतुर्होत्रा                  |   |
| 604 | TB_2.2.8.3 | इन्द्रियमेवात्मन्-धत्ते यो वै चतुर्,होतॄ-ननुसवनं     |   |
| 605 | TB_2.2.8.4 | तृप्यति प्रजया पशुभिः उपैनः                          | TB_3.12.5.1                               |
| 606 | TB_2.2.8.5 | इन्द्रः सप्तहोत्रा प्रजापतिर्-दशहोत्रा तेषाः         |   |
| 607 | TB_2.2.8.6 | आप्रीभिरामुवन्न् तदाप्रीणामाप्रित्वम् तमघ्नन्न् तस्य |   |
| 608 | TB_2.2.8.7 | तमवधिष्म पुनरिमश् सुवामहा इति                        |   |

| SNo | Panchasat   | Beginning  | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|-------------|--|---|
| 609 | TB_2.2.8.8  | सर्वमायुरेति सोमो वै यशः   |   |
| 610 | TB_2.2.9.1  | इदं वा अग्रे नैव   |   |
| 611 | TB_2.2.9.2  | तस्मात्-तेपानाज्ज्योति-रजायत तद्-भूयोऽतप्यत तस्मात्-<br>तेपानादर्चि-रजायत तद्-भूयोऽतप्यत |   |
| 612 | TB_2.2.9.3  | स समुद्रोऽभवत् तस्माथ्-समुद्रस्य न   |   |
| 613 | TB_2.2.9.4  | स कस्मा अज्ञि यद्-यस्या  |   |
| 614 | TB_2.2.9.5  | य एवं वेद नास्य  |   |
| 615 | TB_2.2.9.6  | तेभ्यो मृन्मये पात्रेऽन्नमदुहत् याऽस्य   |   |
| 616 | TB_2.2.9.7  | ताभ्यो दारुमये पात्रे पयोऽदुहत   |   |
| 617 | TB_2.2.9.8  | तामपाहत सोऽहोरात्रयोः सन्धि-रभवत् सोऽकामयत   |   |
| 618 | TB_2.2.9.9  | एते वै प्रजापतेर्दोहाः य   |   |
| 619 | TB_2.2.9.10 | असतोऽधि मनोऽसृज्यत मनः प्रजापति-मसृजत  |   |
| 620 | _           | प्रजापति-रिन्द्रमसृज-तानुजावरं देवानाम् तं प्राहिणोत्                                    |   |
| 621 |             | यदस्मिन्नादित्ये तदेनमब्रवीत् एतन्मे प्रयच्छ   |   |
| 622 |             | विदुरेनं नाम्ना तदस्मै रुक्मं  |   |
| 623 |             | चन्द्रवानेव भवति तं देवा   |   |
| 624 | TB_2.2.10.5 | अयं वा इदं परमोऽभूदिति   |   |

| SNo | Panchasat   | Beginning   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|-------------|---|---|
| 625 |             | साद्ध्याः पराञ्चम् य एवं                                    |   |
| 626 |             | पश्चात्-पर्यायन्न् स पश्चात्-पर्यवर्तयत ता                  |   |
| 627 | TB_2.2.10.8 | मुखमुत्तरतः ऊर्द्धा उदायन् स                                |   |
| 628 | TB_2.2.11.1 | प्रजापति-रकामयत बहोर्भूयान्थ्-स्यामिति स एतं                |   |
| 629 | TB_2.2.11.2 | तस्य प्रयुक्तीन्द्रो ऽजायत यः                               |   |
| 630 | TB_2.2.11.3 | पशुमानेव भवति सोऽकामयतर्तवो मे                              |   |
| 631 | TB_2.2.11.4 | स षह्वोतुः सप्तहोतारं निरमिमीत                              |   |
| 632 | TB_2.2.11.5 | पद्भिर्मुखेन ते देवाः पशून्.                                |   |
| 633 | TB_2.2.11.6 | यदिदं किञ्च य एवं   |   |
| 634 | TB_2.3.1.1  | ब्रह्मवादिनो वदन्ति किं चतुर्.होतृणां                       |   |
| 635 | TB_2.3.1.2  | प्रजापतिर्-दशहोता य एवं चतुर्.होतृणा-मृद्धिं                |   |
| 636 | TB_2.3.1.3  | प्रत्येव तिष्ठति ब्रह्मवादिनो वदन्ति                        |   |
| 637 | TB_2.3.2.1  | दक्षिणां प्रतिग्रहीष्यन्थ्-सप्तदश कृत्वोऽपान्यात् आत्मानमेव |   |
| 638 | TB_2.3.2.2  | प्राणानेवास्योपदासयति यद्येनं पुनरुप शिक्षेयुः              |   |
| 639 | TB_2.3.2.3  | क्रृता अस्मा ऋतव आयन्ति                                     |   |
| 640 | TB_2.3.2.4  | साम्नोऽधि यजूश्ब्यसृजत यजुभ्योऽधि विष्णुम्                  |   |
| 641 | TB_2.3.2.5  | तिदन्द्रं यश आर्च्छत् तदेनं                                 |   |

| SNo | Panchasat  | Beginning  | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|------------|--|---|
| 642 | TB_2.3.3.1 | यो वा अविद्वान्-निवर्तयते विशीर्.षा                                |   |
| 643 | TB_2.3.3.2 | पृथिवी न्यवर्तयत सौषधीभिर्-वनस्पतिभि-रपुष्यत् वायुर्न्यव-<br>र्तयत |   |
| 644 | TB_2.3.4.1 | तस्य वा अग्नेर्. हिरण्यं   |   |
| 645 | TB_2.3.4.2 | तदेतेनैव प्रत्यगृह्णात् तेन वै                                     | TB_2.3.4.6                                |
| 646 | TB_2.3.4.3 | चतुर्थमिन्द्रियस्यात्मन्-नुपाधत्ते य एवं विद्वान्                  |   |
| 647 | TB_2.3.4.4 | अथ योऽविद्वान् प्रतिगृह्णाति पञ्चममस्येन्द्रियस्याप                |   |
| 648 | TB_2.3.4.5 | तस्य वै मनोस्तल्पं प्रतिजग्रहुषः                                   |   |
| 649 | TB_2.3.4.6 | तदेतेनैव प्रत्यगृह्णात् तेन वै                                     | TB_2.3.4.2                                |
| 650 | TB_2.3.5.1 | ब्रह्मवादिनो वदन्ति यद्-दशहोतारः सत्रमासत                          |   |
| 651 | TB_2.3.5.2 | तेनौषधी-रसृजन्त यत् पञ्चहोतारः सत्रमासत                            |   |
| 652 | TB_2.3.5.3 | केनर्तून-कल्पयन्तेति धात्रा वै ते                                  |   |
| 653 | TB_2.3.5.4 | एते वै देवा गृहपतयः  |   |
| 654 | TB_2.3.5.5 | यद्वा इदं किं च  | TB_3.2.2.4                                |
| 655 | TB_2.3.5.6 | सर्वा दिशोऽभिजयति प्रजापतिर्वे दशहोतृणाः                           |   |
| 656 | TB_2.3.6.1 | प्रजापतिः प्रजाः सृष्ट्वा व्यस्नश्सत                               |   |
| 657 | TB_2.3.6.2 | ते प्रत्यशृण्वन्न् ते दर्.शपूर्णमासाभ्यामेव                        |   |

| SNo | Panchasat  | Beginning   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|------------|---|---|
| 658 | TB_2.3.6.3 | पञ्चर्त्विजः षद्गृत्वोऽह्रयत् ऋतवः प्रत्यशृण्वन्न्                        |   |
| 659 | TB_2.3.6.4 | ता उपौहन्थ्-सप्तशीर्.षण्यान्-प्राणान् तस्माथ्-सौम्यस्याद्धरस्य<br>यज्ञतोः |   |
| 660 | TB_2.3.7.1 | प्रजापतिः पुरुष-मसृजत सोऽग्निरब्रवीत् ममाय-मन्नमस्त्विति                  |   |
| 661 | TB_2.3.7.2 | कुसिन्धं चात्मनः स्पृणोति आदित्यस्य                                       |   |
| 662 | TB_2.3.7.3 | तानि चात्मनः स्पृणोति आदित्यस्य   |   |
| 663 | TB_2.3.7.4 | समिथ् सप्तमी सप्तहोतारमेव तद्-यज्ञतु-मामोति                               |   |
| 664 | TB_2.3.8.1 | अपक्रामत गर्भिण्यः इस् ओन्ल्य्  |   |
| 665 | TB_2.3.8.2 | तेनासुनाऽसुरानसृजत तद्सुराणा-मसुरत्वम् य एवमसुराणा-<br>मसुरत्वं           |   |
| 666 | TB_2.3.8.3 | यन्त्यस्य पितरो हवम् स  |   |
| 667 | TB_2.3.9.1 | यथास्थानं गर्भिण्यः इस् ऒन्ल्य्   |   |
| 668 | TB_2.3.9.2 | यतोऽयं पवते यद्भि पवते  |   |
| 669 | TB_2.3.9.3 | अस्याः पवते इमामभि पवते   |   |
| 670 | TB_2.3.9.4 | आदित्यमभि पवते आदित्यमभि सं   |   |
| 671 | TB_2.3.9.5 | तस्मात्-पुरस्ता-द्वान्तम् सर्वाः प्रजाः प्रति                             |   |
| 672 | TB_2.3.9.6 | सर्वा दिशोऽनु विवाति सर्वा  |   |

| SNo | Panchasat   | Beginning  | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|-------------|--|---|
| 673 | TB_2.3.9.7  | अथ यदुत्तरतो वाति सवितैव                         |   |
| 674 | TB_2.3.9.8  | य एवास्य दक्षिणतः पाप्मानः                       |   |
| 675 | _           | उत्तरत इतरान् पाप्मनः सचन्ते                     |   |
| 676 | TB_2.3.10.1 | प्रजापतिः सोमश्राजानमसृजत तं                     |   |
| 677 | TB_2.3.10.2 | प्र त्वा पद्ये सोमं                              |   |
| 678 | TB_2.3.10.3 | आऽस्यार्द्वं वव्राज ताश् होदीक्ष्योवाच           |   |
| 679 | TB_2.3.10.4 | यं वा कामयेत प्रियः                              |   |
| 680 | TB_2.3.11.1 | ब्रह्मात्मन्-वदसृजत तदकामयत समात्मना पद्येयेति   |   |
| 681 | TB_2.3.11.2 | आत्मन्-नात्मन्-नित्यामन्त्रयत तस्मै सप्तमश् हूतः |   |
| 682 | TB_2.3.11.3 | षह्रुतो ह वै नामैषः                              |   |
| 683 | TB_2.3.11.4 | परोक्षप्रिया इव हि देवाः                         |   |
| 684 | TB_2.4.1.1  | जुष्टो दमूना अतिथिर्दुरोणे इमं                   |   |
| 685 | TB_2.4.1.2  | ताश्स्त्वं वृत्रहञ्जहि वस्वस्मभ्य-माभर अग्ने     |   |
| 686 | TB_2.4.1.3  | अपापाचो अभिभूते नुदस्व अपोदीचो                   |   |
| 687 | TB_2.4.1.4  | हव्यवाह-मभिमातिषाऽहम् रक्षोहणं पृतनासु जिष्णुम्  |   |
| 688 | TB_2.4.1.5  | मन्ये त्वा जातवेदसम् स                           |   |
| 689 | TB_2.4.1.6  | सो अस्माः अभयतमेन नेषत्                          |   |

| SNo | Panchasat   | Beginning                             | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|-------------|---------------------------------------|---|
| 690 | TB_2.4.1.7  | प्रतिष्म देव रीषतः तिपष्ठैरजरो        |   |
| 691 | TB_2.4.1.8  | आ सिन्धोरा परावतः दक्षं               |   |
| 692 | TB_2.4.1.9  | प्रण आयूश्षि तारिषत् त्वमग्ने         |   |
| 693 | TB_2.4.1.10 | स इदं प्रति पप्रथे                    |   |
| 694 | TB_2.4.1.11 | मन्युर्भगो मन्युरेवास देवः मन्युर्.   |   |
| 695 | TB_2.4.2.1  | चक्षुषो हेते मनसो हेते                |   |
| 696 | TB_2.4.2.2  | तन् मृत्युर् निर्.ऋत्या सम्विदानः     |   |
| 697 | TB_2.4.2.3  | अपनह्यामि ते बाहू अपनह्याम्यास्यम्    |   |
| 698 | TB_2.4.2.4  | वषद्कारेण वज्रेण कृत्याः हन्मि        |   |
| 699 | TB_2.4.2.5  | गिरा यज्ञ्स्य साधनम् श्रुष्टीवानं     |   |
| 700 | TB_2.4.2.6  | तिग्मशृङ्गो वृषभः शोशुचानः प्रत्नश    |   |
| 701 | TB_2.4.2.7  | वयश सोम व्रते तव                      |   |
| 702 | TB_2.4.2.8  | सा नो देवी सुहवा                      |   |
| 703 | TB_2.4.2.9  | पर्वत इवा विचाचिलः इन्द्र             |   |
| 704 | TB_2.4.3.1  | जुष्टी नरो ब्रह्मणा वः                |   |
| 705 | TB_2.4.3.2  | मा त्वत्क्षेत्रा-ण्यरणानि गन्म वृञ्जे |   |
| 706 | TB_2.4.3.3  | इमं नो यज्ञ्ंविहवे                    |   |

| SNo | Panchasat   | Beginning  | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|-------------|--|---|
| 707 | TB_2.4.3.4  | अग्निश्च विष्णो तप उत्तमं                              |   |
| 708 | TB_2.4.3.5  | प्र यः सत्राचा मनसा                                    |   |
| 709 | TB_2.4.3.6  | होतारं चित्ररथ-मद्भरस्य यज्ञस्य यज्ञस्य                |   |
| 710 | TB_2.4.3.7  | प्रारोचयन्मनवे केतुमह्नाम् अविन्दज्ज्योतिर्-बृहते रणाय |   |
| 711 | TB_2.4.3.8  | त्वश् सोम ऋतुभिः सुऋतुर्भूः                            |   |
| 712 | TB_2.4.3.9  | अधा ते विष्णो विदुषाचिद्धयः                            |   |
| 713 | TB_2.4.3.10 | इमा धाना घृतस्रुवः हरी                                 |   |
| 714 | TB_2.4.3.11 | हरिवर्पसं गिरः आचर् षणिप्रा वृषभो                      |   |
| 715 | TB_2.4.3.12 | अरं ते सोमस्तनुवे भवाति                                |   |
| 716 | TB_2.4.3.13 | इन्द्रागिह प्रथमो यज्ञियानाम् या                       |   |
| 717 | TB_2.4.4.1  | नक्तं जाताऽस्योषधे रामे कृष्णे                         |   |
| 718 | TB_2.4.4.2  | असिक्नियस्योषधे निरितो नाशया पृषत्                     |   |
| 719 | TB_2.4.4.3  | शुनश हुवेम मघवानिमन्द्रम् अस्मिन्भरे                   |   |
| 720 | TB_2.4.4.4  | प्रोवारत मरुतो दुर्मदा इव                              |   |
| 721 | TB_2.4.4.5  | देवा भागं यथा पूर्वे                                   |   |
| 722 | TB_2.4.4.6  | सज्ञांनं नः स्वैः सज्ञांनमरणैः                         |   |
| 723 | TB_2.4.4.7  | अग्ने हिरण्यसंदृशः अदृब्धेभिः सवितः                    |   |

| SNo | Panchasat   | Beginning  | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|-------------|--|---|
| 724 | TB_2.4.4.8  | शिप्रिन् वाजानां पते शचीवस्तव                      |   |
| 725 | TB_2.4.4.9  | यजत्रा मुञ्जतेह मा यज्ञिर्वो                       |   |
| 726 | TB_2.4.4.10 | द्रुपदादिव मुञ्चतु द्रुपदादिवेन्-मुमुचानः स्विन्नः |   |
| 727 | TB_2.4.5.1  | वृषा सो अश्रुः पवते                                |   |
| 728 | TB_2.4.5.2  | तः सद्भीचीरूतयो वृष्णियानि पौश्स्यानि              |   |
| 729 | TB_2.4.5.3  | दृढान्यौघ्नादुशमान ओजः अवाभिनत्ककुभः पर्वतानाम्    |   |
| 730 | TB_2.4.5.4  | रजाश्सि चित्रा वि चरन्ति                           |   |
| 731 | TB_2.4.5.5  | अवव्ययन्नसितं देव वस्वः दविद्धतो                   |   |
| 732 | TB_2.4.5.6  | यो गर्भमोषधीनाम् गवां कृणोत्यर्वताम्               |   |
| 733 | TB_2.4.5.7  | इन्द्रश्च नः शुनासीरौ इमं                          |   |
| 734 | TB_2.4.6.1  | उत नः प्रिया प्रियासु                              |   |
| 735 | TB_2.4.6.2  | तदस्य प्रियमभि पाथो अश्याम्                        |   |
| 736 | TB_2.4.6.3  | उप नः सूनवो गिरः                                   |   |
| 737 | TB_2.4.6.4  | अद्धरेषु नमस्यत अनाम्योज आचके                      |   |
| 738 | TB_2.4.6.5  | कनात्कामां न आभर प्रयफ्स्यन्निव                    |   |
| 739 | TB_2.4.6.6  | मुष्कयोर्निहितः सपः सृत्वेव कामस्य                 |   |
| 740 | TB_2.4.6.7  | यज्ञस्य काम्यः प्रियः ददामीत्यग्निर्वदित           |   |

| SNo | Panchasat   | Beginning   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|-------------|---|---|
| 741 | TB_2.4.6.8  | अथेममन्थन्नमृतममूराः वैश्वानरं क्षेत्रजित्याय देवाः |   |
| 742 | TB_2.4.6.9  | अन्तरिक्षं विपप्रथे दुहे चौर्                       |   |
| 743 | TB_2.4.6.10 | रात्री व्यख्यदायती पुरुत्रा देव्यक्षिः              |   |
| 744 | TB_2.4.6.11 | यद् वाग्वदन्त्य-विचेतनानि राष्ट्री देवानां          |   |
| 745 | TB_2.4.6.12 | ततः क्षरत्यक्षरम् तद्-विश्व-मुपजीवति इन्द्रा        |   |
| 746 | TB_2.4.7.1  | वृषा ऽस्यश्शुर्-वृषभाय गृह्यसे वृषाऽयमुग्रो         |   |
| 747 | TB_2.4.7.2  | अस्याः पृथिव्या अद्भयक्षम् इमििन्द्र                |   |
| 748 | TB_2.4.7.3  | यस्यायमृषभो हविः इन्द्राय परिणीयते                  |   |
| 749 | TB_2.4.7.4  | प्रेह्मिभेप्रेहि प्रभरा सहस्व मा                    |   |
| 750 | TB_2.4.7.5  | सुवर्वतीरप एना जयेम यो                              |   |
| 751 | TB_2.4.7.6  | इन्द्रो जातो वि पुरो                                |   |
| 752 | TB_2.4.7.7  | आया हि सोमपीतये स्वारुहो                            |   |
| 753 | TB_2.4.7.9  | विश्वा आशाः पृतनाः सजंयञ्जयन्न्                     |   |
| 754 | TB_2.4.7.10 | प्र सद्यो अग्ने अत्यष्यन्यान्                       |   |
| 755 | TB_2.4.7.11 | ब्रह्म यज्ञ्स्य तन्तवः ऋत्विजो                      |   |
| 756 | TB_2.4.8.1  | स प्रत्नवन्नवीयसा अग्ने द्युम्नेन                   |   |
| 757 | TB_2.4.8.2  | अग्निर्विशां मानुषीणाम् तूर्णी रथः                  |   |

| SNo | Panchasat  | Beginning                              | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|------------|--|---|
| 758 | TB_2.4.8.3 | स नो रास्व सहस्रिणः                    |   |
| 759 | TB_2.4.8.4 | उभा हि वाश् सुहवा                      |   |
| 760 | TB_2.4.8.5 | हविषोऽस्य नवस्य नः सुवर्विदो           |   |
| 761 | TB_2.4.8.6 | इमे धेनू अमृतं ये                      |   |
| 762 | TB_2.4.8.7 | स एना विद्वान्. यक्ष्यसि               |   |
| 763 | TB_2.5.1.1 | प्राणो रक्षति विश्वमेजत् इर्यो         |   |
| 764 | TB_2.5.1.2 | आ न एतु पुरश्चरम्                      |   |
| 765 | TB_2.5.1.3 | वाग्देवी जुषतामिद्श हविः चक्षुर्       |   |
| 766 | TB_2.5.2.1 | उदेहि वाजिन्यो अस्यपस्वन्तः इदः        |   |
| 767 | TB_2.5.2.2 | अस्मभ्यं द्यावापृथिवी शकरीभिः राष्ट्रं |   |
| 768 | TB_2.5.2.3 | यूयमुग्रा मरुतः पृश्चिमातरः इन्द्रेण   |   |
| 769 | TB_2.5.2.4 | सो अन्तरिक्षे रजसो विमानः              |   |
| 770 | TB_2.5.3.1 | पुनर्न इन्द्रो मघवा ददातु              |   |
| 771 | TB_2.5.3.2 | जेता शत्रून्. विचर्.षणिः आकूत्यै       |   |
| 772 | TB_2.5.3.3 | सेदग्निरग्नी  रत्येत्यन्यान् यत्र वाजी |   |
| 773 | TB_2.5.3.4 | अगृभीताः पशवः सन्तु सर्वे              |   |
| 774 | TB_2.5.4.1 | आ नो भर भगमिन्द्र                      |   |

| SNo | Panchasat  | Beginning   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|------------|---|---|
| 775 | TB_2.5.4.2 | अह-न्निहिमन्वपस्ततर्द प्र वक्षणा अभिनत्           |   |
| 776 | TB_2.5.4.3 | यदिन्द्राहन्-प्रथमजा महीनाम् आन्मायिनामिनाः प्रोत |   |
| 777 | TB_2.5.4.4 | नातारीरस्य समृतिं वधानाम् सः                      |   |
| 778 | TB_2.5.4.5 | उदुज्जिहानो अभि काममीरयन् प्रपृञ्चन्              |   |
| 779 | TB_2.5.4.6 | इमं यज्ञमिथना वर्द्धयन्ता इमौ                     |   |
| 780 | TB_2.5.5.1 | यज्ञो रायो यज्ञ् ईशे                              |   |
| 781 | TB_2.5.5.2 | तं त्वा भग सर्व                                   |   |
| 782 | TB_2.5.5.3 | इयमेव सा या प्रथमा                                |   |
| 783 | TB_2.5.5.4 | धारावरा मरुतो धृष्णुवोजसः मृगा                    |   |
| 784 | TB_2.5.5.5 | हिरण्यवाशीरिषिरः सुवर.षाः बृहस्पतिः स             |   |
| 785 | TB_2.5.5.6 | अरण्यान्यरण्यान्यसौ या प्रेव नश्यसि               |   |
| 786 | TB_2.5.5.7 | उतो अरण्यानिः सायम् शकटीरिव                       |   |
| 787 | TB_2.5.6.1 | वार्त्रहत्याय शवसे पृतना-साह्याय च                |   |
| 788 | TB_2.5.6.2 | शिवे ते द्यावापृथिवी उभे                          |   |
| 789 | TB_2.5.6.3 | द्रुहः पाशान्निर्.ऋत्यै चोदमोचि अहा               |   |
| 790 | TB_2.5.6.4 | यूयं पात स्वस्तिभिः सदा                           | TB_2.5.8.5                                |
| 791 | TB_2.5.6.5 | तां त्वा मुद्गला हविषा                            |   |

| SNo | Panchasat   | Beginning                                      | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|-------------|--|---|
| 792 | TB_2.5.7.1  | वसूनां त्वाऽऽधीतेन रुद्राणामूर्म्या आदित्यानां |   |
| 793 | TB_2.5.7.2  | दीर्घायुत्वाय शतशारदाय प्रतिगृभ्णामि महते      |   |
| 794 | TB_2.5.7.3  | प्रजापतिः प्रणेता बृहस्पतिः पुर                |   |
| 795 | TB_2.5.7.4  | मित्रः क्षत्रं क्षत्रपतिः क्षत्रमस्मिन्.       |   |
| 796 | TB_2.5.8.1  | स ईं पाहि य                                    |   |
| 797 | TB_2.5.8.2  | अभीके चिदु लोककृत् सङ्गे                       |   |
| 798 | TB_2.5.8.3  | जुषतां प्रति मेधिरः प्र                        |   |
| 799 | TB_2.5.8.4  | मरुतो वृत्रहन्तमम् येन ज्योति-रजनयन्नृतावृधः   |   |
| 800 | TB_2.5.8.5  | यूयं पात स्वस्तिभिः सदा                        | TB_2.5.6.4                                |
| 801 | TB_2.5.8.6  | अपो याचामि भेषजम् अफ्सु                        |   |
| 802 | TB_2.5.8.7  | तस्यां मे रास्व तस्यास्ते                      |   |
| 803 | TB_2.5.8.8  | ज्योतिषा त्वा वैश्वानरेणोपतिष्ठे अयं           |   |
| 804 | TB_2.5.8.9  | देवेभ्यो हव्यं वह नः                           |   |
| 805 |             | सैनश् सश्चद्-देवं देवः सत्यिमन्दुश             |   |
| 806 | TB_2.5.8.11 | भूरीणि वृत्वा हर्यश्व हश्सि                    |   |
| 807 | TB_2.5.8.12 | अपां भूमानमुप नः सृजेह                         |   |
| 808 | TB_2.6.1.1  | स्वाद्वीं त्वा स्वादुना तीव्रां                |   |

| SNo | Panchasat  | Beginning                                    | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|------------|--|---|
| 809 | TB_2.6.1.2 | दधन्वा यो नर्यो अफ्स्वन्तरा                  |   |
| 810 | TB_2.6.1.3 | इन्द्रस्य युज्यः सखा ब्रह्म                  |   |
| 811 | TB_2.6.1.4 | सरस्वत्या इन्द्राय सुत्राम्णे एष             |   |
| 812 | TB_2.6.1.5 | उपयामगृहीतोऽस्याश्विनं तेजः सारस्वतं वीर्यम् |   |
| 813 | TB_2.6.2.1 | सोमो राजाऽमृतश् सुतः ऋजीषेणाजहान्मृत्युम्    |   |
| 814 | TB_2.6.2.2 | क्रुड्डाङ्गिरसो धिया ऋतेन सत्यमिन्द्रियम्    |   |
| 815 | TB_2.6.2.3 | वेदेन रूपे व्यकरोत् सतासती                   |   |
| 816 | TB_2.6.3.1 | सुरावन्तं बर्.हिषद् सुवीरम् यज्ञ्            |   |
| 817 | TB_2.6.3.2 | इमं तश् शुक्रं मधुमन्त-मिन्दुम्              |   |
| 818 | TB_2.6.3.3 | अमीमदन्त पितरः अतीतृपन्त पितरः               |   |
| 819 | TB_2.6.3.4 | पवित्रेण रातायुषा विश्वमायुर्-व्यक्षवै ।अग्न |   |
| 820 | TB_2.6.3.5 | ये सजाताः समनसः जीवा                         |   |
| 821 | TB_2.6.4.1 | सीसेन तन्त्रं मनसा मनीषिणः                   |   |
| 822 | TB_2.6.4.2 | अस्थि मज्जानं मासरैः कारोतरेण                |   |
| 823 | TB_2.6.4.3 | इन्द्रः सुत्रामा हृद्येन सत्यम्              |   |
| 824 | TB_2.6.4.4 | म्लाशीर्व्यक्तः शतधार उथ्सः दुहे             |   |
| 825 | TB_2.6.4.5 | अविर्न मेषो निस वीर्याय                      |   |

| SNo | Panchasat  | Beginning  | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|------------|--|---|
| 826 | TB_2.6.4.6 | केशा न शीर.षन्. यशसे                                 |   |
| 827 | TB_2.6.5.1 | मित्रोऽसि वरुणोऽसि समहं विश्वैर्देवैः                |   |
| 828 | TB_2.6.5.2 | साम्राज्याय सुऋतुः देवस्य त्वा                       |   |
| 829 | TB_2.6.5.3 | वीर्यायात्राद्यायाभिषिञ्चामि देवस्य त्वा सवितुः      |   |
| 830 | TB_2.6.5.4 | यशो मुखम् त्विषिः केशाश्च                            |   |
| 831 | TB_2.6.5.5 | चित्तं मे सहः बाहू                                   |   |
| 832 | TB_2.6.5.6 | आनन्दनन्दावाण्डौ मे भगः सौभाग्यं                     |   |
| 833 | TB_2.6.5.7 | त्रया देवा एकादश त्रयस्त्रिश्शाः                     |   |
| 834 | TB_2.6.5.8 | यजूश्षि सामभिः सामान्यृग्भिः ऋचो                     |   |
| 835 | TB_2.6.6.1 | यद्-देवा देवहेडनम् देवासश्चकृमा वयम्                 |   |
| 836 | TB_2.6.6.2 | सूर्यो मा तस्मादेनसः विश्वान्                        |   |
| 837 | TB_2.6.6.3 | अवभृथ निचङ्कुण निचेरुरसि निचङ्कुण                    |   |
| 838 | TB_2.6.6.4 | पूतं पवित्रेणेवाज्यम् आपः शुन्धन्तु                  |   |
| 839 | TB_2.6.6.5 | तेजोऽसि तेजो मिय धेहि                                |   |
| 840 | TB_2.6.7.1 | होता यक्षथ्-समिधेन्द्र-मिडस्पदे नाभा पृथिव्या        |   |
| 841 | TB_2.6.7.2 | वेत्वाज्यस्य होतर्यज होता यक्षदिडाभि-रिन्द्र-मीडितम् |   |
| 842 | TB_2.6.7.3 | वेत्वाज्यस्य होतर्यज होता यक्षदोजो                   |   |

| SNo | Panchasat   | Beginning  | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|-------------|--|---|
| 843 | TB_2.6.7.4  | वीतामाज्यस्य होतर्यज होता यक्षद्                         |   |
| 844 | TB_2.6.7.5  | महीन्द्रपत्नीर्हविष्मतीः वियन्त्वाज्यस्य होतर्यज होता    |   |
| 845 | TB_2.6.7.6. | मद्धा समञ्जन्यथिभिः सुगेभिः स्वदाति                      |   |
| 846 | TB_2.6.8.1  | समिद्ध इन्द्र उषसामनीके पुरोरुचा                         |   |
| 847 | TB_2.6.8.2  | पुरदंरो मघवान्. वज्रबाहुः आयातु                          |   |
| 848 | TB_2.6.8.3  | उषासा नक्ता बृहती बृहन्तम्                               |   |
| 849 | TB_2.6.8.4  | अच्छिन्नं तन्तुं पयसा सरस्वती                            |   |
| 850 | TB_2.6.9.1  | आचर्.षणिप्रा{11}, विवेष यन्मा{12} तश्                    |   |
| 851 | TB_2.6.10.1 | देवं बर्.हिरिन्द्रश् सुदेवं देवैः                        |   |
| 852 | TB_2.6.10.2 | देवी उषासा नक्ता इन्द्रं                                 |   |
| 853 | TB_2.6.10.3 | वसुवने वसुधेयस्य वीतां यज                                |   |
| 854 |             | वसुवने वसुधेयस्य वियन्तु यज                              |   |
| 855 | TB_2.6.10.6 | देव इन्द्रो वनस्पतिः हिरण्यपर्णो                         | TB_2.6.14.5                               |
| 856 | TB_2.6.11.1 | होता यक्षथ्-समिधाऽग्नि-मिडस्पदे अश्विनेन्द्रश् सरस्वतीम् |   |
| 857 | TB_2.6.11.2 | बदरैरुपवाकाभिर् भेषजं तोक्मभिः पयः                       |   |
| 858 |             | होता यक्षदिडेडित आजुह्वानः सरस्वतीम्                     |   |
| 859 | TB_2.6.11.4 | भिषजाऽश्विनाऽश्वा शिशुमती भिषग्धेनुः सरस्वती             |   |

| SNo | Panchasat   | Beginning  | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|-------------|--|---|
| 860 | TB_2.6.11.5 | अश्विनेन्द्राय भेषजम् शुक्रं न                     |   |
| 861 | TB_2.6.11.6 | वियन्त्वाज्यस्य होतर्यज होता यक्षद्दैव्या          |   |
| 862 | TB_2.6.11.7 | अधिनेडा न भारती वाचा                               |   |
| 863 | TB_2.6.11.8 | श्रिया न मासरम् पयः                                |   |
| 864 | TB_2.6.11.9 | होता यक्षदग्निश् स्वाहाऽऽज्यस्य स्तोकानाम्         |   |
| 865 | TB_2.6.11.1 | )स्वाहाऽग्निश् होत्राज्जुषाणो अग्निर् भेषजम्       |   |
| 866 | TB_2.6.12.1 | समिद्धो अग्निरश्विना तप्तो घर्मो                   |   |
| 867 | TB_2.6.12.2 | अधातामश्विना मधु भेषजं भिषजा                       |   |
| 868 | TB_2.6.12.3 | कवष्यो न व्यचस्वतीः अश्विभ्यां                     |   |
| 869 | TB_2.6.12.4 | दैव्या होतारा भिषजा पातमिन्द्रश                    |   |
| 870 | TB_2.6.13.1 | अश्विना हविरिन्द्रियम् नमुचेर्द्धिया सरस्वती       |   |
| 871 | TB_2.6.13.2 | द्धाना अभ्यनूषत हविषा यज्ञ्मिन्द्रियम्             |   |
| 872 |             | वरुणः क्षत्रमिन्द्रियम् भगेन सविता                 |   |
| 873 | TB_2.6.14.1 | देवं बर्.हिः सरस्वती सुदेविमन्द्रे                 |   |
| 874 | TB_2.6.14.2 | देवी उषासावश्विना भिषजेन्द्रे सरस्वती              |   |
| 875 | -           | देवी ऊर्जाहुती दुघे सुदुघे                         |   |
| 876 | TB_2.6.14.4 | देवी-स्तिस्र-स्तिस्रो देवीः सरस्वत्यिश्वना भारतीडा |   |

| SNo | Panchasat   | Beginning   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|-------------|---|---|
| 877 |             | देव इन्द्रो वनस्पतिः हिरण्यपर्णो  | TB_2.6.10.6                               |
| 878 | TB_2.6.14.6 | स्योनमिन्द्र ते सदः ईशायै   |   |
| 879 | _           | अग्निमद्य होतारमवृणीत अयश सुतासुती                                      |   |
| 880 | TB_2.6.15.2 | सरस्वत्यै मेषेणेन्द्रायाधिभ्याम् इन्द्रायर्.षभेणाधिभ्याः सर-<br>स्वत्यै |   |
| 881 | TB_2.6.16.1 | उशन्तस्त्वा हवामह{14}, आ नो   |   |
| 882 | TB_2.6.16.2 | अश्होमुचः पितरः सोम्यासः परेऽवरेऽमृतासो                                 |   |
| 883 | TB_2.6.17.1 | होता यक्षदिडस्पदे समिधानं महद्यशः                                       |   |
| 884 | TB_2.6.17.2 | शुचिमिन्द्रं वयोधसम् उष्णिहं छन्द                                       |   |
| 885 | TB_2.6.17.3 | वेत्वाज्यस्य होतर्यज होता यक्षथ्  |   |
| 886 | TB_2.6.17.4 | द्वारो देवीर्.हिरण्ययीः ब्रह्माण इन्द्रं                                |   |
| 887 | TB_2.6.17.5 | पष्ठवाहं गाँ वयो दधत्   |   |
| 888 | TB_2.6.17.6 | तिस्रो देवीर्.हिरण्ययीः भारतीर्-बृहतीर्महीः पतिमिन्द्रं                 |   |
| 889 |             | द्विपदं छन्द इहेन्द्रियम् उक्षाणं                                       |   |
| 890 |             | समिद्धो अग्निः समिधा सुषमिद्धो  |   |
| 891 |             | अनुष्टुप्छन्द इन्द्रियम् त्रिवथ्सो गौर्वयो                              |   |
| 892 | TB_2.6.18.3 | उषे यह्वी सुपेशसा विश्वे  |   |

| SNo | Panchasat   | Beginning  | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|-------------|--|---|
| 893 |             | विराद्धन्द इहेन्द्रियम् धेनुर्गौर्न वयो                          |   |
| 894 |             | वसन्तेनर्तुना देवाः वसविश्ववृता स्तुतम्                          |   |
| 895 |             | वैरूपेण विशौजसा हविरिन्द्रे वयो                                  |   |
| 896 | TB_2.6.20.1 | देवं बर्.हिरिन्द्रं वयोधसम् देवं                                 |   |
| 897 | TB_2.6.20.2 | देवी देवं वयोधसम् उषे  |   |
| 898 | TB_2.6.20.3 | देवी ऊर्जाहुती देविमन्द्रं वयोधसम्                               |   |
| 899 | TB_2.6.20.4 | देवी-स्तिस्र-स्तिस्रो देवीर्वयोधसम् पतिमिन्द्र-मवर्द्धयन् जगत्या |   |
| 900 | TB_2.6.20.5 | देवो वनस्पतिर्-देविमन्द्रं वयोधसम् देवो                          |   |
| 901 | TB_2.7.1.1  | त्रिवृथ्-स्तोमो भवति ब्रह्मवर्चसं वै                             |   |
| 902 | TB_2.7.1.2  | अरुणो मिर्मिरस्त्रिशुऋः एतद् वै                                  |   |
| 903 | TB_2.7.1.3  | पुरोधामेव गच्छति तस्य प्रातस्सवने                                |   |
| 904 | TB_2.7.1.4  | प्रजापति-श्रतुस्त्रिश्शो देवतानां यावतीरेव देवताः                |   |
| 905 | TB_2.7.2.1  | यदाग्नेयो भवति अग्निमुखा ह्युद्धिः                               |   |
| 906 | TB_2.7.2.2  | अथो य एव कश्च  |   |
| 907 | TB_2.7.3.1  | यदाग्नेयो भवति आग्नेयो वै  |   |
| 908 | TB_2.7.3.2  | अथ वीर्यावत्तरो भवति अथ  |   |
| 909 | TB_2.7.3.3  | वज्रस्य वा एषोऽनुमानाय अनुमतवज्रः                                |   |

| SNo | Panchasat  | Beginning  | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|------------|--|---|
| 910 | TB_2.7.4.1 | न वै सोमेन सोमस्य                                    |   |
| 911 | TB_2.7.5.1 | यो वै सोमेन सूयते                                    |   |
| 912 | TB_2.7.5.2 | य एतेन यजते य  | TB_2.7.6.2                                |
| 913 | TB_2.7.6.1 | एष गोसवः षद्भिश्श उक्थ्यो                            |   |
| 914 | TB_2.7.6.2 | य एतेन यजते य  | TB_2.7.5.2                                |
| 915 | TB_2.7.6.3 | असौ बृहत् अनयोरेवैन-मनन्तर्,हित-मभिषिञ्चति पशुस्तोमो |   |
| 916 | TB_2.7.7.1 | सिश्हे व्याघ्र उत या                                 |   |
| 917 | TB_2.7.7.2 | इन्द्रं या देवी सुभगा                                |   |
| 918 | TB_2.7.7.3 | इन्द्राय त्वा पयस्वते पयस्वन्तः                      |   |
| 919 | TB_2.7.7.4 | ओजस्वदस्तु मे मुखम् ओजस्वच्छिरो                      |   |
| 920 | TB_2.7.7.5 | आयुरिस तत् ते प्रयच्छामि                             |   |
| 921 | TB_2.7.7.6 | आयुरिस विश्वायुरिस सर्वायुरिस सर्वमायुरिस            |   |
| 922 | TB_2.7.7.7 | अपां यो द्रवणे रसः                                   |   |
| 923 | TB_2.7.8.1 | अभिप्रेहि वीरयस्व उग्रश्चेत्ता सपत्नहा               |   |
| 924 | TB_2.7.8.2 | अनु सोमो अन्वग्निरावीत् अनु                          |   |
| 925 | TB_2.7.9.1 | प्रजापतिः प्रजा असृजत ता                             | TB_1.1.5.4                                |
|     |            |  | TB_3.1.4.2                                |

| SNo | Panchasat   |  | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|-------------|--|---|
| 926 | TB_2.7.9.2  | सर्वे पुरुषाः सर्वाण्येवान्नान्यवरुन्धे सर्वान्            |   |
| 927 | TB_2.7.9.3  | पुष्टिं तेन यत्-कमण्डल्लम् आयुष्टेन                        |   |
| 928 | TB_2.7.9.4  | तदस्मिन्-नेकधाऽधात् रोहिण्यां कार्यः यद्वाह्मण             |   |
| 929 | TB_2.7.9.5  | अवेत्योऽवभृथा3 ना3 इति यद्-दर्भपुञ्जीलैः                   |   |
| 930 | TB_2.7.10.1 |  |   |
| 931 |             | बहुर्भवति य एतेन यजते                                      |   |
| 932 |             | अगस्यो मरुद्भ्य उक्ष्णः प्रौक्षत्                          |   |
| 933 | TB_2.7.11.2 | एवं चतुर्थे पञ्चोत्तमेऽहन्नालभ्यन्ते वर्.षिष्ठमिव          |   |
| 934 | TB_2.7.11.3 | य उ चैनमेवं वेद  | TB_3.8.18.7                               |
|     |             |  | TB_3.9.22.3                               |
| 935 | TB_2.7.12.1 | अस्याजरासो दमा मरित्राः अर्चद्भूमासो                       |   |
| 936 | TB_2.7.12.2 | द्वे विरूपे चरतः स्वर्थे                                   |   |
| 937 | TB_2.7.12.3 | औक्षन्-घृतैरास्तृणन्-बर्.हिरस्मै आदिद्धोतारं न्यषादयन्त अ- |   |
|     |             | ग्निनाऽग्निः   |   |
| 938 | TB_2.7.12.4 | ते स्वानिनो रुद्रिया वर.षनिर्णिजः                          |   |
| 939 |             | श्रुधि श्रुत्कर्ण विह्निभिः देवैरग्ने                      |   |
| 940 | TB_2.7.12.6 | दिवि श्रवो दिधरे यज्ञियासः                                 |   |

| SNo | Panchasat   | Beginning                               | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|-------------|---|---|
| 941 |             | तिष्ठा हरी रथ आ                         |   |
| 942 |             | द्वितायो वृत्रहन्तमः विद इन्द्रः        |   |
| 943 | TB_2.7.13.3 | भरेष्विन्द्रश् सुहवश् हवामहे अश्होमुचश  |   |
| 944 |             | ऋष्वा त इन्द्र स्थविरस्य                |   |
| 945 |             | गभस्तयो नियुतो विश्ववाराः अहरहर्भूय     |   |
| 946 | TB_2.7.14.1 | प्रजापतिः पशूनसृजत तेऽस्माथ् सृष्टाः    |   |
| 947 | TB_2.7.14.2 | स इन्द्रमब्रवीत् इमान्म ईफ्सेति         |   |
| 948 |             | इदं विष्णुर् विचक्रम इति                |   |
| 949 | TB_2.7.15.1 | व्याघ्रोऽयमग्नौ चरति प्रविष्टः ऋषीणां   |   |
| 950 | TB_2.7.15.2 | तस्य मृत्यौ चरति राजसूयम्               |   |
| 951 | TB_2.7.15.3 | आऽयं भातु शवसा पञ्च                     |   |
| 952 | TB_2.7.15.4 | विश्रयस्व दिशो महीः विशस्त्वा           |   |
| 953 | TB_2.7.15.5 | तथा त्वा सविता करत्                     |   |
| 954 | TB_2.7.15.6 | अरुणं त्वा वृकमुग्रं खजं                |   |
| 955 | TB_2.7.16.1 | अभि प्रेहि वीरयस्व उग्रश्चेत्ता         |   |
| 956 | TB_2.7.16.2 | मा न इन्द्राभितस्त्व-दृष्वारिष्टासः एवा |   |
| 957 | TB_2.7.16.3 | इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्न् समुद्र        |   |

| SNo | Panchasat   | Beginning  | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|-------------|--|---|
| 958 |             | तद्गावाणः सोमसुतो मयोभुवः तद्श्विना                |   |
| 959 |             | ये केशिनः प्रथमाः सत्रमासत                         |   |
| 960 |             | देहि दक्षिणां प्रतिरस्वायुः अथा                    |   |
| 961 |             | तेभ्यो निधानं बहुधा व्यैच्छन्न                     |   |
| 962 | TB_2.7.18.1 | इन्द्रं वै स्वा विशो                               |   |
| 963 | TB_2.7.18.2 | यः राजानं विशो नापचायेयुः                          |   |
| 964 | TB_2.7.18.3 | हरन्त्यस्मै विशो बलिम् ऐनमप्रतिख्यातं              |   |
| 965 | TB_2.7.18.4 | तद् यथा ह वै                                       |   |
| 966 | TB_2.7.18.5 | सतोबृहतीषु स्तुवते सतो बृहन्न्                     |   |
| 967 | TB_3.1.1.1  | अग्निर्नः पातु कृत्तिकाः नक्षत्रं                  |   |
| 968 | TB_3.1.1.2  | सा नो यज्ञस्य सुविते                               |   |
| 969 | TB_3.1.1.3  | यत् ते नक्षत्रं मृगशीर.षमस्ति                      |   |
| 970 | TB_3.1.1.4  | प्रमुञ्चमानौ दुरितानि विश्वा अपाघराः               |   |
| 971 | TB_3.1.1.5  | बृहस्पतिः प्रथमं जायमानः तिष्यं                    |   |
| 972 | TB_3.1.1.6  | ये अन्तरिक्षं पृथिवीं क्षियन्ति                    |   |
| 973 | TB_3.1.1.7  | ये अग्निदग्धा येऽनग्नि-दग्धाः येऽमुं               |   |
| 974 | TB_3.1.1.8  | अर्यमा राजाऽजरस्तुविष्मान् फल्गुनीना-मृषभो रोरवीति |   |

| SNo | Panchasat   | Beginning  | Other Panchasat beginning with same Padam |
|-----|-------------|--|---|
| 975 | TB_3.1.1.9  | आयातु देवः सवितोपयातु हिरण्ययेन                  |   |
| 976 | TB_3.1.1.10 | निवेशय-न्नमृतान् मर्त्यां श्र्यं रूपाणि पि श्शन् |   |
| 977 |             | तन्नो वायस्तदु निष्ट्या शृणोतु                   |   |
| 978 | TB_3.1.1.12 | विषूचः रात्रू-नपबाधमानौ अप क्षुधं                |   |
| 979 | TB_3.1.2.1  | ऋद्भ्यास्म हव्यैर्-नमसोप सद्य मित्रं             |   |
| 980 | TB_3.1.2.2  | तस्मिन् वयममृतं दुहानाः क्षुधं                   |   |
| 981 | TB_3.1.2.3  | अहर्नो अद्य सुविते द्धातु                        |   |
| 982 | TB_3.1.2.4  | यासामषाढा मधु भक्षयन्ति ता                       |   |
| 983 | TB_3.1.2.5  | यस्मिन् ब्रह्माऽभ्यजयथ् सर्वमेतत् अमुञ्च         |   |
| 984 | TB_3.1.2.6  | महीं देवीं विष्णुपत्नी-मजूर्याम् प्रतीचीमेनाः    |   |
| 985 | TB_3.1.2.7  | यज्ञं नः पान्तु वसवः                             |   |
| 986 | TB_3.1.2.9  | अहिर् बुद्धियः प्रथमान एति                       |   |
| 987 | TB_3.1.2.10 | इमानि हव्या प्रयता जुषाणा                        |   |
| 988 | TB_3.1.2.11 | यौ देवानां भिषजौ हव्यवाहौ                        |   |
| 989 | TB_3.1.3.1  | नवो नवो भवति जायमानो                             |   |
| 990 | TB_3.1.3.2  | व्युच्छन्ती दुहिता दिवः अपो                      |   |
| 991 | TB_3.1.3.3  | प्र नक्षत्राय देवाय इन्द्रायेन्दुः               |   |

| SNo  | Panchasat   | Beginning                                    | Other Panchasat beginning with same Padam |
|------|-------------|--|---|
| 992  | TB_3.1.4.1  | अग्निर्वा अकामयत अन्नादो देवानाः             |   |
| 993  | TB_3.1.4.2  | प्रजापतिः प्रजा असृजत ता                     | TB_1.1.5.4                                |
|      |             |  | TB_2.7.9.1                                |
| 994  | TB_3.1.4.3  | सोमो वा अकामयत ओषधीनाः                       |   |
| 995  | TB_3.1.4.4  | रुद्रो वा अकामयत पशुमान्थ्                   |   |
| 996  | TB_3.1.4.5  | ऋक्षा वा इयमलोमकाऽऽसीत् साऽकामयत             |   |
| 997  | TB_3.1.4.6  | बृहस्पतिर्वा अकामयत ब्रह्मवर्चसी स्यामिति    |   |
| 998  | TB_3.1.4.7  | देवासुराः सम्यता आसन्न् ते                   |   |
| 999  | TB_3.1.4.8  | पितरो वा अकामयन्त पितृलोक                    |   |
| 1000 | TB_3.1.4.9  | अर्यमा वा अकामयत पशुमान्थ्                   |   |
| 1001 | TB_3.1.4.10 | भगो वा अकामयत भगी                            |   |
| 1002 | TB_3.1.4.11 | सविता वा अकामयत श्रन्मे                      |   |
| 1003 | TB_3.1.4.12 | त्वष्टा वा अकामयत चित्रं                     |   |
| 1004 |             | वायुर्वा अकामयत कामचारमेषु लोकेष्वभिजयेयमिति |   |
| 1005 |             | इन्द्राग्नी वा अकामयेताम् श्रैष्ठ्यं         |   |
| 1006 | TB_3.1.4.15 | अथैतत्-पौर्णमास्या आज्यं निर्वपति कामो       |   |
| 1007 | TB_3.1.5.1  | मित्रो वा अकामयत मित्रधेयमेषु                |   |

| SNo  | Panchasat   | Beginning  | Other Panchasat beginning with same Padam |
|------|-------------|--|---|
| 1008 | TB_3.1.5.2  | इन्द्रो वा अकामयत ज्यैष्ठ्यं                             |   |
| 1009 | TB_3.1.5.3  | प्रजापतिर्वा अकामयत मूलं प्रजां                          |   |
| 1010 | TB_3.1.5.4  | आपो वा अकामयन्त समुद्रं                                  |   |
| 1011 | TB_3.1.5.5  | विश्वे वै देवा अकामयन्त                                  |   |
| 1012 | TB_3.1.5.6  | ब्रह्म वा अकामयत ब्रह्मलोकमभिजयेयमिति                    |   |
| 1013 | TB_3.1.5.7  | विष्णुर्वा अकामयत पुण्यः श्लोकः                          |   |
| 1014 | TB_3.1.5.8  | वसवो वा अकामयन्त अग्रं                                   |   |
| 1015 | TB_3.1.5.9  | इन्द्रो वा अकामयत दृढो                                   |   |
| 1016 | TB_3.1.5.10 | अजो वा एकपादकामयत तेजस्वी                                |   |
| 1017 | TB_3.1.5.11 | अहिर्वे बुद्धियोऽकामयत इमां प्रतिष्ठां                   |   |
| 1018 | TB_3.1.5.12 | पूषा वा अकामयत पशुमान्थ्                                 |   |
| 1019 | TB_3.1.5.13 | अश्विनौ वा अकामयेताम् श्रोत्रस्विनावबिधरौ                |   |
| 1020 | TB_3.1.5.14 | यमो वा अकामयत पितृणाः                                    |   |
| 1021 | TB_3.1.5.15 | अथैतद-मावास्याया आज्यं निर्वपति कामो                     |   |
| 1022 | TB_3.1.6.1  | चन्द्रमा वा अकामयत अहोरात्रा-नर्द्धमासान्-मासा-नृतून्थ्- |   |
| 1023 | TB_3.1.6.2  | अहोरात्रे वा अकामयेताम् अत्यहोरात्रे                     |   |
| 1024 | TB_3.1.6.3  | उषा वा अकामयत प्रिया                                     |   |

| SNo  | Panchasat  | Beginning   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|------|------------|---|---|
| 1025 | TB_3.1.6.4 | अथैतस्मै नक्षत्राय चरुं निर्वपति                  |   |
| 1026 | TB_3.1.6.5 | सूर्यो वा अकामयत नक्षत्राणां                      |   |
| 1027 | TB_3.1.6.6 | अथैतमदित्यै चरुं निर्वपति इयं                     |   |
| 1028 | TB_3.1.6.7 | अथैतं विष्णवे चरुं निर्वपति                       |   |
| 1029 | TB_3.2.1.1 | तृतीयस्यामितो दिवि सोम आसीत्                      |   |
| 1030 | TB_3.2.1.2 | तस्मात् त्रीणित्रीणि पर्णस्य पलाशानि              |   |
| 1031 | TB_3.2.1.3 | यत् प्राचीमाहरेत् देवलोक-मभिजयेत् यदुदीचीं        |   |
| 1032 | TB_3.2.1.4 | वायव एवैनान् परि ददाति                            |   |
| 1033 | TB_3.2.1.5 | वथ्सेभ्यश्च वा एताः पुरा                          |   |
| 1034 | TB_3.2.1.6 | यजमानस्य पशून् पाहीत्याह पशुनां                   |   |
| 1035 | TB_3.2.2.1 | देवस्य त्वा सवितुः प्रसव                          | TB_3.2.8.1                                |
|      |            |   | TB_3.2.9.1                                |
| 1036 | TB_3.2.2.2 | ओषधीनामहिश्सायै यज्ञस्य घोषदसीत्याह यजमान         |   |
| 1037 | TB_3.2.2.3 | त आवहन्ति कवयः पुरस्तादित्याह                     |   |
| 1038 | TB_3.2.2.4 | यद्वा इदं किं च                                   | TB_2.3.5.5                                |
| 1039 | TB_3.2.2.5 | यज्ञस्यानितरेकाय वर्.षवृद्ध-मसीत्याह वर्.ष वृद्धा |   |
| 1040 | TB_3.2.2.6 | देवबर्.हिः शतवल्र.शं विरोहेत्याह प्रजा            |   |

| SNo  | Panchasat   | Beginning   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|------|-------------|---|---|
| 1041 | TB_3.2.2.7  | अदित्यै रास्नाऽसीत्याह इयं वा   |   |
| 1042 | TB_3.2.2.8  | पूषा ते ग्रन्थिं ग्रश्नात्वित्याह                                     |   |
| 1043 | TB_3.2.2.9  | ब्रह्मणैवैनद्धरित उर्वन्तरिक्ष-मन्विहीत्याह गत्यै देवगंममसी-<br>त्याह |   |
| 1044 | TB_3.2.3.1  | पूर्वेद्युरिद्ध्मा बर्.हिः करोति यज्ञमेवारभ्य                         |   |
| 1045 | TB_3.2.3.2  | अन्तरिक्षं वै मातरिश्वनो घर्मः  |   |
| 1046 | TB_3.2.3.3  | वसूनां पवित्रमसीत्याह प्राणा वै                                       |   |
| 1047 | TB_3.2.3.4  | सौम्यः पर्णः सयोनित्वाय साक्षात्                                      |   |
| 1048 | TB_3.2.3.5  | तस्मादयश् सर्वतः पवते हुतः  |   |
| 1049 | TB_3.2.3.6  | पवित्रवत्यानयति अपां चैवौषधीनां च                                     |   |
| 1050 | TB_3.2.3.7  | अमूमिति नाम गृह्णाति भद्रमेवासां                                      |   |
| 1051 | TB_3.2.3.8  | बहु दुग्धीन्द्राय देवेभ्यो हविरिति                                    |   |
| 1052 | TB_3.2.3.9  | यातयाम्ना हविषा यजेत अथो  |   |
| 1053 | TB_3.2.3.10 | 3(  |   |
| 1054 | TB_3.2.3.11 |   |   |
| 1055 | TB_3.2.3.12 |   |   |
| 1056 | TB_3.2.4.1  | कर्मणे वां देवेभ्यः शकेयमित्याह                                       |   |

| SNo  | Panchasat   | Beginning   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|------|-------------|---|---|
| 1057 | TB_3.2.4.2  | यज्ञमेवारभ्य प्रणीय प्रचरति अपः                     |   |
| 1058 | TB_3.2.4.3  | अपः प्रणयति आपो वै                                  |   |
| 1059 | TB_3.2.4.4  | अद्भर्युं च यजमानं च                                |   |
| 1060 | TB_3.2.4.5  | अहुतमसि हविर्द्धान-मित्याहानार्त्ये दृश्हस्व मा     |   |
| 1061 | TB_3.2.4.6  | अश्विनौ हि देवानामद्भर्यू आस्ताम्                   |   |
| 1062 | TB_3.2.4.7  | इदं देवानामिदमु नः सहेत्याह                         |   |
| 1063 | TB_3.2.5.1  | इन्द्रो वृत्रमहन्न् सोऽपः अभ्यम्रियत                |   |
| 1064 | TB_3.2.5.2  | द्विपाद्-यजमानः प्रतिष्ठित्यै देवो वः               |   |
| 1065 | TB_3.2.5.3  | प्राणैरेव प्राणान्थ् संपृणक्ति सावित्रियर्चा        |   |
| 1066 | TB_3.2.5.4  | युष्मानिन्द्रो ऽवृणीत वृत्रतूये यूयमिन्द्रमवृणीद्धं |   |
| 1067 | TB_3.2.5.5  | अथो रक्षसामपहत्यै शुन्धद्धं दैव्याय                 |   |
| 1068 | TB_3.2.5.6  | अस्या एवैनत् त्वचं करोति                            |   |
| 1069 | TB_3.2.5.7  | अधिषवणमसि वानस्पत्यमित्याह अधिषवण-मेवैनत् करोति     |   |
| 1070 | TB_3.2.5.8  | देवताभिरेवैनथ् समर्द्धयति अद्रिरसि वानस्पत्य        |   |
| 1071 | TB_3.2.5.9  | इषमेवोर्जं यजमाने द्धाति द्युमद्भदत                 |   |
| 1072 | TB_3.2.5.10 | वृङ्क एषामिन्द्रियं वीर्यम् श्रेष्ठ                 |   |
| 1073 | TB_3.2.5.11 | रक्षसां भागोऽसीत्याह तुषैरेव रक्षाश्सि              |   |

| SNo  | Panchasat  | Beginning   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|------|------------|---|---|
| 1074 | TB_3.2.6.1 | अवधूतः रक्षोऽवधूता अरातय इत्याह                                       |   |
| 1075 | TB_3.2.6.2 | कृष्णो रूपं कृत्वा यत्  |   |
| 1076 | TB_3.2.6.3 | धिषणाऽसि पार्वतेयी प्रति त्वा   |   |
| 1077 | TB_3.2.6.4 | यावदेका देवता कामयते यावदेका  |   |
| 1078 | TB_3.2.7.1 | धृष्टिरसि ब्रह्म यच्छेत्याह धृत्यै                                    |   |
| 1079 | TB_3.2.7.2 | अन्तरिक्ष एव ज्योतिर्द्धत्ते आदित्यमेवामुष्मिन्                       |   |
| 1080 | TB_3.2.7.3 | धर्मासि दिशो दश्हेत्याह दिश   |   |
| 1081 | TB_3.2.7.4 | अथ द्वे अथ त्रीणि   |   |
| 1082 | TB_3.2.7.5 | अमुष्मिन् लोकेऽनुपरैति यदष्टावुप द्धाति                               |   |
| 1083 | TB_3.2.7.6 | जगत्या तत् छन्दः संमितानि   |   |
| 1084 | TB_3.2.8.1 | देवस्य त्वा सवितुः प्रसव  | TB_3.2.2.1                                |
|      |            |   | TB_3.2.9.1                                |
| 1085 | TB_3.2.8.2 | तस्मादेवमाह सः रेवतीर्-जगतीभिर्-मधुमतीर्-मधुमतीभिः<br>सृज्यद्भमित्याह |   |
| 1086 | TB_3.2.8.3 | आप ओषधीर्महयन्ति तादृगेव तत्  |   |
| 1087 | TB_3.2.8.4 | घर्मोऽसि विश्वायुरित्याह विश्वमेवायुर् यजमाने                         |   |
| 1088 | TB_3.2.8.5 | अर्द्धमासेऽर्द्धमासे प्रवृज्यते यत् पुरोडाशः                          |   |

| SNo  | Panchasat   | Beginning                                   | Other Panchasat beginning with same |
|------|-------------|---|-------------------------------------|
|      |             |   | Padam                               |
| 1089 | TB_3.2.8.6  | रक्षसा-मन्तर्.हित्यै पुरोडाशंँवा अधिश्रितः  |                                     |
| 1090 | TB_3.2.8.7  | अविदहन्तः श्रपयतेति वाचं विसृजते            |                                     |
| 1091 | TB_3.2.8.8  | वेदेनाभि वासयति तस्मात् केशैः               |                                     |
| 1092 | TB_3.2.8.9  | प्राणाः परावः प्राणैरेव पर्शून्थ्           |                                     |
| 1093 | TB_3.2.8.10 | मिय तनूः संनिधद्भम् अहं                     |                                     |
| 1094 | TB_3.2.8.11 |   |                                     |
| 1095 | TB_3.2.8.12 | सूर्याभिनिमुक्तः कुनखिनि कुनखी श्यावदित     |                                     |
| 1096 | TB_3.2.9.1  | देवस्य त्वा सवितुः प्रसव                    | TB_3.2.2.1                          |
|      |             |   | TB_3.2.8.1                          |
| 1097 | TB_3.2.9.2  | तेज एवास्मिन् द्धाति विषाद्वै               |                                     |
| 1098 | TB_3.2.9.3  | मेद्ध्यामेवैनां देवयजनीं करोति ओषद्ध्यास्ते |                                     |
| 1099 | TB_3.2.9.4  | द्वौ वाव पुरुषौ यं                          |                                     |
| 1100 | TB_3.2.9.5  | भ्रातृव्यमेव पृथिव्या अपहन्ति तेऽमन्यन्त    |                                     |
| 1101 | TB_3.2.9.6  | अन्तरिक्षादेवैन-मपहन्ति तृतीयः हरति दिव     |                                     |
| 1102 | TB_3.2.9.7  | क्यन्नो दास्यथेति यावथ्स्वयं परिगृह्णीथेति  |                                     |
| 1103 | TB_3.2.9.8  | भवत्यात्मना पराऽस्य भ्रातृव्यो भवति         |                                     |
| 1104 | TB_3.2.9.9  | प्राञ्चौ वेद्यश् सावुन्नयति आहवनीयस्य       |                                     |

| SNo  | Panchasat   | Beginning   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|------|-------------|---|---|
| 1105 |             | मूलं छिनत्ति भ्रातृव्यस्यैव मूलं                        |   |
| 1106 |             | प्रजापतिना यज्ञमुखेन संमिताम् वेदिर्देवेभ्यो            |   |
| 1107 | TB_3.2.9.12 | पुरीषवतीं करोति प्रजा वै                                |   |
| 1108 | TB_3.2.9.13 | क्रूरमिव वा एतत् करोति                                  |   |
| 1109 | TB_3.2.9.14 | यददश्चन्द्रमसि मेद्ध्यम् तदस्यामेरयति तां               |   |
| 1110 | TB_3.2.9.15 | रक्षसामपहत्यै स्पयस्य वर्तमन्थ्-सादयति यज्ञस्य          |   |
| 1111 | TB_3.2.10.1 | वज्रो वै स्पयः यदन्वञ्चं                                |   |
| 1112 | TB_3.2.10.2 | यथोपधाय वृश्चन्त्यवम् हस्तावव नेनिक्ते                  |   |
| 1113 | TB_3.2.10.3 | यत् पुरस्तात् प्रत्य-गुपसादयेत् अन्यत्राहुतिपथादिद्ध्मं |   |
| 1114 | TB_3.3.1.1  | प्रत्युष्टश् रक्षः प्रत्युष्टा अरातय                    |   |
| 1115 | TB_3.3.1.2  | अन्तरिक्षमुपभृत् पृथिवी ध्रुवा इमे                      |   |
| 1116 | TB_3.3.1.3  | वृष्टिमेव नियच्छति अवाचीनाग्रा हि                       |   |
| 1117 | TB_3.3.1.4  | प्राचीमभ्याकारम् अग्रैरन्तरतः एविमव ह्यन्नमद्यते        |   |
| 1118 | TB_3.3.1.5  | सुग्घ्येषा प्राणो वै सुवः                               |   |
| 1119 | TB_3.3.2.1  | दिवः शिल्पमवततम् पृथिव्याः ककुभि                        |   |
| 1120 | TB_3.3.2.2  | स्वेनैवैनानि छन्दसा स्वया देवतया                        |   |
| 1121 | TB_3.3.2.3  | यद्येनानि पशवोऽभितिष्ठेयुः न तत्                        |   |

| SNo  | Panchasat  | Beginning                                | Other Panchasat beginning with same Padam |
|------|------------|--|---|
| 1122 | TB_3.3.2.4 | प्रतितिष्ठति प्रजया पशुभिर्यजमानः अथो    |   |
| 1123 | TB_3.3.2.5 | नवदावो ह्येषां प्रियः यावत्प्रियो        |   |
| 1124 | TB_3.3.3.1 | अयज्ञो वा एषः योऽपत्नीकः                 |   |
| 1125 | TB_3.3.3.2 | यत् पश्चात्-प्राच्यन्वासीत अनया समदं     |   |
| 1126 | TB_3.3.3.3 | तेनैवैनां व्रतमुपनयति तस्मादाहुः यश्चैवं |   |
| 1127 | TB_3.3.3.4 | योगक्षेमस्य क्रुप्त्यै युक्तं क्रियाता   |   |
| 1128 | TB_3.3.3.5 | अथो अर्द्धो वा एष                        |   |
| 1129 | TB_3.3.4.1 | घृतं च वै मधु                            |   |
| 1130 | TB_3.3.4.2 | मिथुनत्वाय प्रजात्यै यद्वै पत्नी         |   |
| 1131 | TB_3.3.4.3 | तेजो वा अग्निः तेज                       |   |
| 1132 | TB_3.3.4.4 | तद्वा अतः पवित्राभ्यामेवोत् पुनाति       |   |
| 1133 | TB_3.3.4.5 | एषां लोकानामाप्त्यै त्रिः त्र्यावृद्धि   |   |
| 1134 | TB_3.3.4.6 | एषा हि विश्वेषां देवानां                 |   |
| 1135 | TB_3.3.5.1 | देवासुराः सम्यता आसन्न स                 | TB_1.5.9.1                                |
| 1136 | TB_3.3.5.2 | अथ केनाज्यमिति सत्येनेति ब्रूयात्        |   |
| 1137 | TB_3.3.5.3 | छन्दाश्सि वा आज्यम् छन्दाश्स्येव         |   |

| SNo  | Panchasat   | Beginning   | Other Panchasat beginning with |
|------|-------------|---|--------------------------------|
|      |             |   | same<br>Padam                  |
| 1138 | TB_3.3.5.4  | चतुष्पादः पशवः पशुष्वे-वोपरिष्टात्-प्रतितिष्ठति यजमानदेव-<br>त्या |                                |
| 1139 | TB_3.3.5.5  | अष्टावुपभृति तस्माद्ष्टाशफा चतुर्द्भुवायाम् तस्माचतुः             |                                |
| 1140 | TB_3.3.6.1  | आपो देवीरग्रेपुवो अग्रेगुव इत्याह                                 |                                |
| 1141 | TB_3.3.6.2  | तेनापः प्रोक्षिताः अग्निर् देवेभ्यो                               |                                |
| 1142 | TB_3.3.6.3  | प्रजा एव पृथिव्यां प्रतिष्ठापयति                                  |                                |
| 1143 | TB_3.3.6.4  | तादृगेव तत् स्वधा पितृभ्य   |                                |
| 1144 | TB_3.3.6.5  | ऊर्जा पृथिवीं गच्छतेत्याह पृथिव्यामेवोर्जं                        |                                |
| 1145 | TB_3.3.6.6  | यज्ञस्य धृत्यै पुरस्तात् प्रस्तरं                                 |                                |
| 1146 | TB_3.3.6.7  | अपरिमितं गृह्णाति अपरिमितस्यावरुद्धयै तस्मिन्                     |                                |
| 1147 | TB_3.3.6.8  | बर्.हिः स्तृणाति प्रजा वै   |                                |
| 1148 | TB_3.3.6.9  | विश्वमेवायुर्-यजमाने द्धाति इन्द्रस्य बाहुरसि                     |                                |
| 1149 | TB_3.3.6.10 | वीतिहोत्रं त्वा कव इत्याह   |                                |
| 1150 | TB_3.3.6.11 | असौ वै जुहूः अन्तरिक्षमुपभृत्                                     |                                |
| 1151 | TB_3.3.7.1  | अग्निना वै होत्रा देवा  |                                |
| 1152 | TB_3.3.7.2  | ऊर्द्धे समिधावाद्धाति अनूयाजेभ्यः समिधमतिशिनष्टि                  |                                |
| 1153 | TB_3.3.7.3  | त्रिरुपवाजयति त्रयो वै प्राणाः                                    |                                |

| SNo  | Panchasat   |   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|------|-------------|---|---|
| 1154 | TB_3.3.7.4  | अथो रक्षसामपहत्यै परिधीन्थ्-संमार्ष्टि पुनात्येवैनान् |   |
| 1155 | _           | तिष्ठन्नन्यम् यथाऽनो वा रथम्वा                        |   |
| 1156 | TB_3.3.7.6  | अग्निर्वे देवानां यष्टा य                             |   |
| 1157 | TB_3.3.7.7  | ताभ्यामेव प्रति प्रोच्यात्याक्रामित विजिहाथां         |   |
| 1158 | TB_3.3.7.8  | इन्द्रियमेव यजमाने द्धाति समारभ्योर्द्धो              |   |
| 1159 | TB_3.3.7.9  | सुवर्गो वै लोको बृहद्भाः                              |   |
| 1160 | TB_3.3.7.10 | अग्निर्वाव पवित्रम् वृजिनमनृतं दुश्चरितम्             |   |
| 1161 | TB_3.3.7.11 | आघार-माघार्य ध्रुवाश् समनक्ति आत्मन्नेव               |   |
| 1162 | TB_3.3.8.1  | धिष्णिया वा एते न्युप्यन्ते                           |   |
| 1163 | TB_3.3.8.2  | यजमानायैव तल्लोकश शिश्षित नास्य                       |   |
| 1164 | TB_3.3.8.3  | तां प्रजातिं यजमानोऽनु प्रजायते                       |   |
| 1165 | TB_3.3.8.4  | मुखिमव प्रत्युपह्वयेत समुंखानेव पशूनुपह्वयते          |   |
| 1166 | TB_3.3.8.5  | यां वै हस्त्यामिडामाद्धाति वाचः                       |   |
| 1167 | TB_3.3.8.6  | न मयाऽभागया ऽनुवक्ष्यथेति वागब्रवीत्                  |   |
| 1168 | TB_3.3.8.7  | यजमानो वै पुरोडाशः प्रजा                              |   |
| 1169 | TB_3.3.8.8  | ब्रह्मा होताऽद्धर्युरग्नीत् तमभिमृशेत् इदं            |   |
| 1170 | TB_3.3.8.9  | अग्निमुखा ह्युद्धिः अग्निमुखामेवर्द्धिँ यजमान         |   |

| SNo  | Panchasat   | Beginning   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|------|-------------|---|---|
| 1171 |             | सविता यज्ञस्य प्रसूत्यै अथ                                |   |
| 1172 | TB_3.3.8.11 | अन्या दक्षिणा नीयन्ते यज्ञस्य                             |   |
| 1173 | TB_3.3.9.1  | अथ स्नुचावनुष्टुग्भ्यां वाजवतीभ्यां व्यूहति               |   |
| 1174 | TB_3.3.9.2  | द्वाभ्याम् द्विप्रतिष्ठो हि वसुभ्यस्त्वा                  |   |
| 1175 | TB_3.3.9.3  | एभ्य एवैनं लोकेभ्योऽनक्ति अभिपूर्वमनक्ति                  |   |
| 1176 | TB_3.3.9.4  | प्रजां योनिं मा निर्मृक्षमित्याह                          |   |
| 1177 | TB_3.3.9.5  | यावद्वा अद्भर्युः प्रस्तरं प्रहरति                        |   |
| 1178 | TB_3.3.9.6  | यथायजुरेवैतत् अग्ने देव पणिभिर्-वीयमाण                    |   |
| 1179 | TB_3.3.9.7  | स्रुचौ सं प्रस्रावयति यदेव                                |   |
| 1180 | TB_3.3.9.8  | तानेव तेन प्रीणाति वैश्वदेव्यर्चा                         |   |
| 1181 | TB_3.3.9.9  | प्रजा वै पशवः सुम्नम्                                     |   |
| 1182 | TB_3.3.9.10 | अतिरिक्ताः फलीकरणाः अतिरिक्तमाज्योच्छेषणम् अतिरिक्त       |   |
| 1183 |             | अथो यद्-वेदश्च वेदिश्च भवतः                               |   |
| 1184 | TB_3.3.9.12 | तं कालेकाल आगते यजते                                      |   |
| 1185 | TB_3.3.10.1 | यो वा अयथादेवतं यज्ञमुपचरित                               |   |
| 1186 | TB_3.3.10.2 | न देवताभ्य आवृश्च्यते वसीयान्                             | TB_3.8.3.2                                |
| 1187 | TB_3.3.10.3 | आशिषमेवैतामाशास्ते पूर्णपात्रे अन्ततोऽनुष्टुभा चतुष्पद्वा |   |

| SNo  | Panchasat   | Beginning                                 | Other Panchasat beginning with same Padam |
|------|-------------|---|---|
| 1188 |             | प्रजाः प्रजनयन् यद्वै यज्ञ्स्य            |   |
| 1189 |             | परिवेषो वा एष वनस्पतीनाम्                 |   |
| 1190 |             | प्रजां पुष्टिमथो धनम् द्विपदो             |   |
| 1191 | TB_3.3.11.3 | अथास्मै नाम गृह्य प्रहरति                 |   |
| 1192 | TB_3.3.11.4 | इन्द्रो नयतु वृत्रहा यतो                  |   |
| 1193 | TB_3.4.1.1  | ब्रह्मणे ब्राह्मणमालभते क्षत्राय राजन्यम् |   |
| 1194 | TB_3.4.2.1  | गीताय सूतम् नृत्ताय शैलूषम्               |   |
| 1195 | TB_3.4.3.1  | श्रमाय कौलालम् मायायै कार्मारम्           |   |
| 1196 | TB_3.4.4.1  | सन्धये जारम् गेहायोपपतिम् निर्.ऋत्यै      |   |
| 1197 | TB_3.4.5.1  | नदीभ्यः पौञ्जिष्टम् ऋक्षीकाभ्यो नैषादम्   |   |
| 1198 | TB_3.4.6.1  | उथ्सादेभ्यः कुब्जम् प्रमुदे वामनम्        |   |
| 1199 | TB_3.4.7.1  | ऋत्यै स्तेनहृदयम् वैरहत्याय पिशुनम्       |   |
| 1200 | TB_3.4.8.1  | भायै दार्वाहारम् प्रभाया आग्नेन्धम्       |   |
| 1201 | TB_3.4.9.1  | अर्मेभ्यो हस्तिपम् जवायाश्वपम् पुष्ट्यै   |   |
| 1202 | TB_3.4.10.1 |   |   |
| 1203 | TB_3.4.11.1 | यम्यै यमसूम् अथर्वभ्योऽवतोकाम् सम्वथ्सराय |   |
| 1204 | TB_3.4.12.1 | सरोभ्यो धैवरम् वेशन्ताभ्यो दाशम्          |   |

| SNo  | Panchasat   | Beginning  | Other Panchasat beginning with same Padam |
|------|-------------|--|---|
| 1205 |             | प्रतिश्रुत्काया ऋतुलम् घोषाय भषम्                              |   |
| 1206 |             | बीभथ्सायै पौल्कसम् भूत्यै जागरणम्                              |   |
| 1207 |             | हसाय पुश्र्बलूमालभते वीणावादं गणकं                             |   |
| 1208 |             | अक्षराजाय कितवम् कृताय सभाविनम्                                |   |
| 1209 | TB_3.4.17.1 | भूम्यै पीठसर्पिणमालभते अग्नयेऽश्सलम् वायवे                     |   |
| 1210 | TB_3.4.18.1 | वाचे पुरुषमालभते प्राणमपानं व्यानमुदानः                        |   |
| 1211 | TB_3.4.19.1 | अथैतानरूपेभ्य आलभते अतिह्रस्व-मतिदीर्घम् अतिकृशम-<br>त्यश्सलम् |   |
| 1212 | TB_3.5.1.1  | सत्यं प्रपद्ये ऋतं प्रपद्ये                                    |   |
| 1213 | TB_3.5.2.1  | प्र वो वाजा अभिद्यवः   |   |
| 1214 | TB_3.5.2.2  | अच्छा देव विवासिस बृहदग्ने                                     |   |
| 1215 | TB_3.5.2.3  | अग्ने दीद्यतं बृहत् अग्निं                                     |   |
| 1216 | TB_3.5.3.1  | अग्ने महा असि ब्राह्मण   |   |
| 1217 | TB_3.5.3.2  | चमसो देवपानः अराश् इवाग्ने                                     |   |
| 1218 | TB_3.5.4.1  | अग्निर्, होता वेत्वग्निः होत्रं                                |   |
| 1219 | TB_3.5.5.1  | समिधो अग्न आज्यस्य वियन्तु                                     |   |
| 1220 | TB_3.5.6.1  | अग्निर्-वृत्राणि जङ्घनत् द्रविणस्युर्-विपन्यया समिद्धः         |   |

| SNo  | Panchasat   | Beginning   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|------|-------------|---|---|
| 1221 | TB_3.5.7.1  | अग्निर्-मूर्द्धा दिवः ककुत् पतिः                  |   |
| 1222 | TB_3.5.7.2  | वयः स्याम पतयो रयीणाम्                            |   |
| 1223 | TB_3.5.7.3  | युवश सिन्धूश रभिशस्ते-रवद्यात् अग्नीषोमा-वमुञ्चतं |   |
| 1224 | TB_3.5.7.4  | सजित्वानः सदासहम् वर् षिष्ठमूतये भर               |   |
| 1225 | TB_3.5.7.5  | उत द्विबर्,हा अमिनः सहोभिः                        |   |
| 1226 | TB_3.5.7.6  | अयाडग्नेः प्रिया धामानि अयाद्गजापतेः              |   |
| 1227 | TB_3.5.8.1  | उपहूतश रथन्तरश सह पृथिव्या                        | TB_3.5.13.1                               |
| 1228 | TB_3.5.8.2  | उपहूतो भक्षः सखा उप                               | TB_3.5.13.2                               |
| 1229 | TB_3.5.8.3  | दैव्या अद्भर्यव उपहूताः उपहूता                    | TB_3.5.13.3                               |
| 1230 | TB_3.5.9.1  | देवं बर्.हिः वसुवने वसुधेयस्य                     | TB_3.6.14.1                               |
| 1231 | TB_3.5.10.1 | इदं द्यावापृथिवी भद्रमभूत् आद्ध्मं                |   |
| 1232 | TB_3.5.10.2 | वृष्टिद्यावा रीत्यापा शम्भुवौ मयोभुवौ             |   |
| 1233 | TB_3.5.10.3 | अवीवृधत महो ज्यायोऽकृत प्रजापतिरिदश               |   |
| 1234 |             | अवीवृधत महो ज्यायोऽकृत देवा                       |   |
| 1235 |             | उत्तरां देवयज्या-माशास्ते भूयो हविष्करण-माशास्ते  |   |
| 1236 | TB_3.5.11.1 | तच्छं योरा वृणीमहे गातुं                          |   |
| 1237 | TB_3.5.12.1 | आ प्यायस्व{1}" सं ते                              |   |

| SNo  | Panchasat   | Beginning  | Other Panchasat beginning with same Padam |
|------|-------------|--|---|
| 1238 | TB_3.5.12.2 | अग्निर्, होता गृहपतिः स                                      |   |
| 1239 | TB_3.5.13.1 | उपहूतश रथन्तरश सह पृथिव्या                                   | TB_3.5.8.1                                |
| 1240 | _           | उपहूतो भक्षः सखा उप  | TB_3.5.8.2                                |
| 1241 | TB_3.5.13.3 | दैव्या अद्धर्यव उपहूताः उपहूता                               | TB_3.5.8.3                                |
| 1242 | TB_3.6.1.1  | अञ्जन्ति त्वामद्धरे देवयन्तः वनस्पते                         |   |
| 1243 | TB_3.6.1.2  | आरे अस्मदमतिं बाधमानः उच्छ्रयस्व                             |   |
| 1244 | TB_3.6.1.3  | जातो जायते सुदिनत्वे अह्नाम्                                 |   |
| 1245 | TB_3.6.1.4  | अग्निर्-यज्ञ्स्य हव्यवाट् तश् सबाधो                          |   |
| 1246 | TB_3.6.2.1  | होता यक्षदग्निश् समिधा सुषमिधा                               |   |
| 1247 | TB_3.6.2.2  | होता यक्षद्-दुर ऋष्वाः कवष्योऽकोषधावनी-रुदाताभिर्-<br>जिहतां |   |
| 1248 | TB_3.6.3.1  | समिद्धो अद्य मनुषो दुरोणे                                    |   |
| 1249 | TB_3.6.3.2  | ते सुऋतवः शुचयो धियधाः                                       |   |
| 1250 | TB_3.6.3.3  | व्यचस्वतीरुर्विया विश्रयन्ताम् पतिभ्यो नजनयः                 |   |
| 1251 | TB_3.6.3.4  | प्रचोदयन्ता विद्थेषु कारू प्राचीनं                           |   |
| 1252 | TB_3.6.3.5  | उपावसृजत्-त्मन्या समञ्जन्न देवानां पाथ                       |   |
| 1253 | TB_3.6.4.1  | अग्निर्, होता नो अद्धरे                                      |   |

| SNo  | Panchasat   | Beginning                                     | Other Panchasat beginning with same Padam |
|------|-------------|---|---|
| 1254 | TB_3.6.5.1  | अजैदग्निः असनद्वाजं नि देवो                   |   |
| 1255 | TB_3.6.6.1  | दैव्याः शमितार उत मनुष्या                     |   |
| 1256 | TB_3.6.6.2  | सूर्यं चक्षुर्गमयतात् वातं प्राणमन्व-वसृजतात् |   |
| 1257 | TB_3.6.6.3  | राला दोषणी करयपेवाश्सा अच्छिद्रे              |   |
| 1258 | TB_3.6.6.4  | उरूकं मन्यमानाः नेद्वस्तोके तनये              |   |
| 1259 | TB_3.6.7.1  | जुषस्व सप्रथस्तमम् वचो देवफ्सरस्तमम्          |   |
| 1260 | TB_3.6.7.2  | श्रेष्ठं नो धेहि वार्यम्                      |   |
| 1261 | TB_3.6.8.1  | आ वृत्रहणा वृत्रहभिः शुष्मैः                  |   |
| 1262 | TB_3.6.8.2  | नान्या युवत्प्रमतिरस्ति मह्यम् स              |   |
| 1263 | TB_3.6.9.1  | गीर्भिर्विप्रः प्रमतिमिच्छमानः ई रियं         |   |
| 1264 | TB_3.6.10.1 | त्वश् ह्यग्ने प्रथमो मनोता                    |   |
| 1265 | TB_3.6.10.2 | रुशन्तमग्निं दर्.शतं बृहन्तम् वपावन्तं        |   |
| 1266 | TB_3.6.10.3 | स पर्येण्यः स प्रियो                          |   |
| 1267 | TB_3.6.10.4 | प्रेतीषणिमिषयन्तं पावकम् राजन्तमिः यजतः       |   |
| 1268 | TB_3.6.10.5 | आ यस्ततन्थ रोदसी वि                           |   |
| 1269 | TB_3.6.11.1 | आ भरतश शिक्षतं वज्रबाहू                       |   |
| 1270 | TB_3.6.11.2 | घासे अज्राणां यवसप्रथमानाम् सुमत्क्षराणाः     |   |

| SNo  | Panchasat   | Beginning  | Other Panchasat beginning with same Padam |
|------|-------------|--|---|
| 1271 |             | प्रदक्षिणिद्-रशनया नियूय ऋतस्य विक्ष                 |   |
| 1272 |             | करदेवं देवो वनस्पतिः जुषताः                          |   |
| 1273 |             | उपोह यद्विदथं वाजिनो गूः                             |   |
| 1274 | TB_3.6.12.2 | अयाङ्वनस्पतेः प्रिया पाथाश्सि अयाङ्देवाना-माज्यपानां |   |
| 1275 | TB_3.6.13.1 | देवं बर्.हिः सुदेवं देवैः                            |   |
| 1276 | TB_3.6.14.1 | देवं बर्.हिः वसुवने वसुधेयस्य                        | TB_3.5.9.1                                |
| 1277 | TB_3.6.14.2 | देवा दैव्या होतारा वसुवने                            |   |
| 1278 | TB_3.6.14.3 | देवो अग्निः स्विष्टकृत् सुद्रविणा                    |   |
| 1279 | TB_3.6.15.1 | अग्निमद्य होतारमवृणीतायं यजमानः पचन्                 |   |
| 1280 | TB_3.7.1.1  | सर्वान्. वा एषोऽग्नौ कामान्                          |   |
| 1281 | TB_3.7.1.2  | कामप्रीता एनं कामा अनुप्रयान्ति                      |   |
| 1282 | TB_3.7.1.3  | मनसैव यज्ञ्श् सन्तनोति भूरित्याह                     |   |
| 1283 | TB_3.7.1.4  | तृतीयेन ज्योतिषा सम्विशस्व सम्वेशनस्तनुवै            |   |
| 1284 | TB_3.7.1.5  | तान्. यदुह्यात् यातयाम्ना हविषा                      |   |
| 1285 | TB_3.7.1.6  | अथोत्तरस्मै हविषे वथ्सानपा कुर्यात्                  |   |
| 1286 | TB_3.7.1.7  | अथेतर ऐन्द्रः पुरोडाशः स्यात्                        |   |
| 1287 | TB_3.7.1.8  | ऐन्द्रं पञ्चशराव-मोदनं निर्वपेत् अग्निं              |   |

| SNo  | Panchasat  |   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|------|------------|---|---|
| 1288 | TB_3.7.1.9 | सैव ततः प्रायश्चित्तिः अर्द्धो                              |   |
| 1289 | TB_3.7.2.1 | यद्भिः षण्णेन जुहुयात् अप्रजा                               |   |
| 1290 | TB_3.7.2.2 | भूतिमेवोपैति तत् कृत्वा अन्यां                              |   |
| 1291 | TB_3.7.2.3 | तत्कृत्वा अन्यां दुग्ध्वा पुनर्.                            |   |
| 1292 | TB_3.7.2.4 | मित्रो दाधार पृथिवीमुत द्यां                                |   |
| 1293 | TB_3.7.2.5 | चतुष्पाद्भिः पशुभि-र्यजमानो व्युद्ध्येत यत्र                |   |
| 1294 | TB_3.7.2.6 | यद् दक्षिणा ब्रह्मणे च                                      |   |
| 1295 | TB_3.7.2.7 | स्रुवस्य बुद्ग्नेनाभि निदद्ध्यात् मा                        |   |
| 1296 | TB_3.7.3.1 | वि वा एष इन्द्रियेण   |   |
| 1297 | TB_3.7.3.2 | अजस्य तु नारञीयात् यदजस्या-रञीयात्                          |   |
| 1298 | TB_3.7.3.3 | ब्राह्मणं तु वसत्यै नापरुन्ध्यात्                           |   |
| 1299 | TB_3.7.3.4 | यद्दर्भानद्भ्यासीत यामेवाग्ना-वाहुतिं जुहुयात् तामद्भ्यासीत |   |
| 1300 | TB_3.7.3.5 | या मेवाफ्स्वाहुतिं जुहुयात् तां                             |   |
| 1301 | TB_3.7.3.6 | गर्भश् स्रवन्तमगदमकः अग्नि-रिन्द्र-स्त्वष्टा बृहस्पतिः      |   |
| 1302 | TB_3.7.3.7 | अग्निरित्याह अग्निर्वे रेतोधाः रेत                          |   |
| 1303 | TB_3.7.4.1 | याः पुरस्तात् प्रस्नवन्ति उपरिष्टाथ्                        |   |
| 1304 | TB_3.7.4.2 | सोमपीथाय संनयितुं वकल-मन्तरमाददे आपो                        |   |

| SNo  | Panchasat   | Beginning   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|------|-------------|---|---|
| 1305 | TB_3.7.4.3  | अग्निं गृह्णामि सुरथं यो                          |   |
| 1306 | TB_3.7.4.4  | अग्निर्, हव्यवाडिह तानावहतु पौर्णमासः             |   |
| 1307 | TB_3.7.4.5  | स्व आयतने मनीषया इह                               |   |
| 1308 | TB_3.7.4.6  | विजयभागः समिन्धतां अग्ने दीदाय                    |   |
| 1309 | TB_3.7.4.7  | रुद्रेभ्यो यज्ञं प्रब्रवीमि इदमहं                 |   |
| 1310 | TB_3.7.4.8  | व्रतानां व्रतपते व्रतं चरिष्यामि                  |   |
| 1311 | TB_3.7.4.9  | त्रीन् परिधीश्स्तिस्रः समिधः यज्ञायुरनुसंचरान्    |   |
| 1312 | TB_3.7.4.10 | आच्छेत्ता वो मा रिषं                              |   |
| 1313 | TB_3.7.4.11 | त्रिवृत् पलाशे दर्भः इयान्                        |   |
| 1314 | TB_3.7.4.12 | अयं प्राणश्चापानश्च यजमान-मपिगच्छतां यज्ञे        |   |
| 1315 | TB_3.7.4.13 | शिवेयः रज्जुरभिधानी अघ्निया-मुपसेवतां अप्रस्नःसाय |   |
| 1316 | TB_3.7.4.14 | अमृन्मयं देवपात्रं यज्ञस्यायुषि प्रयुज्यतां       |   |
| 1317 | _           | बह्वी र्भवन्तीरुप जायमानाः इह                     |   |
| 1318 |             | उथ्सं दुहन्ति कलशं चतुर्बिलं                      |   |
| 1319 |             | वथ्सेभ्यो मनुष्येभ्यः पुनर्दोहाय कल्पतां          |   |
| 1320 | TB_3.7.4.18 | पर्णवल्कः पवित्रं सौम्यः सोमाद्धि                 |   |
| 1321 | TB_3.7.5.1  | देवा देवेषु पराऋमद्धं प्रथमा                      |   |

| SNo  | Panchasat   | Beginning                                       | Other Panchasat beginning with same Padam |
|------|-------------|---|---|
| 1322 | TB_3.7.5.2  | मुखमपोहामि सूर्यज्योति र्विभाहि महत             |   |
| 1323 |             | घृतस्य धारया सुरोवं कल्पयामि                    |   |
| 1324 | TB_3.7.5.4  | देवाः पितरः पितरो देवाः                         |   |
| 1325 | TB_3.7.5.5  | पृथिवी माता प्रजापति र्बन्धुः                   |   |
| 1326 | TB_3.7.5.6  | आज्येन प्रत्यनज्म्येनत् तत्त आप्यायतां          |   |
| 1327 | TB_3.7.5.7  | इडे भागं जुषस्व नः                              |   |
| 1328 | TB_3.7.5.8  | दैवीश्च मानुषीश्च अहोरात्रे मे                  |   |
| 1329 | TB_3.7.5.9  | विधेम हविषा वयं भजतां                           |   |
| 1330 | TB_3.7.5.10 | सोम्यानाः सोमपीथिनां निर्भक्तो ब्राह्मणः        |   |
| 1331 | TB_3.7.5.11 | उपनिषदे सुप्रजास्त्वाय सं पत्नी                 |   |
| 1332 | TB_3.7.5.12 | ऊर्जो भागः शतऋतू एतद्वां                        |   |
| 1333 | TB_3.7.5.13 | मा नो विदद्-वजना द्वेष्या                       |   |
| 1334 | TB_3.7.6.1  | परिस्तृणीत परिधत्ताग्निं परिहितो-ऽग्नि र्यजमानं |   |
| 1335 | TB_3.7.6.2  | देवेन सवित्रा प्रसूत आर्त्विज्यं                |   |
| 1336 | TB_3.7.6.3  | प्रजापति र्विश्वेभ्यो देवेभ्यः विश्वे           |   |
| 1337 | TB_3.7.6.4  | अन्तर्दूतश्चरति मानुषीषु चतुः शिखण्डा           |   |
| 1338 | TB_3.7.6.5  | यो ब्रह्मणा कर्मणा द्वेष्टि                     |   |

| SNo  | Panchasat   | Beginning  | Other Panchasat beginning with same Padam |
|------|-------------|--|---|
| 1339 | TB_3.7.6.6  | सा मे धुक्ष्व यजमानाय                                |   |
| 1340 | TB_3.7.6.7  | अस्मिन्. यज्ञ् उप भूय                                |   |
| 1341 | TB_3.7.6.8  | सीदन्ती देवी सुकृतस्य लोके                           |   |
| 1342 |             | यत्रर्.षयः प्रथमजा ये पुराणाः                        |   |
| 1343 | TB_3.7.6.10 | इदमस्य चित्तमधरं ध्रुवायाः अहमुत्तरो                 |   |
| 1344 | TB_3.7.6.11 | अधरे मथ्सपत्नाः इयश स्थाली                           |   |
| 1345 | TB_3.7.6.12 | सर्वतो मां भूतं भविष्य-च्छ्रयतां                     |   |
| 1346 | TB_3.7.6.13 | येनासिञ्चद् बलमिन्द्रे प्रजापतिः इदं                 |   |
| 1347 | TB_3.7.6.14 | तेन लोकान्थ् सूर्यवतो जयेम                           |   |
| 1348 | TB_3.7.6.15 | वाजजित्यायै संमार्ज्मि अग्निमन्ना-दमन्नाद्याय उपहूतो |   |
| 1349 | TB_3.7.6.16 | आयुषे वर्चसे जीवात्वै पुण्याय                        |   |
| 1350 | TB_3.7.6.17 | अग्ने यो नोऽभिदासति समानो                            |   |
| 1351 | TB_3.7.6.18 | वाजं जिगिवाश्सं वाजिनं वाजितं                        |   |
| 1352 | TB_3.7.6.19 | दिवः खीलोऽवततः पृथिव्या अद्भ्युत्थितः                |   |
| 1353 |             | सुभूतेन मे संतिष्ठस्व ब्रह्मवर्चसेन                  |   |
| 1354 |             | उलूखले मुसले यच शूर्पे                               |   |
| 1355 | TB_3.7.6.22 | उद्यन्नद्य वि नो भज                                  |   |

| SNo  | Panchasat   | Beginning                                 | Other Panchasat beginning with same Padam |
|------|-------------|---|---|
| 1356 |             | अथो हारिद्रवेषु मे हरिमाणं                |   |
| 1357 |             | यो नः सपत्नो यो                           |   |
| 1358 | TB_3.7.7.1  | सक्षेदं पश्य विधर्तरिदं पश्य              |   |
| 1359 | TB_3.7.7.2  | ब्रह्मासि क्षत्रस्य योनिः क्षत्रमस्यृतस्य |   |
| 1360 | TB_3.7.7.3  | ज्योग्जीवा जरामशीमहि इन्द्र शाकर          |   |
| 1361 | TB_3.7.7.4  | तां ते युनज्मि आऽहं                       |   |
| 1362 | TB_3.7.7.5  | तयाऽग्नि दीक्षया दीक्षितः ययाऽग्नि        |   |
| 1363 | TB_3.7.7.6  | तया त्वा दीक्षया दीक्षयामि                |   |
| 1364 | TB_3.7.7.7  | तया सोमो राजा दीक्षया                     |   |
| 1365 | TB_3.7.7.8  | दिशस्त्वा दीक्षमाणमनु दीक्षन्तां आपस्त्वा |   |
| 1366 | TB_3.7.7.9  | आपश्चौषधयश्च ऊर्क्च सूनृता च              |   |
| 1367 |             | तपो मे प्रतिष्ठा सवितृ-प्रसूता            |   |
| 1368 |             | विश्वे देवा यजमानश्च सीदत                 |   |
| 1369 |             | सख्यात्ते मा योषं सख्यान्मे               |   |
| 1370 |             | परो रजास्ते पञ्चमः पादः                   |   |
| 1371 | TB_3.7.7.14 | वर्ष्मन्दिवः नाभा पृथिव्याः यथाऽयं        |   |
| 1372 | TB_3.7.8.1  | यदस्य पारे रजसः शुक्रं                    |   |

| SNo  | Panchasat   | Beginning                               | Other Panchasat beginning with same Padam |
|------|-------------|---|---|
| 1373 | TB_3.7.8.2  | प्रजाभ्यः सर्वाभ्यो मृड नमो             |   |
| 1374 | TB_3.7.8.3  | य इदमकः तस्मै नमः                       |   |
| 1375 | TB_3.7.9.1  | अनागसस्त्वा वयं इन्द्रेण प्रेषिता       |   |
| 1376 | TB_3.7.9.2  | युक्ताः स्थ वहत देवा                    |   |
| 1377 | TB_3.7.9.3  | प्राणश्च त्वाऽपानश्च श्रीणीतां चक्षुश्च |   |
| 1378 | TB_3.7.9.4  | यो देवानां देवतमस्तपोजाः तस्मै          |   |
| 1379 | TB_3.7.9.5  | तस्य सुम्नमशीमहि तस्य भक्षमशीमहि        |   |
| 1380 | TB_3.7.9.6  | प्र ते महे विद्थे                       |   |
| 1381 | TB_3.7.9.7  | इन्द्रश्च सम्राड् वरुणश्च राजा          |   |
| 1382 | TB_3.7.9.8  | उद्याने यत्परायणे आवर्तने विवर्तने      |   |
| 1383 | TB_3.7.9.9  | सर्वान् पथो अनृणा आक्षीयेम              |   |
| 1384 | TB_3.7.10.1 | उदस्तांफ्सीथ् सविता मित्रो अर्यमा       |   |
| 1385 | TB_3.7.10.2 | दैव्यः केतु र्विश्वं भुवन-माविवेश       |   |
| 1386 | TB_3.7.10.3 | देवा नो यज्ञ-मृजुधा नयन्तु              |   |
| 1387 |             | स्कन्नेमा विश्वा भुवना स्कन्नो          |   |
| 1388 | TB_3.7.10.5 | अदितिरूत्या-ऽऽगमत् सा शन्ताची मयस्करत्  |   |
| 1389 | TB_3.7.10.6 | अप स्निधः तदित्पदं न                    |   |

| SNo  | Panchasat   | Beginning                               | Other Panchasat beginning with same Padam |
|------|-------------|---|---|
| 1390 | TB_3.7.11.1 | ब्रह्म प्रतिष्ठा मनसो ब्रह्म            |   |
| 1391 | TB_3.7.11.2 | यद्वो देवा अतिपादयानि वाचा              |   |
| 1392 |             | इमं मे वरुण{9}" तत्त्वा                 |   |
| 1393 |             | ऋद्भ्यै स्वाहा समृद्भ्यै स्वाहा         |   |
| 1394 | TB_3.7.11.5 | आप्यायय हरिवो वर्द्धमानः यदा            |   |
| 1395 | TB_3.7.12.1 | यद्देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा वयं       |   |
| 1396 | TB_3.7.12.2 | ऋतेन द्यावापृथिवी ऋतेन त्वश             |   |
| 1397 | TB_3.7.12.3 | शिश्ञै र्यदनृतं चकुमा वयं               |   |
| 1398 | TB_3.7.12.4 | एनश्चकार यत्पिता अग्निर्मा तस्मादेनसः   |   |
| 1399 | TB_3.7.12.5 | यदेनश्च कृमा नूतनं यत्पुराणं            |   |
| 1400 |             | गार्.हपत्यः प्रमुञ्चतु दुरिता यानि      |   |
| 1401 | TB_3.7.13.1 | यते ग्राव्.ण्णा चिच्छिदुः सोम           |   |
| 1402 | TB_3.7.13.2 | त्वया तथ्सोम गुप्तमस्तु नः              |   |
| 1403 |             | उपक्षरन्ति जुह्वो घृतेन प्रियाण्यङ्गानि |   |
| 1404 | TB_3.7.13.4 | यदागच्छात् पथिभि र्देवयानैः इष्टापूर्ते |   |
| 1405 | TB_3.7.14.1 | यिददिक्षे मनसा यच वाचा                  |   |
| 1406 | TB_3.7.14.2 | शुक्रा दीक्षायै तपसो विमोचनीः           |   |

| SNo  | Panchasat   | Beginning   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|------|-------------|---|---|
| 1407 |             | अग्नेः प्रियतमश् हविः स्वाहा                            |   |
| 1408 |             | देवेभ्यः पितृभ्यः स्वाहा सोम्येभ्यः                     |   |
| 1409 | TB_3.7.14.5 | अभि नः शीयताश रियः                                      |   |
| 1410 | TB_3.8.1.1  | साग्रंहण्येष्ट्या यजते इमां जनताश                       |   |
| 1411 | TB_3.8.2.1  | चतुष्टय्य आपो भवन्ति चतुरराफो                           |   |
| 1412 | TB_3.8.2.2  | चतुरशरावो भवति दिक्ष्वेव प्रतितिष्ठति                   |   |
| 1413 | TB_3.8.2.3  | यदाज्य-मुच्छिष्यते तस्मिन्-रशनां न्युनत्ति प्रजापतिर्वा |   |
| 1414 | TB_3.8.2.4  | यद्दर्भमयी रशना भवति पुनात्येवैनम्                      |   |
| 1415 | TB_3.8.3.1  | यो वै ब्रह्मणे देवेभ्यः                                 |   |
| 1416 | TB_3.8.3.2  | न देवताभ्य आवृश्च्यते वसीयान्                           | TB_3.3.10.2                               |
| 1417 | TB_3.8.3.3  | तदाहुः द्वादशारत्नी रशना कर्तव्या3                      |   |
| 1418 | TB_3.8.3.4  | यथर्.षभस्य विष्टपश् सश्स्करोति तादृगेव                  |   |
| 1419 | TB_3.8.3.5  | तस्मा-दश्वमेधयाजी सर्वाणि भूतान्यभि भवति                |   |
| 1420 | TB_3.8.3.6  | प्रजयैवैनं पशुभिः प्रथयति स्वाहाकृत                     |   |
| 1421 | TB_3.8.4.1  | यः पितुरनुजायाः पुत्रः स                                |   |
| 1422 | TB_3.8.4.2  | कर्म कर्मैवास्मै साधयति पौश्र्यलेयो                     |   |
| 1423 | TB_3.8.5.1  | चत्वार ऋत्विजः समुक्षन्ति आभ्य                          |   |

| SNo  | Panchasat  | Beginning  | Other Panchasat beginning with same Padam |
|------|------------|--|---|
| 1424 | TB_3.8.5.2 | दक्षिणत उदङ्गिष्ठन् प्रोक्षति अनेनाश्चेन             |   |
| 1425 | TB_3.8.5.3 | बहुग्वै बह्वश्वायै बह्वजाविकायै बहुव्रीहियवायै       |   |
| 1426 | TB_3.8.5.4 | अनेनाश्वेन मेद्ध्ये नेष्ट्वा अयः                     |   |
| 1427 | TB_3.8.6.1 | यथा वै हविषो गृहीतस्य                                | TB_3.8.8.1                                |
| 1428 | TB_3.8.6.2 | यत्परिमिता अनुब्रूयात् परिमितमवरुन्धीत अपरिमिता      |   |
| 1429 | TB_3.8.6.3 | अस्यामेवैनाः प्रतिष्ठापयति उवाच ह                    |   |
| 1430 | TB_3.8.6.4 | सरस्वत्यै स्वाहेत्याह सरस्वत्या एवैनं                |   |
| 1431 | TB_3.8.6.5 | मित्राय स्वाहेत्याह मित्रायैवैनं जुहोति              |   |
| 1432 | TB_3.8.7.1 | प्रजापतये त्वा जुष्टं प्रोक्षामीति                   |   |
| 1433 | TB_3.8.7.2 | जवमेवास्मिन्दधाति तस्मादश्वः पशूनामाशुः सारसारितमः   |   |
| 1434 | TB_3.8.7.3 | सर्वेभ्यस्त्वा देवेभ्य इत्युपरिष्टात् सर्वे          |   |
| 1435 | TB_3.8.8.1 | यथा वै हविषो गृहीतस्य                                | TB_3.8.6.1                                |
| 1436 | TB_3.8.8.2 | तदाहुः अनाहुतयो वा अश्वचरितानि                       |   |
| 1437 | TB_3.8.8.3 | यस्या नायतने-ऽन्यत्राग्ने-राहुतीर् जुहोति सावित्रिया |   |
| 1438 | TB_3.8.8.4 | यद्यरमुखे यर्रमुखे जुहुयात् पशुभि-र्यजमानं           |   |
| 1439 | TB_3.8.9.1 | विभूर्मात्रा प्रभूः पित्रेत्याह इयं                  |   |
| 1440 | TB_3.8.9.2 | प्र यशः श्रैष्ठ्यमामोति य                            |   |

| SNo  | Panchasat   | Beginning  | Other Panchasat beginning with same Padam |
|------|-------------|--|---|
| 1441 | TB_3.8.9.3  | आदित्यानां पत्वा-ऽन्विहीत्याह आदित्यानेवैनं गमयति    |   |
| 1442 | TB_3.8.9.4  | एता वा अश्वस्य बन्धनम्                               |   |
| 1443 |             | राष्ट्रादेव ते व्यवच्छिद्यन्ते परा                   |   |
| 1444 | TB_3.8.10.1 | प्रजापति-रकामयताश्वमेधेन यजेयेति स तपोऽतप्यत         |   |
| 1445 | TB_3.8.10.2 | सप्त जुहोति सप्त हि                                  |   |
| 1446 | TB_3.8.10.3 | एकविश्शतिं वैश्वदेवानि जुहोति एकविश्शतिर्वे          |   |
| 1447 | TB_3.8.10.4 | त्रिश्शतमौद्ग्रहणानि जुहोति त्रिश्शदक्षरा विराट्     |   |
| 1448 | TB_3.8.10.5 | यो दीक्षामति-रेचयति सप्ताहं प्रचरन्ति                |   |
| 1449 | TB_3.8.11.1 | प्रजापति-रश्वमेध-मसृजत तश् सृष्टं न                  |   |
| 1450 | TB_3.8.11.2 | अदित्यै स्वाहाऽदित्यै मह्यै स्वाहाऽदित्यै            |   |
| 1451 | TB_3.8.12.1 | सावित्र-मष्टकपालं प्रातर्निर्वपति अष्टाक्षरा गायत्री |   |
| 1452 | TB_3.8.12.2 | अथो माद्ध्यन्दिनमेव सवनं तेनामोति                    |   |
| 1453 | TB_3.8.12.3 | चतस्रो दिशः दिग्भिरेवैनं परिगृह्णाति                 |   |
| 1454 | TB_3.8.13.1 | आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी                    |   |
| 1455 |             | अनडुह्येव वीर्यं द्धाति तस्मात्पुरा                  |   |
| 1456 | TB_3.8.13.3 | यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सभेयो                         |   |
| 1457 | TB_3.8.14.1 | प्रजापति-र्देवेभ्यो यज्ञान् व्यादिशत् स              |   |

| SNo  | Panchasat   | Beginning   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|------|-------------|---|---|
| 1458 |             | देवानेव तैर्यजमानः प्रीणाति आज्येन                                |   |
| 1459 |             | महतीमेव तद्देवतां प्रीणाति तण्डुलै-र्जुहोति                       |   |
| 1460 |             | रुद्रानेव तत्प्रीणाति लाजैर्जुहोति आदित्यानां                     |   |
| 1461 |             | विश्वानेव तद्देवान् प्रीणाति धानाभि-र्जुहोति                      |   |
| 1462 | TB_3.8.14.6 | प्रजापतिमेव तत्प्रीणाति मसूस्यैर्जुहोति सर्वासां                  |   |
| 1463 | TB_3.8.15.1 |   |   |
| 1464 | TB_3.8.15.2 |   |   |
| 1465 |             | प्राणो वा आज्यम् उभयत   |   |
| 1466 |             | प्रजापतिं वा एष ईफ्सतीत्याहुः                                     |   |
| 1467 |             | एकवदेव सुवर्गं लोकमेति सन्ततं                                     |   |
| 1468 | TB_3.8.16.3 | त्रय इमे लोकाः इमानेव   |   |
| 1469 | TB_3.8.16.4 |   |   |
| 1470 | TB_3.8.17.1 |   |   |
| 1471 |             | पृथिव्यै स्वाहाऽन्तरिक्षाय स्वाहेत्ये-कविश्शिनीं दीक्षां          |   |
| 1472 |             | अर्वाङ्यज्ञः संक्रामि्व-त्याप्ती-र्जुहोति सुवर्गस्य लोकस्याप्त्यै |   |
| 1473 | TB_3.8.17.4 | दद्भ्यः स्वाहा हनूभ्याः स्वाहेत्यङ्गहोमा-ञ्जुहोति                 |   |

| SNo  | Panchasat   | Beginning   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|------|-------------|---|---|
| 1474 | TB_3.8.17.5 | वनस्पतिभ्यः स्वाहेति वनस्पति-होमाञ्जुहोति आरण्यस्यान्ना-<br>द्यस्यावरुद्धयै |   |
| 1475 | TB_3.8.18.1 | अम्भाश्सि जुहोति अयं वै   |   |
| 1476 | TB_3.8.18.2 | तस्य रुद्रा अधिपतयः वायुज्योंतिः  |   |
| 1477 | TB_3.8.18.3 | यन्महाश्सि जुहोति अमुमेव लोकमवरुन्धे  |   |
| 1478 | TB_3.8.18.4 | सिताय स्वाहा-ऽसिताय स्वाहेति प्रमुक्ती-र्जुहोति                             |   |
| 1479 |             | यः प्राणतो य आत्मदा   |   |
| 1480 |             | असौ भविष्यत् अनयोरेव लोकयोः   |   |
| 1481 | TB_3.8.18.7 | य उ चैनमेवं वेद   | TB_2.7.11.3                               |
|      |             |   | TB_3.9.22.3                               |
| 1482 |             | एकयूपो वैकादिशनी वा अन्येषां  |   |
| 1483 |             | पाप्मा वै तेजनी पाप्मनोऽपहत्यै  |   |
| 1484 | TB_3.8.20.1 | राज्जुदाल-मग्निष्ठं मिनोति भ्रूणहत्याया अपहत्यै                             |   |
| 1485 |             | षद्वालाशाः सोमपीथस्या-वरुद्ध्यै एकविश्शतिः संपद्यन्ते                       |   |
| 1486 | TB_3.8.20.3 | रातायुः पुरुषः रातेन्द्रियः आयुष्येवेन्द्रिये                               | TB_1.7.8.2                                |
|      |             |   | TB_1.8.6.5                                |
| 1487 | TB_3.8.20.4 | एषा वै वरुणस्य दिक्   |   |

| SNo  | Panchasat   | Beginning   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|------|-------------|---|---|
| 1488 |             | प्राणापाना-वेवास्मिन थ्सम्यञ्चौ द्धाति अश्वं                  |   |
| 1489 |             | एकविश्शोऽग्निर्भवति एकविश्शः स्तोमः एकविश्शतिर्यूपाः          |   |
| 1490 |             | एकादश यूपाः यद्वादशो-ऽग्निर्भवति द्वादश                       |   |
| 1491 |             | दुह एवैनां तेन तदाहुः   |   |
| 1492 | TB_3.8.21.4 | यो वा अश्वमेधे तिस्रः   |   |
| 1493 | TB_3.8.22.1 | देवा वा अश्वमेधे पवमाने                                       |   |
| 1494 | TB_3.8.22.2 | उद्गातार-मपरुद्ध्य अश्व-मुद्गीथाय वृणीते यथा                  |   |
| 1495 | TB_3.8.22.3 | वडबा उप रुन्धन्ति मिथुनत्वाय                                  |   |
| 1496 | TB_3.8.23.1 | पुरुषो वै यज्ञः यज्ञः   |   |
| 1497 | TB_3.8.23.2 | तस्मा-त्पूर्वाग्निं पुरस्ता-थ्स्थापयन्ति पौष्णमन्वञ्चम् अन्नं |   |
| 1498 | TB_3.8.23.3 | तस्माद् राजन्यो बाहुबली भावुकः                                |   |
| 1499 | TB_3.9.1.1  | प्रजापति-रश्वमेधमसृजत सोऽस्माथ्सृष्टो-ऽपाऋामत् तमष्टादिश-     |   |
|      |             | भिरनु प्रायुङ्क   |   |
| 1500 | TB_3.9.1.2  | सम्वथ्सरोऽष्टादशः यदष्टादिशन आलभ्यन्ते सम्वथ्सरमेव            |   |
| 1501 | TB_3.9.1.3  | ऋक्षीकाः पुरुषव्याघ्राः परिमोषिण आव्याधिनी-स्तस्करा           |   |
| 1502 | TB_3.9.1.4  | यज्ञ्वेशसं कुर्यात् यत्पशूनालभते तेनैव                        |   |
| 1503 | TB_3.9.2.1  | प्रजापतिर-कामयतोभौ लोकाव-वरुन्धीयेति स एतानुभयान्             |   |

| SNo  | Panchasat  | Beginning   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|------|------------|---|---|
| 1504 | TB_3.9.2.2 | अमुं तैः अनवरुद्धो वा   |   |
| 1505 | TB_3.9.2.3 | सुवर्गं तु लोकं नापराद्भोति   |   |
| 1506 | TB_3.9.2.4 | विराजमेव तैराह्वा यजमानो-ऽवरुन्धे एकादश                                       |   |
| 1507 | TB_3.9.3.1 | अस्मै वै लोकाय ग्राम्याः  |   |
| 1508 | TB_3.9.3.2 | ग्राम्याःश्चा-रण्याःश्च उभयस्या-न्नाद्यस्या-वरुद्ध्यै उभयान् प-<br>ज्ञूनालभते |   |
| 1509 | TB_3.9.3.3 | अस्मिन् लोके बहवः कामा  |   |
| 1510 | TB_3.9.4.1 | युञ्जन्ति ब्रद्धमित्याह असौ वा  |   |
| 1511 | TB_3.9.4.2 | इमे वै लोकाः परितस्थुषः   |   |
| 1512 | TB_3.9.4.3 | शोणा धृष्णू नृवाहसेत्याह अहोरात्रे  |   |
| 1513 | TB_3.9.4.4 | परा वा एतस्य यज्ञ्  |   |
| 1514 | TB_3.9.4.5 | भूर्भुवस्सुवरिति प्राजापत्या-भिरावयन्ति प्राजापत्यो वा                        |   |
| 1515 | TB_3.9.4.6 | ज्योतिश्चैवास्मै राष्ट्रं च समीची   |   |
| 1516 | TB_3.9.4.7 | रुद्रास्त्वा-ऽञ्जन्तु त्रैष्टुभेन छन्दसेति वावाता                             |   |
| 1517 | TB_3.9.4.8 | यत्पत्नयः श्रिय-मेवास्मिन् तद्दधति नास्मात्तेज                                |   |
| 1518 | TB_3.9.5.1 | तेजसा वा एष ब्रह्मवर्चसेन   |   |
| 1519 | TB_3.9.5.2 | उत्तरत आयतनो वै होता  |   |

| SNo  | Panchasat  | Beginning                                    | Other Panchasat beginning with same Padam |
|------|------------|--|---|
| 1520 | TB_3.9.5.3 | दिवमेव वृष्टिमवरुन्धे किश्स्विदासीद्-बृहद्भय |   |
| 1521 | TB_3.9.5.4 | कः स्विदेकाकी चरतीत्याह असौ                  |   |
| 1522 | TB_3.9.5.5 | अयं वै लोक आवपनं                             |   |
| 1523 | TB_3.9.6.1 | अप वा एतस्मा-त्प्राणाः ऋामन्ति               |   |
| 1524 | TB_3.9.6.2 | अथो धुवन्त्येवैनम् अथो न्येवास्मै            | TB_1.4.6.7                                |
| 1525 | TB_3.9.6.3 | ये यज्ञे धुवनं तन्वते                        |   |
| 1526 | TB_3.9.6.4 | सुवर्गमेवैनां लोकं गमयति आऽहमजानि            |   |
| 1527 | TB_3.9.6.5 | यथा यजुरेवैतत् त्रय्यः सूच्यो                |   |
| 1528 | TB_3.9.7.1 | अप वा एतस्माच्छ्री राष्ट्रं                  | TB_3.9.14.1                               |
| 1529 | TB_3.9.7.2 | श्रियमेवा-वरुन्धे शीते वाते पुनन्नि-वेत्याह  |   |
| 1530 | TB_3.9.7.3 | शूद्रा यदर्यजारा न पोषाय                     |   |
| 1531 | TB_3.9.7.4 | राष्ट्रं पसः राष्ट्रमव विश्याहन्ति           |   |
| 1532 | TB_3.9.7.5 | प्रसुलामीति ते पिता गभे                      |   |
| 1533 | TB_3.9.8.1 | प्रजापतिः प्रजाः सृष्ट्वा प्रेणाऽनु          |   |
| 1534 | TB_3.9.8.2 | वैराजो वै पुरुषः विराज-मेवालभते              |   |
| 1535 | TB_3.9.8.3 | यज्ञो वै गौः यज्ञमेवालभते                    |   |
| 1536 | TB_3.9.9.1 | प्रथमेन वा एष स्तोमन                         |   |

| SNo  | Panchasat   | Beginning  | Other Panchasat beginning with same Padam |
|------|-------------|--|---|
| 1537 |             | उतेव ग्राम्याः उतेवारण्याः अहरेव                               |   |
| 1538 |             | तेनैवोभयान् पशूनवरुन्धे प्राजापत्या भवन्ति                     |   |
| 1539 |             | प्रजापति-रकामयत महानन्नादः स्यामिति स                          |   |
| 1540 | TB_3.9.11.1 | वैश्वदेवो वा अश्वः तं  |   |
| 1541 | TB_3.9.11.2 | चतुर्दशैता-ननुवाकाञ्जुहोत्य-नन्तरित्यै प्रयासाय स्वाहेति पञ्च- |   |
|      |             | दशम्   |   |
| 1542 | TB_3.9.11.3 | पराऽसुराः यथ्स्वष्टकृद्भ्यो लोहितं जुहोति                      |   |
| 1543 | TB_3.9.11.4 | अश्वराफेन द्वितीया-माहुतिं जुहोति परावो                        |   |
| 1544 | TB_3.9.12.1 | अश्वस्य वा आलब्धस्य मेध  |   |
| 1545 | TB_3.9.12.2 | बार्.हताः पशवः सा पशूनां                                       |   |
| 1546 | TB_3.9.12.3 | अश्वस्तोमीयश हुत्वा द्विपदा जुहोति                             |   |
| 1547 | TB_3.9.13.1 | प्रजापति-रश्वमेध-मसृजत सो-ऽस्माथ्सृष्टो-ऽपाऋामत् तं यज्ञ्-     |   |
|      |             | ऋतुभि-रन्वैच्छत्   |   |
| 1548 | TB_3.9.13.2 | इयं वै सविता यो  |   |
| 1549 | TB_3.9.13.3 | यत्प्रातरिष्टिभि-र्यजते अश्वमेव तदन्विच्छति यथ्सायं            |   |
| 1550 | TB_3.9.14.1 | अप वा एतस्माच्छ्री राष्ट्रं                                    | TB_3.9.7.1                                |
| 1551 | TB_3.9.14.2 | प्रभ्रश्शुका-ऽस्माच्छ्रीः स्यात् न वै                          |   |

| SNo  | Panchasat   | Beginning   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|------|-------------|---|---|
| 1552 |             | न वै ब्राह्मणे राष्ट्रश्                                  |   |
| 1553 |             | इष्टापूर्ते-नैवैनश्स समद्र्धयति इत्यजिना                  |   |
| 1554 |             | सर्वेषु वा एषु लोकेषु                                     |   |
| 1555 |             | अशनया मृत्युरेव तमेवामुष्मिन् लोकेऽवयजते                  |   |
| 1556 | TB_3.9.15.3 | मृत्युमे वा हुत्या तर्पयित्वा                             |   |
| 1557 |             | वारुणो वा अश्वः तं  |   |
| 1558 | TB_3.9.16.2 | धर्मो वा अधिपतिः धर्ममेवा-वरुन्धे                         |   |
| 1559 | TB_3.9.16.3 | प्र वा एष एभ्यो   |   |
| 1560 |             | ब्रह्मक्षत्रे एवावरुन्धे यदाऽश्विनो भवति                  |   |
| 1561 |             | यद्यश्वमुपतपद्धिन्देत् आग्नेय-मष्टाकपालं निर्वपेत् सौम्यं |   |
| 1562 | TB_3.9.17.2 | ताभिरेवैनं भिषज्यति यथ्सावित्रो भवति                      |   |
| 1563 |             | रौद्रं चरुं निर्वपेत् यदि                                 |   |
| 1564 | TB_3.9.17.4 | अग्नये-ऽश्होमुचेऽष्टाकपालः सौर्यं पयः वायव्य              |   |
| 1565 | TB_3.9.17.5 | यस्याश्वो मेधाय प्रोक्षितो-ऽद्ध्येति सौर्यः               |   |
| 1566 | TB_3.9.18.1 | तदाहुः द्वादश ब्रह्मौदनान् थ्सश्स्थित                     |   |
| 1567 | TB_3.9.18.2 | साऽऽप्ता भवति यातयाम्नी ऋरीकृतेव                          |   |
| 1568 | TB_3.9.19.1 | एष वै विभूर्नाम यज्ञः                                     |   |

| SNo  | Panchasat   |   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|------|-------------|---|---|
| 1569 |             | सर्व १ ह वै तत्र  |   |
| 1570 |             | यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते एष                               |   |
| 1571 |             | तार्प्येणाश्वश् संज्ञपयन्ति यज्ञो वै                    |   |
| 1572 | TB_3.9.20.2 | रुक्मो भवति सुवर्गस्य लोकस्या-नुख्यात्यै                |   |
| 1573 | TB_3.9.20.3 | अन्तरिक्षं कृत्यधीवासेन दिवश हिरण्यकशिपुना              |   |
| 1574 | TB_3.9.21.1 | आदित्याश्चाङ्गिरसश्च सुवर्गे लोकेऽस्पद्र्धन्त तेऽङ्गिरस |   |
| 1575 | TB_3.9.21.2 | यच्छ्वयदरुरासीत् तस्मादर्वा नाम यथ्सद्यो                |   |
| 1576 | TB_3.9.21.3 | योनि-मानायतनवान् भवति स एवं                             |   |
| 1577 | TB_3.9.22.1 | प्रजापतिं वै देवाः पितरम्                               |   |
| 1578 | TB_3.9.22.2 | तस्मादश्वमेधः वेदुको-ऽश्वमाशुं भवति य                   |   |
| 1579 | TB_3.9.22.3 | य उ चैनमेवं वेद   | TB_2.7.11.3                               |
|      |             |   | TB_3.8.18.7                               |
| 1580 | TB_3.9.22.4 | प्राजापत्येनैव यज्ञेन यजते कामप्रेण                     |   |
| 1581 | TB_3.9.23.1 | यो वा अश्वस्य मेद्भ्यस्य                                |   |
| 1582 | TB_3.9.23.2 | यदर्.शपूर्णमासौ यजते अश्वस्यैव मेद्ध्यस्य               |   |
| 1583 | TB_3.10.1.1 | संज्ञानं विज्ञानं प्रज्ञानं जानदिभजानत्                 |   |
| 1584 | TB_3.10.1.2 | आवेशय-न्निवेशयन्थ्सम्वेशनः सश्शान्तः शान्तः आभवन्       |   |

| SNo  | Panchasat   | Beginning  | Other Panchasat beginning with same Padam |
|------|-------------|--|---|
| 1585 |             | कान्ता काम्या कामजाता ऽऽयुष्मती                    |   |
| 1586 |             | अरुणो ऽरुणरजाः पुण्डरीको विश्वजिद-भिजित्           |   |
| 1587 |             | भूरिग्नं च पृथिवीं च                               |   |
| 1588 |             | त्वमेव त्वां वेत्थ योऽसि                           |   |
| 1589 | TB_3.10.4.1 | सम्वथ्सरोऽसि परिवथ्सरोऽसि इदावथ्सरोऽसी-दुवथ्सरोऽसि |   |
|      |             | इद्रथ्सरोऽसि                                       |   |
| 1590 | TB_3.10.4.2 | अहोरात्रा-णीष्टकाः ऋषभोऽसि स्वर्गो लोकः            |   |
| 1591 | TB_3.10.4.3 | इन्दु र्दक्षः श्येन ऋतावा                          |   |
| 1592 | TB_3.10.5.1 | भूर्भुवः स्वः ओजो बलं                              |   |
| 1593 | TB_3.10.6.1 | राज्ञी विराज्ञी सम्राज्ञी स्वराज्ञी                |   |
| 1594 | TB_3.10.7.1 | असवे स्वाहा वसवे स्वाहा                            |   |
| 1595 | TB_3.10.8.1 | विपश्चिते पवमानाय गायत मही                         |   |
| 1596 | TB_3.10.8.2 | ये ते सहस्रमयुतं पाशाः                             |   |
| 1597 |             | अन्धो जागृविः प्राण असावेहि                        | TB_3.11.5.4                               |
| 1598 | TB_3.10.8.4 | सुहस्तः सुवासाः शूषो नामास्य-मृतो                  |   |
| 1599 | _           | प्राणो हृद्ये हृद्यं मिय                           |   |
| 1600 | TB_3.10.8.6 | मनो हृदये हृदयं मिय                                |   |

| SNo  | Panchasat   | Beginning   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|------|-------------|---|---|
| 1601 |             | रेतो हृदये हृदयं मिय                              |   |
| 1602 |             | लोमानि हृद्ये हृद्यं मिय                          |   |
| 1603 | TB_3.10.8.9 | मूद्र्धा हृदये हृदयं मिय                          |   |
| 1604 | TB_3.10.8.1 | ) आत्मा हृद्ये हृद्यं मयि                         |   |
| 1605 | TB_3.10.9.1 | प्रजापति देवानसृजत ते पाप्मना                     |   |
| 1606 | TB_3.10.9.2 | वृश्चतश्च सैषा मीमाश्साऽग्निहोत्र एव              |   |
| 1607 | TB_3.10.9.3 | वृश्चतश्च अत्यश्हो हारुणिः ब्रह्मचारिणे           |   |
| 1608 | TB_3.10.9.4 | स कस्मिन् प्रतिष्ठित इति                          |   |
| 1609 | TB_3.10.9.5 | कस्मिन्नु तप इति बल                               |   |
| 1610 | TB_3.10.9.6 | तस्माथ् सावित्रे न सम्वदेत                        |   |
| 1611 |             | अथ यदाह प्रस्तुतं विष्टुतश                        |   |
| 1612 | TB_3.10.9.8 | अथ यदाह पवित्रं पवियष्यन्-थ्सहस्वान्-थ्सहीयानरुणो |   |
| 1613 |             | एष सम्वथ्सरः अथ यदाह                              |   |
| 1614 | TB_3.10.9.1 | )सर्व-मायुरेति अभि स्वर्गं लोकं                   |   |
| 1615 | _           | 1स ह हश्सो हिरण्मयो                               |   |
| 1616 | TB_3.10.9.1 | 2सर्वम्बत गौतमो वेद यः                            |   |
| 1617 | TB_3.10.9.1 | 3स होवाच मा भैषी                                  |   |

| SNo  | Panchasat   | Beginning   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|------|-------------|---|---|
| 1618 |             | 4एतद्वै सावित्र-स्याष्टाक्षरं पदः श्रियाभिषिक्तं    |   |
| 1619 | _           | तदेतत् परि यद्देवचऋं आर्द्रं                        |   |
| 1620 |             | । इयं वाव सरघा तस्या                                |   |
| 1621 | TB_3.10.10. | 2न हास्यैता अग्नौ मधु                               |   |
| 1622 |             | 3यो ह वै मुहूर्तानां                                |   |
| 1623 |             | 4नाद्र्धमसेषु न मासेष्वा-र्तिमार्च्छति य            |   |
| 1624 | TB_3.10.10. | इदानीं तदानीमिति एते वै                             |   |
| 1625 | TB_3.10.11. | । कश्चिद्धवा अस्मा-ल्लोकात् प्रेत्य आत्मानं         |   |
| 1626 | TB_3.10.11. | 2स स्वंॅलोकं प्रति                                  |   |
| 1627 | TB_3.10.11. | 3तस्य हैवा-होरात्राणि अमुष्मिन् ॅलोके               |   |
| 1628 | TB_3.10.11. | 4तं ह त्रीन् गिरि-रूपान                             |   |
| 1629 | TB_3.10.11. | तस्मै हैतमग्निश् सावित्रमुवाच तश्                   |   |
| 1630 | TB_3.10.11. | 5यावन्तश् ह वै त्रय्या                              |   |
| 1631 |             | <sup>7</sup> इन्द्रस्यैव सायुज्य÷ सलोकता-माप्नोति य |   |
| 1632 | TB_3.11.1.1 | लोकोऽसि स्वर्गोऽसि अनन्तोऽस्य पारोऽसि               |   |
| 1633 | TB_3.11.1.2 | तपोऽसि लोके श्रितं तेजसः                            |   |
| 1634 | TB_3.11.1.3 | तेजोऽसि तपसि श्रितं समुद्रस्य                       |   |

| SNo  | Panchasat   | Beginning                                       | Other Pa- |
|------|-------------|---|-----------|
|      |             |   | nchasat   |
|      |             |   | beginning |
|      |             |   | with      |
|      |             |   | same      |
|      |             |   | Padam     |
|      |             |   |           |
| 1635 | TB_3.11.1.4 | समुद्रोऽसि तेजसि श्रितः अपां                    |           |
| 1636 | TB_3.11.1.5 | आपः स्थ समुद्रे श्रिताः                         |           |
| 1637 | TB_3.11.1.6 | पृथिव्य-स्यफ्सु श्रिता अग्नेः प्रतिष्ठा         |           |
| 1638 |             | अग्निरसि पृथिव्याः श्रितः अन्तरिक्षस्य          |           |
| 1639 | TB_3.11.1.8 | अन्तरिक्ष-मस्यग्नौ श्रितं वायोः प्रतिष्ठा       |           |
| 1640 | TB_3.11.1.9 | वायुरस्यन्तरिक्षे श्रितः दिवः प्रतिष्ठा         |           |
| 1641 | TB_3.11.1.1 | ) द्यौरिस वायौ श्रिता आदित्यस्य                 |           |
| 1642 | TB_3.11.1.1 | 1 आदित्योऽसि दिवि श्रितः चन्द्रमसः              |           |
| 1643 | TB_3.11.1.1 | 2चन्द्रमा अस्यादित्ये श्रितः नक्षत्राणां        |           |
| 1644 | TB_3.11.1.1 | 3 नक्षत्राणि स्थ चन्द्रमसि श्रितानि             |           |
| 1645 | TB_3.11.1.1 | 4सम्वथ्सरोऽसि नक्षत्रेषु श्रितः ऋतूनां          |           |
| 1646 | TB_3.11.1.1 | ५ ऋतवः स्थ सम्वथ्सरे श्रिताः                    |           |
| 1647 | TB_3.11.1.1 | 6मासाः स्थर्तुषु श्रिताः अद्र्धमासानां          |           |
| 1648 | TB_3.11.1.1 | 7 अद्र्धमासाः स्थ मासु श्रिताः                  |           |
| 1649 | TB_3.11.1.1 | 8 अहोरात्रे स्थोऽद्र्धमासेषु श्रिते भूतस्य      |           |
| 1650 | TB_3.11.1.1 | १पौर्णमास्यष्टका ऽमावास्या अन्नादाः स्थान्नदुघो |           |
| 1651 | TB_3.11.1.2 | )राडिस बृहती श्रीरसीन्द्रपत्नी धर्मपत्नी        |           |

| SNo  | Panchasat   | Beginning                                   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|------|-------------|---|---|
| 1652 | TB_3.11.1.2 | 1 ओजोऽसि सहोऽसि बलमसि भ्राजोऽसि             |   |
| 1653 | _           | त्वमग्ने रुद्रो असुरो महो                   |   |
| 1654 | TB_3.11.2.2 | षष्ठाः सप्तमेषु श्रयद्भं सप्तमा             |   |
| 1655 | TB_3.11.2.3 | षोडशाः सप्तदशेषु श्रयद्धं सप्तदशा           |   |
| 1656 | TB_3.11.2.4 | षड्विश्शाः सप्तविश्शेषु श्रयद्धं सप्तविश्शा |   |
| 1657 |             | अग्नाविष्णू सजोषसा इमा वर्द्धन्तु           |   |
| 1658 | TB_3.11.4.1 | अन्नपते ऽन्नस्य नो देहि                     |   |
| 1659 | TB_3.11.4.2 | मरुतो गणानां पतयः रुद्र                     |   |
| 1660 | TB_3.11.5.1 | सप्त ते अग्ने सिमधः                         |   |
| 1661 | TB_3.11.5.2 | इन्द्रश् स दिशां देवं                       |   |
| 1662 | TB_3.11.5.3 | ऊद्र्ध्वा दिक् बृहस्पति देवता               |   |
| 1663 |             | अन्धो जागृविः प्राण असावेहि                 | TB_3.10.8.3                               |
| 1664 | TB_3.11.6.1 | यत्तेऽचितं यदु चितन्ते अग्ने                |   |
| 1665 | TB_3.11.6.2 | तया देवतया-ऽङ्गिरस्वद्-ध्रुवा सीद ता        |   |
| 1666 | TB_3.11.6.3 | यो दीदाय समिद्धः स्वे                       |   |
| 1667 |             | देवान् देवायते यज अग्निर्.                  |   |
| 1668 | TB_3.11.7.1 | अयं वाव यः पवते                             |   |

| SNo  | Panchasat   | Beginning                            | Other Panchasat |
|------|-------------|--------------------------------------|-----------------|
|      |             |                                      | with same       |
|      |             |                                      | Padam           |
|      |             |                                      |                 |
| 1669 | TB_3.11.7.2 | अथ यथ् सम्वाति तदस्य                 |                 |
| 1670 | TB_3.11.7.3 | हिरण्यं वा अग्ने र्नाचिकेतस्यायतनं   |                 |
| 1671 | TB_3.11.7.4 | एवमेव स तेजसा यशसा                   |                 |
| 1672 | TB_3.11.7.5 | अनन्तश् ह वा अपार-मक्षय्यं           |                 |
| 1673 |             | उशन्. ह वै वाजश्रवसः                 |                 |
| 1674 | TB_3.11.8.2 | गौतम कुमारमिति स होवाच               |                 |
| 1675 |             | प्रजां त इति किं                     |                 |
| 1676 | TB_3.11.8.4 | किं प्रथमा॰ रात्रि-माश्रा इति        |                 |
| 1677 |             | इष्टापूर्तयो में ऽक्षितिं ब्रूहीति   |                 |
| 1678 |             | अप पुन र्मृत्युं जयति                |                 |
| 1679 |             | त-दस्मै नै वाच्छद्यत् त-दात्म-न्नेव  |                 |
| 1680 | TB_3.11.8.8 | दक्षाय त्वा दक्षिणां प्रतिगृह्णामीति |                 |
| 1681 |             | त॰ हैत-मेके पशुबन्ध एवोत्तरवेद्यां   |                 |
| 1682 |             | कामेन समर्द्धयति अथ हैनं             |                 |
| 1683 |             | यथान्युप्त-मेवोपद्धे ततो वै स        |                 |
| 1684 |             | पञ्च दक्षिणतः पञ्च पश्चात्           |                 |
| 1685 | TB_3.11.9.5 | सप्त पुरस्तात् तिस्रो दक्षिणतः       |                 |

| SNo  | Panchasat   | Beginning                                   | Other Panchasat beginning with same Padam |
|------|-------------|---|---|
| 1686 | TB_3.11.9.6 | त्रिवृत् प्रजननं उपस्थो योनि                |   |
| 1687 | TB_3.11.9.7 | ज्यैष्ठ्यं गच्छति योऽग्निं नाचिकेतं         |   |
| 1688 | TB_3.11.9.8 | तेजस्वी यशस्वी ब्रह्मवर्चसी स्यामिति        |   |
| 1689 | TB_3.11.9.9 | भूयिष्ठ-मेवास्मै श्रद्दधते भूयिष्ठा दक्षिणा |   |
| 1690 | TB_3.11.10. | 1 यां प्रथमा-मिष्टका-मुपद्धाति इमं तया      |   |
| 1691 | TB_3.11.10. | 2 अथो या अमुष्मिन्ँ लोके                    |   |
| 1692 | TB_3.11.10. | 3ग्रीष्मो दक्षिणः पक्षः वर्.षा              |   |
| 1693 | TB_3.11.10. | 4य उ चैन-मेवं वेद                           |   |
| 1694 | TB_3.12.1.1 | तुभ्यन्ता अङ्गिरस्तमा{21} श्याम तङ्गाममग्ने |   |
| 1695 | TB_3.12.2.1 | देवेभ्यो वै स्वर्गो लोकस्तिरोऽभवत्          |   |
| 1696 | TB_3.12.2.2 | तमाशा-ऽब्रवीत् प्रजापत आशया वै              |   |
| 1697 | TB_3.12.2.3 | तं कामोऽब्रवीत् प्रजापते कामेन              |   |
| 1698 |             | तं ब्रह्माऽब्रवीत् प्रजापते ब्रह्मणा        |   |
| 1699 | TB_3.12.2.5 | तं यज्ञोऽब्रवीत् प्रजापते यज्ञेन            |   |
| 1700 | TB_3.12.2.6 | तमापो-ऽब्रुवन्न् प्रजापतेऽफ्सु वै सर्वे     |   |
| 1701 | TB_3.12.2.7 | तमग्नि र्बलिमानब्रवीत् प्रजापते ऽग्नये      |   |
| 1702 | TB_3.12.2.8 | तमनुवित्तिर-ब्रवीत् प्रजापते स्वर्गं वै     |   |

| SNo  | Panchasat   | Beginning  | Other Panchasat beginning with same Padam |
|------|-------------|--|---|
| 1703 |             | ता वा एताः सप्त  |   |
| 1704 |             | तपसा देवा देवता-मग्र आयन्न्                            |   |
| 1705 |             | सा नो जुषाणोप यज्ञ्-मागात्                             |   |
| 1706 |             | यथा देवैः सधमादं मदेम                                  |   |
| 1707 |             | सङ्कल्पजूतिं देवं विपश्चिं मनो                         |   |
| 1708 |             | देवेभ्यो वै स्वर्गो लोकस्तिरो                          |   |
| 1709 | TB_3.12.4.2 | तं तपोऽ ब्रवीत् प्रजापते                               |   |
| 1710 | TB_3.12.4.3 | तः श्रद्धा-ऽब्रवीत् प्रजापते श्रद्धया                  |   |
| 1711 | TB_3.12.4.4 | तः सत्य-मब्रवीत् प्रजापते सत्येन                       |   |
| 1712 | TB_3.12.4.5 | तं मनोऽब्रवीत् प्रजापते मनसा                           |   |
| 1713 | TB_3.12.4.6 | तं चरण-मब्रवीत् प्रजापते चरणेन                         |   |
| 1714 | TB_3.12.4.7 | ता वा एताः पञ्च  |   |
| 1715 | TB_3.12.5.1 | ब्रह्म वै चतुर्.होतारः चतुर्.होतृभ्योऽधि               |   |
| 1716 | TB_3.12.5.2 | अग्निर्. होता पञ्चहोतॄणां वाग्घोता                     |   |
| 1717 | TB_3.12.5.3 | एतान्. योऽद्ध्यै-त्यछदिर्दर्,शे यावत्तरसं स्वरेति      |   |
| 1718 | TB_3.12.5.4 | एतैरधिवादमपाजयत् अथो विश्वं पाप्मानं                   |   |
| 1719 | TB_3.12.5.5 | पुरस्ता-दृशहोतार-मुदञ्च-मुपद्धाति यावत्पदं हृदयं यजुषी |   |

| SNo  | Panchasat   | Beginning  | Other Pa-            |
|------|-------------|--|----------------------|
|      |             |  | nchasat<br>beginning |
|      |             |  | with                 |
|      |             |  | same                 |
|      |             |  | Padam                |
|      |             |  | 1 udum               |
| 1720 | TB_3.12.5.6 | सदेवमग्निं चिनुते रथसमिंत-श्चेतव्यः वज्रो                |                      |
| 1721 | TB_3.12.5.7 | अन्तरिक्ष-मुक्थ्येन स्वरतिरात्रेण सर्वान् लोकानहीनेन     |                      |
| 1722 | TB_3.12.5.8 | असावादित्य एकविश्शः अमुमेवा-दित्यमाप्नोति शतं            |                      |
| 1723 | TB_3.12.5.9 | सर्वस्याह्यै सर्वस्या-वरुद्ध्यै यदि न                    |                      |
| 1724 | TB_3.12.5.1 | )हिरण्यं ददाति हिरण्य-ज्योतिरेव स्वर्गं                  |                      |
| 1725 | TB_3.12.5.1 | 1 तृप्यति प्रजया पशुभिः उपैनः                            | TB_2.2.8.4           |
| 1726 | TB_3.12.5.1 | 2हिरण्येष्टको भवति यावदुत्तम-मङ्गुलि-काण्डं यज्ञ्        |                      |
| 1727 | TB_3.12.5.1 | 3यावदेव वीर्यं तदस्मिन् दधाति                            |                      |
| 1728 | TB_3.12.6.1 | यचामृतं यच मत्यं यच                                      |                      |
| 1729 | TB_3.12.6.2 | सङ्ख्याता देवमायया सर्वास्ताः यावन्त                     |                      |
| 1730 | TB_3.12.6.3 | सर्वास्ताः यावन्तो-ऽश्मानोऽस्यां पृथिव्यां प्रतिष्ठासु   |                      |
| 1731 | TB_3.12.6.4 | यावन्तो वनस्पतयः अस्यां पृथिव्यामधि                      |                      |
| 1732 | TB_3.12.6.5 | देवत्रा यच मानुषं सर्वास्ताः                             |                      |
| 1733 | TB_3.12.6.6 | सर्वास्ताः सर्वश् हिरण्यश् रजतं                          |                      |
| 1734 | TB_3.12.7.1 | सर्वा दिशो दिश्च यच्चान्त                                |                      |
| 1735 |             | गन्धर्वा-फ्सरसश्च ये सर्वास्ताः सर्वा-नुदारान्-थ्सलिलान् |                      |
| 1736 | TB_3.12.7.3 | सर्वास्ताः सर्वान् मरीचीन. विततान्                       |                      |

| SNo  | Panchasat   | Beginning                                     | Other Panchasat beginning with same Padam |
|------|-------------|---|---|
| 1737 | TB_3.12.7.4 | याश्च कूप्या याश्च नाद्याः                    |   |
| 1738 |             | अन्तरिक्षचरञ्च यत् सर्वास्ताः अग्निश          |   |
| 1739 | TB_3.12.8.1 | सर्वां दिवश् सर्वान् देवान्                   |   |
| 1740 | TB_3.12.8.2 | अथर्वाङ्गिरसश्च ये सर्वास्ताः इतिहासपुराणञ्च  |   |
| 1741 | TB_3.12.8.3 | सर्वास्ताः अहोरात्राणि सर्वाणि अद्र्धमासाःश्च |   |
| 1742 | TB_3.12.9.1 | ऋचां प्राची महती दिगुच्यते                    |   |
| 1743 | TB_3.12.9.2 | सर्वं तेज स्सामरूप्यश ह                       |   |
| 1744 | TB_3.12.9.3 | तप आसीद् गृहपतिः ब्रह्म                       |   |
| 1745 |             | अपानो विद्वा-नावृतः प्रति प्रातिष्ठ-दद्धरे    |   |
| 1746 |             | ऊर्ग्-राजान-मुद्वहत् ध्रुव गोपः सहो-ऽभवत्     |   |
| 1747 | TB_3.12.9.6 | इद्ध्मः ह क्षुच् चैभ्य                        |   |
| 1748 |             | विश्वसृजः प्रथमाः सत्र-मासत सहस्र             |   |
| 1749 | TB_3.12.9.8 | तस्यैवात्मा पद्वित्तं विदित्वा न              |   |